अवतार मेहेर बाबा जीवन दर्शन

लेखकः डॉ रामकृष्ण श्रीवास्तव

प्राचार्य

शासकीय महाविद्यालय

तामिया, छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश

अवतार मेहेर बाबा–जीवन दर्शन
प्रथम आवृति : सन् 1997

प्रकाशकः
अवतार मेहेर बाबा केन्द्र
40/1, साउथ टी.टी. नगर,
भोपाल (म.प्र.) 462 003

मुद्रकः
विश्वास ऑफसेट प्रिंटर्स
ई–7/331, अरेरा कालोनी
भोपाल (म.प्र.)

इस पुस्तक के प्रकाशन का उद्देश्य प्रतिस्पर्धात्मक अथवा आर्थिक लाभ अर्जन नहीं है।

पुस्तक में प्रयुक्त सभी बाबा के वचनों का स्वत्वाधिकार अ.मे.बाबा प.प.चे.ट्रस्ट अहमदनगर का छें

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

आभार

1. श्री दर्शन
2. अवतरण हेतु तैयारी
3. अवतरण
4. शक्तिपात
5. लीला के सहयोगी गण
6. मंजीले मीम
7. मेहेराबाद और मौन
8. प्रेमाश्रम
9. काल पुरुष
10. नई जिन्दगी
11. प्यासे नयन
12. विदेश यात्रा
13. वेला ‘‘विदाई’’ की
14. सिंहावलोकन

प्रस्तावना

यह पुस्तक ''अवतार मेहेरबाबा जीवन दर्शन'' आपके हाथों में है–इस धारणा के साथ कि आप प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के जीवन दर्शन को विहंगम दृष्टि से ही सही एक स्थान पर पा सकेंगे। मेहेरबाबा के परिवार में जो लोग प्रतिदिन शामिल हो रहे हैं, मेरा विश्वास है उन्हें यह पुस्तक कहीं ज्यादा उपयोगी सिद्ध होगी।

25 फरवरी 1894 को असीम सत्ता ने ससीम को स्वीकार किया और असीमित ही रही, ज्ञान से पूर्ण अज्ञान अंगीकृत किया और प्रत्येक चीज को जाना। सामर्थ्य ने निरी दुर्बलता को स्वीकार किया किन्तु फिर भी पूर्ण सामर्थ्यवान रहे। परम सुख ने दुखों को स्वीकार किया किन्तु फिर भी कृपा के सागर बने रहे।

अवतार मेहेरबाबा मानवों के संसार में एक पथिक थे। संसार उनका था किन्तु वे उसके न थे। वे यथार्थता और विनम्रता, उदारता और संकीर्णता, ज्ञान और अज्ञान, सामर्थ्य और असहायता के केन्द्र रहे।

दैवी प्रियतम के रूप में उनका जन्म सार्थक नहीं होगा जब तक कि वे हममें और हम उनमें जन्म नहीं ले लेते और वे सभी आवरण जो हमने अनेकों जन्मों से ओढ़े रखे हैं – उनके आलिंगन से नष्ट नहीं हो जाते। निर्भाव के लिए सागर स्वयं को बूंदों में बदल लेता है और प्रियतम बाबा का उद्देश्य यह था कि बूंदे समझ सकें कि वे सागर है।

आज हम इस धरती पर उन समस्याओं का सामना कर रहे हैं जो कभी पहले प्रगट नहीं हुई अतः मेरा मानना है कि ऐसे ही समकालिक विश्व के सन्दर्भ में अंतिम सत्य के रूप में मेहेरबाबा का अवतरण हुआ है। यह विश्वास इसलिए कि बाबा ने किसी भी धर्म की स्थापना हेतु मना कर दिया था यह कहते हुए कि जितने भी धर्मो की आवश्यकता है वे सब मौजूद हैं। वे अपने जीवन के अंतिम 45 वर्षो तक मौन रहे, चूंकि मानव की जो भी आवश्यकताएं होती है उनके लिए उन्होंने संकेतों का सहारा लिया – ये संकेत शब्द नहीं बल्कि उसकी ओर ध्यान आकृष्ट

कराना है जो पहले बोला जा चुका है। वे आये – उनका कहना है – ''शिक्षा देने हेतु नहीं बल्कि जागृत करने के लिए।''

आज वे शब्द जो बाबा द्वारा उच्चारित नहीं किए गए और वे चर्चायें जो उनके मुख से निःसृत तो नहीं हुई किन्तु संकेतों या भाव भंगिमाओं द्वारा प्रगट की गई थी – मनुष्यों के हृदय व मस्तिष्क में गहरी पैठ रही है। केवल उन्हीं व्यक्तियों के हृदय में ही नहीं जो कभी उनके सान्निध्य में आये थे बल्कि उनसे ज्यादा उन लोगों के हृदय में जिन्होने उन्हें कभी देखा भी नहीं। आज बाबा की छबि और कृपा उन्हें अनुभवों और अनुभूतियों की बाहों के माध्यम से ज्ञात होती रहती हैं। हो सकता है कुछ लोगों में हताशा हो यदि ऐसे लोग है तो मैं उनसे कहना चाहूंगा जरा वे अपने हृदय को टटोलें, गहरे और गहरे उतरते जायें और फिर देखें कि क्या उनके प्राणों के प्राण में भी बाबा के प्रति उनकी उतनी ही गहरी लगन और चाहत है जितनी संसार के लिए ?

कहते हैं बुद्ध एक बार एक कुटिल व्यक्ति के यहां भिक्षा मांगने चले गए। बुद्ध किसी बेईमान के यहां जायें तो बुद्ध को कुछ व्यापे न व्यापे, बेईमान तो सनसना जाता है। उसने आस पड़ोस, सगे सम्बंधियों में खबर भेजी कि देखो आज बुद्ध भी मेरे दरवाजे पर आ खड़ें हुए हैं। उसने बड़े गर्व से बुद्ध को भिक्षा पात्र देखा, वह मटमैला व धूल भरा हुआा था। उसने पहले पात्र को साफ किया और फिर उसमें दक्षिणा डाल दी। बुद्ध पात्र वापिस ले जब चुपचाप चलने लगे तो वह कुटिल व्यक्ति सकपका गया, उसने व्याकुल हो बुद्ध से प्रार्थना की ''भगवान आपने आशीर्वाद नहीं दिया।''

बुद्ध ने कहा – ''वत्स जैसे तुग गन्दे पात्र में भिक्षान्न नहीं देते वैसे मैं भी गन्दे पात्र में आशीर्वाद नहीं देता। पहले अपने मन के पात्र को साफ करो, फिर आशीर्वाद प्राप्त करो।''

प्रियतम बाबा के साम्राज्य में प्रवेश करने की उनकी कृपा और करूणा की मधुकोर को पाने की बस इतनी ही कीमिया है – इतनी ही कारीगरी है। आप मेरे घर आकर तनाव–बेचैनी, परायापन और तकलीफ इसलिए महसूस करते हैं क्योंकि मेरा घर आदमी से बहुत ऊँचा है और उनके घर जाकर अपनापन, प्यार, सुकून और

खुशी इसलिए पाते हैं क्योंकि उनका घर आदमी के सामने सदैव झुका हुआ है। मेरा दरवाजा तनकर चलना सिखलाता है और उनका दरवाजा नम्रता पूर्वक झुकना।

फिर भी मैं निराश नहीं हूँ क्योंकि एक सड़क है – प्रेम की जो हमारे दरवाजों को जोड़ती है। शीर्ष से नहीं–आधार से और कृपा पाने के लिए जरूरी है–आधार से जुड़ जाना।

जहाँ हम संबंध शीर्ष से जोड़ते हैं वे दृढ और स्थायी नहीं होते क्योंकि शीर्ष आधार की तरह दृढ़ और स्थायी कहाँ होता है? वह तो बदलता रहता है परिस्थितियों के अनुसार।

वैसे तो प्रेम की स्याही और आचरण की कलम से ही बाबा का काव्य लिखना सम्भव है जिसकी क्षमता भला मुझमें कहाँ? किन्तु हे भगवान! यह बात तो सत्य है कि सूरज की आरती सूरज से नहीं बल्कि दीपक से ही होती है।

21 अगस्त, 1997

चि. शरद जन्म दिवस — रामकृष्ण श्रीवास्तव

आभार

पुस्तक लेखन के दौरान प्रो. जे.एस.राठौर, श्रीमति लता राठौर, श्री डी.वाई. नाफड़े, श्री टी.आर.शंभूलिंगम, श्री एस.डी.ललित, श्री आर.वी.जोगदंड, श्री के.जी. श्रीवास्तव, प्रो.गोकर्ण श्रीवास्तव, डॉ गोवर्द्धन श्रीवास्तव, श्री किरण नाफड़े, श्री कुमार नाफड़े आदि महानुभावों ने समय–समय पर जो सहयोग, सुझाव उत्साहवर्द्धन और अपना जो प्रेम दिया है, उन सभी के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं श्रीयुत गोविन्द श्रीवास्तव व सौ.रामकुमारी श्रीवास्तव का भी अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने ‘‘प्रूफ रीडिंग’’ में अथक परिश्रम किया और पुस्तक अपनी सही आवाज के साथ आप तक पहुँच रहीं है। श्री गोविन्द सारंग, विश्वास आफसेट प्रिंटर्स के प्रति अपना आभार और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ जिन्होंने पुस्तक को एक सुन्दर सा कलेवर देने में कोई कसर नहीं उठा रखी। प्रियतम बाबा इन सभी पर अपने प्रेम की वर्षा करें। पत्नि सौ. मालती और बेटी कु.चित्रा को भी प्रियतम अपने प्रेम से सिंचित करें जिनकी सहायता से मैं मानसिक रूप से पूर्ण मुक्त हो प्रियतम प्रभु के चरित्र का प्रस्तुतीकरण कर पा रहा हूँ।

अंत में मैं उन सभी कवियों, गजल गायकों एवं लेखकों का भी आभारी हूँ जिनकी रचनायें या रचनाओं के अंश विषयानुकूल पाते हुए इस पुस्तिका में मैंने स्वतंत्रतापूर्वक समाविष्ट किए हैं। साथ ही चेयरमेन अ.मे.वा.प.प.चे.ट्रस्ट अहमदनगर का भी आभारी हूँ जिन्होंने **अवतार मेहेर बाबा** के वचनों को उद्धत करने की अनुमति प्रदान की।

‘‘जय बाबा’’

रामकृष्ण श्रीवास्तव

श्री दर्शन

मन में है बसी बस चाह यही
प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करूँ।
भर के दृग पात्र में प्रेम का जल
पद पंकज नाथ पखारा करूँ।
बिठला के तुम्हें हिय मंदिर में
मन मोहिनी मूर्ति निहारा करूँ।
बन प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभु
नित आरती भव्य उतारा करूँ।।

अवतार मेहेर बाबा मध्यम कद के थे। उनका शरीर सुडौल था और वे शालीनता पूर्ण विचरण करते थे। बाद में दो बार कार दुर्घटनाओं के पश्चात उनका शरीर मोटा हो गया था जिससे उन्हें चलने फिरने में कष्ट हो जाया करता था। उनसे आलिंगन प्राप्त करने वाले सौभाग्य शालियों का अनुभव था कि उनका शरीर दृढ़ एवं ठोस तो है किन्तु वजन कम है। वे भारतीय वेशभूषा में रहा करते और चप्पल पहना करते थे या फिर नंगे पैर रहते थे। उनकी भुजायें काफी मजबूत थीं। वे अपनी अंगुली को आश्चर्यजनक ढंग से घुमाया करते थे मानो कि वे कोई अदृश्य वाद्य यंत्र बजा रहे हों और उसके माध्यम से अपना मौन संदेश प्रसारित कर रहे हों। ऐसा करते हुए वे बहुधा अपने भाष्यकार की ओर हंसती हुई मुद्रा के साथ एक विश्वास भरी दृष्टि से देखा करते थे। उनका प्रगटीकरण निरंतर बदलता रहता था किन्तु विशेष भाव भंगिमा व अनुभूति का अहसास उनके नैत्रों की भंगिमाओं द्वारा प्रगट करता था। उनके गहरे काले नेत्र कुछ ही क्षणों में अपने दर्शकों पर प्रेम की वर्षा करते और मुस्कान की किरणों से उन्हें भाव विहल कर देते थे, किन्तु किसी खास स्थिति में सख्ती के साथ भी पेश आते थे जिससे किनारा करने का कोई उपाय नहीं होता था। जब किसी व्यक्ति को किसी विशेष कारण वश उनकी चुभती हुई दृष्टि का सामना करना पड़ता था तो उनसे दृष्टि हटाना असम्भव हो जाया करता था।

कभी–कभी बाबा अपने काले बाल काफी लम्बे रखा करते थे। आरंभ में तो उनके बाल कन्धों के नीचे तक की लम्बाई के थे बाद में उन्हें छोटा कर लिया फिर और बाद में तो कंधे पर संभाल लिया जाता था। कभी–कभी तो बालों को चोटी जैसा भी गूंथ लिया जाता था। उनकी नाक प्रभावशाली ढंग से ऊँची उठी हुई थी। उनकी त्वचा न तो सांवली थी न ही गोर वर्ण, बल्कि दोनों के बीच में थी।

अधिकांश लोगों को बाबा के सान्निध्य में आने पर एक सुखद अनुभूति सी प्रतीत हुआ करती थी। कुछ लोग तो उनके प्रथम बार दर्शन करने पर फूट–फूटकर रो पड़ते थे। कुछ लोग दौड़कर उनके श्री चरणों पर गिर पड़ते। कुछ लोग पागलों जैसे जोर–जोर से हंसना शुरू कर देते। अनेकों लोग स्वयं में ऐसी सुखद मुस्कान महसूस करते जिसे वे स्वयं नहीं समझ सकते थे और जिसके लिये वे स्वयं आश्चर्य चकित थे। लगभग सभी लोगों ने जिस किसी भी विचार धारा के साथ वे उनके समख पहुंचे, उनका सान्निध्य छोड़ने में कष्ट का अनुभव अवश्य किया।

बाबा किसी राजसी, राजनैतिक या धार्मिक नेता के रूप में लोगों को नहीं मिले बल्कि गरिमा मय निश्चित क्रिया कलापों के साथ उनका सम्पर्क हुआ। प्रत्येक व्यक्ति से वे बड़े गहरे लगाव से मिला करते थे। इस प्रकार प्रत्येक पुरूष या महिला जो भी उनसे मिला उसको लगभग वही प्राप्त हुआ जिसकी प्रतीक्षा वह अपने जीवन में कर रहा था। मेहेर बाबा ने प्रेम का विकरण मानों इस प्रकार किया कि एक आम दर्शक को भी ऐसा प्रतीत होता था कि बाबा उससे कुछ विशिष्ट ढंग से ही मिल रहे हैं। अपनी उपस्थिति में प्रथम प्रतिक्रिया के रूप में बाबा किसी दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा कहीं ज्यादा ही सक्रिय प्रतीत हुआ करते थे। किसी भी भीड़ में चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों नह हो, बहुधा वही केन्द्र बिन्दु बना करते थे और उस भीड़ का प्रत्येक व्यकित उनका सामीप्य प्राप्त करने व उनका स्पर्श पाने के लिए निरन्तर व्यग्र रहा करता था।

बाबा ने कभी भी अनावश्यक गम्भीरता को पसन्द नहीं किया। उन्हें चुटकुल व छोटी–छोटी कहानियां पसन्द थी और वे उस में रस लेते थे। उनके निकटस्थ लोगों में से एक काका बारिया को विशेष स्थान प्राप्त था जिनकी वेतरतीव बातचीत का प्रवाह

कई भाषाओं के सम्मिश्रण के साथ प्रतिदिन एक अजीब आनन्द और विनोद की स्थिति पैदा करता था।

एक बात जो सभी को आश्चर्य चकित कर देती थी, वह यह थी कि बाबा स्वयं को कोई महत्व नहीं देते थे और अपने लिए किसी विशिष्ट आयोजन के लिए मना मर देते थे। उन्होंने अपना जीवन पूर्ण रूप से संयमित रखा, केवल साधारण सा ही भोजन लेते रहे और बहुधा सस्ती श्रेणी में ही यात्रायें की। बहुत ही कम अवसरों पर बाबा ने झुककर प्रणाम करने या चरणों को चुम्बन करने की आज्ञा लोगों को दी। सन् 1962 के नवम्बर में जब सम्पूर्ण मंडली विनम्रता पूर्वक उनके समक्ष प्रणाम करने को झुकी तब मंडली जन को गहन आश्चर्य हुआ कि पिछले 22 वर्षो के बाद उन्हें ऐसा करने की अनुमति मिली है। बाबा स्वयं ही कभी–कभी नम्रता पूर्वक गरीबों, अपंगों, कोढ़ियों आदि के समक्ष प्रणाम करते हुए झुक जाया करते थे। बाबा चारों ओर से प्रतिष्ठा से घिरे हुए थे और इतने अधिकार मय थे कि क्षण मात्र में विरोध को समाप्त कर दें किन्तु सामान्यतया वे बड़े ही सामान्य रूप से रहा करते थे। यहां तक कि यदि वे बैठे हैं तो उठकर आपका स्वागत करने बाहर भी आ जायें। बहुधा बाबा बच्चों जैसी सरलता व जिज्ञासा व्यक्त किया करते जिसके कारण सारे प्रतिबंध व्यर्थ हो जाया करते थे। बाबा ने एक बार कहा था कि ‘‘जब मैं साधुओं के बीच होता हूँ तो मुझसे बड़ा कोई दूसरा साधु नहीं होता और जब मैं बच्चों के बीच होता हूँ तो मैं उनके साथ काँच की गोलियां खेला करता हूँ। मैं सबमें हूँ और सबमें एक ही हूँ – यही कारण है कि मैं सब प्रकार के लोगों से मिल लेता हूँ और जहां वे हैं वहीं मिल लेता हूँ।’’

जैसे ही कोई व्यक्ति एक बार बाबा के सान्निध्य में पहुंचता, उसकी भय से मुक्ति हो जाती थी–पूर्ण एकत्व की भावना का बोध–जो आलिंगनबद्ध हो, चेहरे के स्पर्श से अथवा हाथ में हाथ को पकड़ने पर अनुभव हुआ करती थी। ग्राह्यता की इस प्रक्रिया में कमजोर और बुझदिल व्यक्ति भी हिम्मत पाने लगते थे। निराशा से भरे हुए लोग बजाय इसके कि वे स्वयं को अपराधी की भांति महसूस करें, उन्हें गहरे संतोष का अनुभव होता क्योंकि पहली दफा वे अनुभव करते कि पहली बार कोई उनको उसी स्तर पर स्वीकार कर रहा है जिस पर कि वे हैं।

अवतार मेहेर बाबा अपने पिछले जन्म में मोहम्मद थे। उनके पिता अबदुल्ला और मां अमीना थी। एक बार जब उनके कुछ साथियों ने उनसे पूछा कि वे कौन हैं? तो उन्होंने कहा – ''मैं वह हूँ जिसकी मेरे पिता अब्राहम अभ्यर्थना करते हैं और मेरे भ्राता मंगलमय जीसस् है।'' मोहम्मद के बारे में लोग कहा करते थे कि वे समस्त मानवीय गुणों से युक्त, उच्च चरित्र के अति विनम्र, अत्यधिक दयालु, ईमानदार व विश्वसनीय व्यक्ति थे।

मोहम्मद के पूर्व मेहेरबाबा जीसस थे। उनके पिता का नाम जोसेफ और मां का नाम मेरी था। वह एक पथिक थे। अपने शरीर को त्यागने के पूर्व उन्होंने ई.पू. 570 में कहा था कि वे पुनः आयेंगे। उनका अवतरण अल्पकाल के लिए था।

जीसस के पूर्व बाबा गौतम बुद्ध के रूप में अवतरित हुए थे जिन्होंने एक राजा के यहां जन्म लिया था किन्तु शीघ्र ही अपनी पत्नी को छोड़ हाथ में भिक्षा पात्र ले बाहर निकल पड़े। बुद्ध के पूर्व बाबा ने श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लिया था। उनके पिता वासुदेव थे और माँ देवकी थीं किन्तु उनका लालन-पालन यशोदा द्वारा हुआ था बचपन में ही उन्होंने समाज के अनेकों अवरोधों व असामाजिक तत्वों का विनाश किया था। वे बड़े विनोदी थे। एक बार माँ ने उन्हें मक्खन चुराते हुए पकड़ लिया किन्तु उन्होंने मना कर दिया। माँ ने कहा ''तुम अपना मुँह खोलो'' उन्होंने मुँह खोला और उस बेचारी माँ ने उनके मुँह के अन्दर ब्रम्हाण्ड और उसके जलते सूर्यो को देखा। वे अत्यंत सुन्दर थे, उनके आकर्षण का कोई सानी नहीं था। वे एक महान योद्धा भी थे और समस्त दिव्य गुणों से सम्पन्न थे। महाभारत युद्ध में उन्होंने स्वयं युद्ध नहीं किया अपितु वे अर्जुन के सारथी बने रहे। उन्होने गीता का गायन किया जिसमें उन्होने ईश्वरीय ''है'' सत्ता का बोध कराया और हमसे अपेक्षा की कि दिव्य प्रियतम को प्रेम करो, उनके नाम का स्मरण करो।

कृष्ण के पूर्व बाबा राम थे। उनके पिता का नाम दशरथ था और माता कौशल्या थी। उस काल में वे मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाए और उन्होंने महाबली रावण जैसे राक्षसों का विनाश किया। वह राजा के साथ-साथ एक योद्धा भी थे। राम के पूर्व बाबा जोरोस्तर थे। उनके पिता ''पोरोश्वा'' थे जिसका अर्थ है ''श्वेत अश्वों युक्त'' और उनकी माँ दुग्धोवा थी अर्थात जिनके पास दूध देने वाली गायें है। ऐसा

कहा जाता है कि जब उनका जन्म हुआ था तो वे हँसे थे और उस हँसी ने पूरे घर को प्रकाशित कर दिया था। उनके पिता उन पर, उनकी हँसी पर और उनकी सुन्दरता एवं सुमधुरता पर आश्चर्य चकित हो उठे थे। उन्होने कहा था – ''यह ईश्वरीय महिमा है'' भगवन इस बच्चे की रक्षा करो, विश्व में जन्म लेता हुआ प्रत्येक बच्चा रोया है।''

जोरोस्तर के पूर्व कौन थे? यह बताने में अवतार मेहेरबाबा मौन रह गए। उपर्युक्त विवरण के साथ हम पहले ही सात हजार वर्ष पूर्व की यात्रा कर चुके है।

एक बार कुछ लोगों से प्रियतम बाबा ने अपने पिछले जन्मों की बातचीत के तारतम्य में कहा कि हर बार अपनी पूर्णता के बावजूद भी उन्होने अपनी एक कमजोरी प्रगट की है। जब वे मोहम्मद थे– तो उन्होंने कहा था कि वे सिर्फ पैगम्बर ही हैं बजाय इस सत्य के कि वे परमेश्वर हैं। जीसस जब वे थे तो उन्होंने परमेश्वर को पिता कहा और स्वयं को पुत्र के रिश्ते में बांधा। बुद्ध के रूप में उन्होंने निर्वाण पथ पर जोर दिया और ''मैं परमेश्वर हूँ'' इस सम्बंध में कुछ नहीं कहा। कृष्ण के रूप में वे आरोपों से स्वयं को नहीं बचा पाए। और वे एक आदिवासी बहेलिए के विषैले तीर से दिवंगत हुए। राम के रूप में उन्होंने निर्दोष सीता को मर्यादा की रेखा में बंध त्याग दिया था। बाबा ने यह नहीं बताया कि जोरोस्तर के रूप में उनकी क्या कमजोरी थी किन्तु शायद वह इसलिए कि प्रथम अवतार के रूप में समय के कोहरे के बीच चमकते हुए वे सम्मान के पात्र रहे।

किसी ने बाबा से पूछा इस बार उनकी क्या कमजोरी है? तो उन्होने कहा कि वे इस प्रश्न का उत्तर जब वे अगली बार सात सौ वर्षो के बाद अवतरित होंगे, तब देंगे।

> जब मैं कहता हूँ ''मैं परमात्मा हूँ'' तब मुझे इसके लिए विचार नहीं करना पड़ता और विचार करके निष्कर्ष नहीं लेना होता कि 'मैं परमात्मा हूँ'। बहुत से लोग सोचते हैं कि यदि कोई मनुष्य कहे कि 'मैं ईश्वर हूँ' तो उसका यह कहना निन्दनीय है किन्तु यदि मैं कहूँ कि 'मैं परमात्मा नहीं हूँ' तो यह सचमुच मेरे लिए निन्दनीय होगा।
>
> –मेहेरबाबा

अवतरण हेतु तैयारी

परात्पर सत्ता के स्वामी का जब-जब भी इस धरा धाम पर अवतरण हुआ हैं, उनके आगमन के पूर्व आवश्यक तैयारी हेतु हर अवतार काल में प्रकृति की प्रमुख पाँचों सत्तायें मानव रूप धारण कर सदगुरू के रूप में अवतरित होती रही हैं। ये सदगुरू मूल रूप से अवतरण हेतु आवश्यक परिस्थितियाँ, उपयुक्त माता-पिता का चुनाव, स्थल विशेष का चुनाव आदि कार्य बड़े ही कौशल से अपनी विशिष्ट विधि से करते हैं। राम के अवतरण के समय के पाँच सदगुरू थे, श्री ॠंगी ॠषी, श्री वशिष्ठ, श्री विश्वामित्र, श्री परशुराम व श्रीसुतीक्ष्ण ॠषी। इन सब ने अयोध्या नगरी का प्रभु के अवतरण हेतु चुनाव किया और माता-पिता के रूप में माध्यम बनने का सौभाग्य प्रदान किया माता कौशल्या व पिता दशरथ को। इसी भाँति इस काल में मेहेरबाबा के अवतरण हेतु जो पाँच सदगुरू कार्यरत रहे वे थे श्री बाबाजान-एक महिला सदगुरू, श्री सांई बाबा, श्री उपासनी महाराज, श्री नारायण महाराज और श्री ताज्जुद्दीन बाबा। इन पाँचों नर नारायणों ने न केवल मेहेरबाबा के माता-पिता का चुनाव किया बल्कि स्थल विशेष का चुनाव भी बड़े दायित्व पूर्ण ढंग से किया।

प्रभु के अवतरण हेतु वसुन्धरा व्याकुल होती है तो पवन परेशान, अग्नि विचलित होती है तो जल चंचल और आकाश उस विशेष निमिष हेतु शून्य भाव से लालायित रहता है, ब्रम्हाण्ड नियंता को अपने आगोश में लेने। जब उनकी व्याकुलता अपनी चरम सीमा पर पहुंचती है तो दया के सागर दया निधान अपने समस्त वैभव की वर्षा करने की महती कृपा करते हैं इन सदगुरूओं पर। उनकी ओर से संकेत प्राप्त होते ही, सभी जुट जाते हैं अपने-अपने कार्य क्षेत्र में अपने-अपने एक विशेष अंदाज से-और हम दुनिया वाले उनके इन कार्य कलापों को समझ ही नहीं पाते और उन्हें उनके उन विचित्र क्रिया कलापों के कारण अपनी दुनियाबी नजरों से पागल, मस्त महाराज और न जाने क्या-क्या नाम दे डालते हैं। किन्तु इन्हें इस सबकी क्या चिंता? वे तो लगे रहते हैं अपनी-अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में। जब इन सदगुरूओं के प्रयासों से प्रभु का समस्त वैभव सिमटते सिकुड़ते हुए एक हल्का सा पुंज बन जाता है तो यही प्रकृति की पंच सत्तायें पूर्व से चुने हुए व्यक्तियों को

मां–बाप की जिम्मेदारी का निर्वहन करने हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि अब नर रूप में नर की भांति लीला करने की प्रभु कृपा करें। यही कारण है कि जब जब भी प्रभु ने मानव रूप धारण किया है, प्रभु शिशु रूप में जिस मां की कोख में आये हैं उसे कुछ विलक्षण अनुभव प्राप्त होते रहे हैं।

इस बार इन पाँचों सदगुरूओं ने प्रभु अवतरण हेतु पूना नगरी का चुनाव किया जहाँ की पुण्य भूमि को प्रभु अवतरण की महिमामयी गरिमा प्रदान करने पृथ्वी सत्ता रूपी सदगुरू बाबा जान काफी पहले से कार्यरत थी। दिग दिगन्त में अवतार का उद्घोष करने आकाश सत्ता के स्वामी शिर्डी के सांई महाराज भी शिर्डी में आकर विराजमान हो गए थे। अग्नि का जीवन गति से गहरा संबंध होता है अतः तेजसपति अग्नि सत्ता के स्वामी उपासनी महाराज साकोरी में रम गए ताकि वे शिशु में पुंजरूप में स्थित उस विश्व चेतना का पुनः विस्तार करें। श्री नारायण महाराज जल सत्ता के स्वामी थे– जहाँ जीवन हो और वह भी परमात्मा रूप नर में वहाँ यह सत्ता कैसे दूर रह सकती थी, अतः नारायण महाराज भी केडगांव में बसे। उनका कार्य था मानव की चंचलता उद्वेलित हो परमात्मा की अनुभूति में वह एक विशेष प्रवाह ले। जीवन हेतु वायु का होना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है अतः वायु सत्ता के स्वामी ताज्जुद्दीन बाबा भी ऐन वक्त पर नागपुर में बस गए। और बड़ी गहरी निगरानी करते रहे कि एक एक श्वास विश्व चैतन्य में प्रस्फुटित हो। ये पांचों नर नारायण सदगुरू के रूप में या यों कहिए प्रकृति की वही पांचों सत्तायें जो अवतरण हेतु व्याकुल रहीं – प्रभु की जन्म स्थली के इर्द गिर्द महाराष्ट्र में ही केन्द्रित रही उनका वहीं होना आवश्यक भी था।

इसे यों भी समझा जा सकता है कि एक लकड़ी के चारों ओर सैकड़ों फीट लम्बी रस्सी को लपेटा जा सकता है और यदि उसे लम्बाई में पुनः विस्तार दिया जाये तो वह मीलों लम्बी हो सकती है, ठीक ऐसी ही प्रक्रिया वे सदगुरू अपनाते है। सर्व प्रथम उस असीम सत्ता को लपेटते लपेटते शिशु रूपी एक ससीम पुंज में लाते है और फिर जन्मोपरान्त यही पांचों सदगुरू इस ससीम सत्ता को विस्तार देकर असीम के आसन पर पहुंचाने में अपना योगदान देते हैं।

ये सदगुरू समग्र ज्ञान, समग्र प्रेम ओर समग्र शक्ति से परिपूर्ण होते हैं। ये जगत के किनारे लौटकर अनवरत रूप से सावधानी पूर्वक करूणा के वशीभूत हो मानवों का पथ प्रदर्शन करते है। जैसे ही प्रत्येक अपना कार्य समाप्त कर लेता है वह अपना शरीर त्याग देता है और उसके स्थान पर दूसरे–ईश्वरीय पुरूष (सदगुरू) स्थानापन्न हो जाते हैं।

इस काल के सदगुरूओं की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है।

1. **बाबा जान** :– इनका जन्म बलोचिस्तान में एक उच्च वर्गीय परिवार में हुआ। इनके बचपन का नाम गुलरूख था, इनका जन्म लगभग 1790 में हुआ था और 21 सितम्बर 1931 को इन्होंने अपना शरीर छोड़ा। वयस्क होने पर इन्होंने शादी करने को मना कर दिया और परिवार से भागकर यायावर का जीवन व्यतीत करने लगी। रावलपिंडी के समीप वे मौलाशाह के सामीप्य में छह वर्षो तक रही। मौलाशाह ने उन्हें सत्य की अनुभूति कराई और चेतना के छठवें स्तर पर स्थापित किया।

एक बार उन्होंने यह उदघोषणा की कि वे स्वयं परमेश्वर हैं और उन्होंने संसार का निर्माण किया है। इस पर कुछ बलूची सैनिकों ने क्रोधित हो उन्हें जमीन में जीवित दफना दिया किन्तु कई वर्षो के बाद उनमें से कुछ ने उन्हें हजार मील दूर दक्षिण में पूना में देखा। इन सैनिकों ने पश्चाताप करते हुए उनसे क्षमा मांगी और उस ममतामयी सत्ता ने उन्हें क्षमा कर दिया। धीरे–धीरे यही सैनिकगण उनके अनयायी बन गए और उनकी शाम की सभा में एकत्रित होने लगे। पूना में वे आरंभ के दिनों में एक नीम वृक्ष के नीचे खान बहादुर जान मोहम्मद रोड पर रहा करती थी। इसी दौरान हजारों लोग उनके दैवीय गुणों को परखने व उनके दर्शन करने को उमड़ने लगे।

वे छोटे कद की महिला थी और सौ वर्षो की उम्र को पर करने के कारण उनके बाल बर्फ की भांति सफेद चमकते हुए दिखाई देते थे। उस समय के लोगों का मानना था कि यदि उनकी महानता की एक किरण भी पकड़ में आ जाये तो समझो आप उच्च आध्यात्मिक पथ पर हैं।

एक समय वायु और वर्षा शहर में दो घंटे तक नृत्य करती रही। चारों ओर से पूना नगरी जलाक्रान्त हो उठी थी किन्तु बाबाजान का स्थल पूर्ण सूखा और शांत बना रहा। बाबा जान अपने प्रिय नीम वृक्ष के नीचे बैठी रही। उन पर वर्षा की एक बूंद भी नहीं पड़ी थी और वृक्ष के चारों ओर की मिट्‌टी सूखी थी। कुछ समय बाद वे एक छोटे से आश्रम स्थल में चली गई जो उनके लिए कुछ लोगों ने बना दिया था। कभी-कभी वे बंद बाग तक टहला करती थी और भक्तों से घिरी वापिस आती थी।

मेहेर बाबा ने उनके सम्बन्ध में एक बार बताया था कि वे साम्राज्ञी थी और पिछले जन्म में वे बसरा की राबिया थी।

2. **सांई बाबा** :- इनके जन्म का समय लगभग 1856 माना जाता है और 16 अक्टूबर 1918 को आपने अपना भौतिक शरीर त्याग दिया।

सांई बाबा पाँचों सदगुरूओं के प्रधान थे-साफी उल-इरशाद अर्थात स्वामियों के स्वामी। अहमद नगर जिले की शिरडी ग्राम में उनका आश्रम था जो आज भी भारत का एक बड़ा तीर्थ स्थल बना हुआ है। उनकी आत्मानुभूति के पूर्व उनके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं सिवाय इसके कि किसी शून्य से वे औरंगाबाद के समीप खुल्दाबाद गए जहां पूर्ण पुरूष स्वामी जरजरिया वख्श ने उन्हें कीर्ति प्रेम और शक्ति दी जो आरंभ से ही उनकी चेरी थी।

वे पाँच घरों से भिक्षा और दीपक जलाने के लिए तेल लेते थे। यद्यपि उनका नाम स्पष्ट करता है कि वे मुसलमान थे किन्तु हिन्दू भी उन्हें सम्मान देने लगे। धीरे-धीरे उनके भक्त दोनों धर्मो के हो गये और वे बढ़कर हजारों लाखों की संख्या में हो गए। उन्होंने स्पष्ट रूप से दिखाया कि वे प्रत्येक में हैं और प्रत्येक बात जानते हैं और अनेकों चमत्कार करते हैं। दिन का अधिकांश समय वे अपने शिष्यों के साथ बैठा करते थे और भजन व प्रभु प्रेम से ओत-प्रोत कव्वालियों को सुना करते थे।

सिर्फ गरीबों को छोड़ शेष सभी से जो उनका आशीष लेने आया करते थे, सिर्फ उनकी वापसी का किराया छोड़ वे शेष सभी पैसा मांगा करते थे और उसे वे गरीबों में बाँट दिया करते थे। हर सुबह वे गाजे-बाजे के साथ जुलूस में दीर्घशंका

को जाया करते थे। वहाँ वे एक घंटे का समया लगाया करते थे। उस दौरान वे सभी सितारों को अपनी निगरानी में लाया करते थे। यह रोज की प्रक्रिया थी जो सरलतापूर्वक सम्पन्न हुआ करती थी। उनके महान कार्य में दूसरे चार सदगुरू भी शामिल थे।

मेहेराजाद में प्रियतम बाबा ने एक बार स्नहपूर्वक उन्हें पितामह कहा था और कहा था कि किसी के भी ऐसे नेत्र नहीं थे जैसे उनके थे असीम तेज से भरपूर।

3. **उपासनी महाराज** :- आपका जन्म 15 मई 1870 को हुआ था और महासमाधि 24 दिसम्बर 1942 को ली।

ब्राह्मण परिवार में काशीनाथ गोविन्द राव उपासनी के नाम से जन्में थे। बचपन से ही उन्हें ईश्वर के प्रति लगाव था। नित्य पूजा करना, संत समागम और पण्डितों के सम्भाषणों को सुनने में वे विशेष रूचि लिया करते थे। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और यहाँ-वहाँ घूमने लगे। वे ज्यादातर भूख से व्याकुल रहा करते थे। कुछ समय पश्चात उनके पिता ने उन्हें खोज लिया और घर ले जाकर उनकी शादी कर दी किन्तु दो वर्ष बाद ही उनकी पत्नि का देहावसान हो गया और वे पुनः घूमने को स्वतंत्र हो गए। सोलह वर्ष की आयु में उनकी दूसरी शादी हुई किन्तु दूसरी पत्नी का भी स्वर्गवास हो गया तो इनकी तीसरी शादी भी की गई किन्तु फिर भी वे स्थिर न रह सके और अपने पिता एवं पत्नी की अनुमति प्राप्त कर अनन्त कि सुगंध लेने हेतु चल पड़े जहाँ भी वह मिल जाये।

एक रात्रि वे पूजा स्थल के नीचे तहखाने में गए जो प्रकाश से भरा हुआ था। जिन लोगों ने यह दृश्य देखा था उन्होंने समाचार फैला दिया कि वे एक महात्मा हैं किन्तु वे जानते थे कि वे अभी अपनी वांछित मंजिल तक नहीं पहुँचे।

एक मित्र ने उन्हें सांईबाबा के पास शिरडी जाने की सलाह दी किन्तु उन्होंने कहा ''मुझे एक मुसलमान से कया काम है?'' कुछ समय बाद वे नारायण महाराज के पास केडगांव गए। उन्होंने उन्हें एक पान खाने को दिया जब वे पान खा चुके तो नारायण महाराज ने कहा ''मैने तुम्हें ऐसा रंग दिया है जैसा मेरे द्वारा कोई अन्य अभी तक नही रंगा गया।'' इसे यों भी समझा जा सकता है कि उन्होंने उन्हें

पूर्णरूप से स्वयं की महानता को स्वीकार करने के पूर्ण योग्य बना दिया। नारायण महाराज ने उन्हें सांईबाबा के पास जाने का निर्देश देते हुए कहा कि वहाँ पर अपनी निधि को उनके साथ चौगुनी करनी होगी और उनके हाथों से भेंट स्वीकार करनी होगी। निर्देशानुसार शिरडी पहुँचने पर सांईबाबा ने उनसे पूछा ''तुम यहाँ क्यों आए हो ?'' काशीनाथ ने जवाब दिया ''आपके दर्शनों के लिए''। सांईबाबा ने कहा ''ज्यादा अच्छा यह होगा कि तुम यहाँ–वहाँ भटकना बंद कर दो और मेरे पास रूक जाओ,'' किन्तु काशीनाथ इसको तैयार नहीं हुए। अतः सांईबाबा ने कहा ''ठीक है तुम जा सकते हो किन्तु आज से आठवें दिन यहाँ वापिस आ जाना''। काशीनाथ ने कहा ''वह इसका वादा नहीं करते यदि वापिस आना होगा तो आऊँगा'' और चले गए।

आठवें दिन काशीनाथ फिर वहीं पहुँचे। सांईबाबा ने कहा तुम वापिस आ गए–अच्छा हुआ। इधर वर्षो से मेरी नजर तुम पर थी। वास्तव में प्रत्येक कार्य जो तुमने किया है वह मेरे द्वारा किया गया है, अब मेरे पास रूको जब तक कि मैं तुम्हे वह न दे दूँ जो मैं तुम्हें देना चाहता हूँ।

शिरडी से कुछ दूर खण्डोबा मंदिर में काशीनाथ रूक गए और भूख से व्याकुल रहने लगे। भूख से व्याकूल रहना संसार के साथ उनकी हिस्सेदारी थी। यह सब सांईबाबा की इच्छानुसार ही हो रहा था। बाद में सांईबाबा ने काशीनाथ में जो एक बूंद थे, सत्य के सागर को उड़ेला और सृष्टि की प्रत्येक बूंद की बूंद रहित अवस्था में लाये। अब नए सदगुरू के रूप में उन्होंने अपने स्वामी से शीघ्र ही विदा नहीं ली किन्तु अवतार के आने की और उसके साथ कार्य करने की प्रतीक्षा करते हुए वहीं रूके रहे।

4. **नारायण महाराज** :– आपका जन्म जून 1885 को हुआ था और महाप्रयाण 3 सितम्बर 1945 को हुआ।

नारायण महाराज का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके माता–पिता का स्वर्गवास हो गया था और उनका लालन पालन उनके एक मामा ने किया था। बचपन में ही एक दिन उन्होंने घर छोड़ दिया और सात वर्षो

तक अज्ञात रहे। एक बार वे गंगापुर में चेहरे पर अलौकिक दीप्ति युक्त एक वृद्ध पुरूष से मिले और वे उससे जुड़ गए।

एक दिन इस वृद्ध पुरूष ने उनसे कुछ सद्चरित्र गृहस्थों के यहाँ से भिक्षा लाने को कहा। उनके लौटने तक वृद्ध पुरूष गायब हो चुके थे। नारायण ने निश्चय किया कि जब तक वे वापिस आकर अपने हाथों से थोड़ा सा भोजन नहीं देते- तब तक वे खाना नहीं खायेगे। और प्रतीक्षा करते रहे। तीसरी रात्रि को वृद्ध पुरूष वापिस आये और नारायण के समर्पण पर अपनी पूर्ण प्रसन्नता व्यक्त की। स्वयं भोजन का एक ग्रास लिया और शेष उन्हें खाने को दे दिया। जैसे ही उन्होंने खाना खाया, उन्होंने देखा कि वह वृद्ध स्वयं दत्तात्रेय थे। उस महान घटना ने नारायण को स्वयं के ज्ञान शक्ति और महानता से परिपूर्ण कर दिया।

बाद में वह पूना से लगभग तीस मील दूर केड़गांव गए, जहाँ हजारों लोगों द्वारा उनके साम्राज्य को स्वीकारा गया और वे नारायण महाराज कहलाये जाने लगे, बाद में वे वहीं बस गए। वे राजसी लिवास में रहा करते थे किन्तु कहा करते थे कि उनके सुन्दर वस्त्र चिथड़े हैं और उनके स्वर्ण भूषण व मोती व्यर्थ हैं किन्तु वे उन्हें सम्मान का स्थान दे रहे हैं व अपने स्वयं के लिए दिखावटी सम्पति की अर्हता को स्वीकार कर रहे है।

5. **ताजद्दीन बाबा :-** आपका जन्म 27 जनवरी 1861 को एवं महाप्रयाण 17 अगस्त 1925 को हुआ।

आप धर्म से मुसलमान थे और व्यवसाय से सैनिक। किन्तु परमात्मा के प्रेम में पागल हो घर को उजाड़ा और सेना की नौकरी छोड़कर किसी स्वामी के चरणों की सेवा में लीन हो गए जिससे उन्हें शक्ति और ज्ञान का अगाध भंडार प्राप्त हुआ। इसी दौरान उन्होंने लोगों को अपने आशीष हेतु एक चौकोर दायरा निश्चित किया जिसका प्रत्येक कोना अलग-अलग आशीषों से युक्त था। प्रत्येक ग्राही को एक विशेष चौकोर में खड़ा होने के लिए कहा जाता था जहाँ से वे अपनी मनोवांछित कामनाओं की प्राप्ति किया करते थे। किन्तु जब अत्यधिक भीड़ उमड़ने लगी और बाबा को अपने आध्यात्मिक कार्य में असुविधा उत्पन्न होने लगी तो उससे बचने के लिए

उन्होंने एक अनोखा उपाय चुना। वे एक दिन अंग्रजों के टेनिस कोर्ट में नग्नावस्था में पहुँच गए – जहाँ से उन्हें उठाकर पागलखाने भेज दिया गया वहाँ वे सत्तरह वर्ष तक रहे।

एक बार उन्हें लोहे की टोकनी में सिर पर कचरा ले जाने का कार्य दिया गया किन्तु लौह में उनके प्रति शायद मनुष्यों से अधिक सम्मान था। फलस्वरूप लोहे की उस टोकनी ने तारागणों के स्वामी के सिर का स्पर्श नहीं किया। वह उनके सिर के उपर हवा में ही लहराती रही। जब इस घटना की खबर जेल के बाहर फैली तो जन समुदाय का एक अनवरत सैलाब उनके दर्शनों को उमड़ने लगा। अंत में एक स्थानीय शासक ने उनकी सुविधा हेतु अपना एक महल दे दिया और वह उन्होंने कृपा पूर्वक स्वीकार कर लिया।

एक बार मेहेर बाबा ने कहा भी था कि संसार के खजाने की एक चाबी है किन्तु वह पाँच सदगुरूओं के हाथ में होती है। उनमें से एक वास्तव में चाबी अपने पास रखता है जिसके बिना सन्दूक नहीं खोला जा सकता। दूसरा पेटी का रक्षक होता है जिसकी अनुमति के बिना पेटी को छुआ भी नहीं जा सकता। तीसरा मात्र अकेला ही पेटी को खोल सकता है, चौथे को यह अधिकार होता है कि वह खजाने को वितरित कर दे और पाँचवे को वितरण करने के आदेश देने का अधिकार होता है। इस प्रकार पाँचों सदगुरूओं का एक ही चाबी पर बराबर प्रयोग करने का अधिकार होता है।

मैं वह 'सनातन पुरुष' हूँ जिसके बीते हुए अवतरण की पूजा और याद की जाती है, जिसका वर्तमान अवतरण अस्वीकार किया जाता है और भुलाया जाता है और जिसके आगामी अवतरण की राह महान उत्सुकता एवं उत्कंठा के साथ देखी जाती है।

– मेहेरबाबा

अवतरण

इस बार परम पिता बनने का गौरव प्राप्त हुआ श्री शेहेरियार मुन्देगर को जो ईरान के खुर्रमशाह नाम के गांव में 1853 में जन्मे थे। श्री शेहेरियार के पिता शान्तिमीनार की देखभाल किया करते थे जहाँ पर जोरास्ट्रियन मत में विश्वास करने वाले मृतकों को पक्षियों के भोजन हेतु ले जाया जाता था। शेहेरियार की माँ का शीघ्र ही देहान्त हो गया था जिससे उनकी देखभाल उनकी बहिन पीला ने की थी। उनकी जरा भी शिक्षा दीक्षा नहीं हुई थी। वे ज्यादातर वहीं खेला करते थे जहाँ उनके पिता काम करते थे। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया व आठ वर्षो तक सन्यासी जैसा जीवन बिताते रहे। कुछ समय को वे घर लौटे फिर अपने बड़े भाई के साथ ईरान छोड़कर भारत आ गए और लगभग दस वर्षो तक भारत में भी सन्यासी जैसा जीवन यापन करते रहे।

एक बार राजस्थान के मरूस्थल में शेहेरियारजी भ्रमण कर रहे थे। वे अत्यंत प्यासे थे प्राणों पर संकट आन खड़ा हुआ था कि तभी एक वृद्ध पुरूष उनके समक्ष पानी की एक सुराही के साथ प्रगट हुए और उन्हें जल पिलाया। जल पीकर जैसे ही उन्होंने उन वृद्ध सज्जन को धन्यवाद देने हेतु अपना सिर ऊपर उठाया तो पाया कि वह वृद्धपुरूष अदृश्य हो चुके हैं। एक अन्य समय पर उन्होंने चालीस दिन के गहन उपवास का कठिन व्रत लिया जिसमें साधक जमीन पर अपना स्थान नियत कर चारों ओर एक घेरा बनाकर अपनी संकल्प शक्ति से काम, क्रोध, लोभ, मोह को जानवरों के स्वरूप में आमन्त्रित करता है किन्तु ठीक तीस दिनों बाद एक अदृश्य आवाज ने उन्हें सचेत किया कि ऐसी कठोरता के फल उनके लिए नहीं है। उन्हें तो इससे कहीं अधिक बड़ा पारितोषिक प्राप्त होना है अतः तीस दिन बाद उन्होंने अपने इस कठिन उपवास को समाप्त कर दिया।

वहां से वे बम्बई अपनी बहिन पीला के यहां गए। पीला ईरान में मुस्लिमों द्वारा किए जाने वाले उपद्रवों से व्यथित हो अपने पति के साथ इस बीच बम्बई आकर रहने लगी थीं उसने अपने भाई शेहरेयार की शादी करने के लिए शेहरेयार को बड़ी मुश्किल से तैयार किया। बहिन के स्नेह के सम्मुख नत शेहरेयार ने स्वीकृति तो

दे दी किन्तु सड़क पर खेलती हुई एक पांच साल की लड़की की तरफ संकेत करते हुए यह शर्त रखी कि वे यदि शादी करेंगे तो उस लड़की से अन्यथा कभी नहीं करेगें। उब पीला बड़ी मुश्किल में पड़ी क्योंकि दोनों की उम्र में बढ़ा अंतर था फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और वह उस लड़की की माँ से मिली और किसी भांति शादी हेतु उसकी माँ को सहमत कर लिया। इस प्रकार सन् 1892 में जब शेहरेयार की उम्र 39 वर्ष और उस लड़की अर्थात् शीरीन की उम्र 14 वर्ष की थी वे प्रणय सूत्र में बंध गए।

शीरीन के पिता दोराब एक रेशम व्यापारी के पुत्र थे। उन्होंने अपने पिता की इच्छा के विपरीत एक बहुत ही सुन्दर कोलन्दन नाम की लड़की से शादी कर ली थी इस कारण उनके पिता ने उन्हें घर से अलग कर दिया था। अतः दोराब भारत आये और पूना में उन्होंने एक छोटा सा जलपान गृह खोल लियां उनके ग्यारह संताने हुई किन्तु मात्र छह के नाम प्रभु गाथा के साथ जुड़ सके। शेष का यह भाग्य तो था कि वे प्रभु का स्नेह पाते किन्तु उन्हें जानने का श्रेय उन्हें नहीं मिल पायां इस लीला में जो छह बच्चे जुड़े उनके नाम थे दौलत, शीरीन, दिनशा, रूस्तम, पीला और बानू।

शादी के कुछ दिनों के पश्चात शेहरेयार जी वह शीरीन पूना गये और वहां पर उन्होंने दस्तूर मेहेर रोड पर बटलर मोहल्ले में एक घर खरीदा। चूंकि घर के दरवाजे के समीप कद्दू के आकार का एक बड़ा–सा पत्थर था अतः घर का नामकरण भी हुआ कद्दूघर या पम्पकिन हाउस। दो वर्ष बाद 25 फरवरी 1894 को सुबह पांच बजे डेविड सूसन अस्पताल में विश्व के स्वामी अवतार मेहेरबाबा का जन्म हुआ उनका नाम मेरवान रक्ख गया उनके एक वर्ष पूर्व जमशेद का जन्म हुआ था और बाद में सात बच्चे और हुए जाल, बेहराम, अर्देशिर, जहांगीर, शिरमन्द बहिन फेनी (जो बचपन में ही स्वर्गवासी हो गई) और अन्तिम बहिन मनीजा जो 1918 में अर्देशिर से चार वर्ष बाद पैदा हुई थी।

अपने पहले बच्चे जमशेद के प्रति शीरीन का जरा भी वात्सल्य भाव जागृत नहीं हुआ अतः उसे शीरीन की बहिन दौलत को दे दिया गया। और उसके पति फरदून ने उसे गोद ले लिया। वह मेरवान का जन्म था जिसने शीरीन के हृदय में मातृत्व भाव पैदा किया। माँ की सारी ममता, कल्याण, वात्सल्य से सरावोर हो

मेरवान के प्रति शीरीन अपने सारे जीवन भर स्नेह के आंचल की छाया करने हेतु प्रयत्नशील रही। जन्म से कुछ समय पूर्व शीरीन माई ने दो बार बड़े दिव्य स्वप्न देखे थे। एक बार उन्होने स्वप्न में देखा कि उनके घर के समीप ही एक हिन्दु देवी कुऐं से बाहर निकली और बच्चे के लिए अपने हाथ फैलाये। दूसरी बार उन्होंने स्वप्न देखा कि वे अपार जन समूह में खड़ी हैं और लोगों का एक बड़ा झुण्ड एकटक दृष्टि से बड़ी आशा से उनकी ओर देख रहा हैं जब शीरीनमाई ने अपने इन स्वप्नों का विवरण शेहेररियार जी को बताया तो उन्होंने कहा कि ये स्वप्न संकेत करते हैं कि बच्चा विश्व में एक महान स्तम्भ बनेगा। मेरवान के जन्म पर शेहरियार जी को भी सहसा मरुभूमि की उस दिव्य आवाज का स्मरण होने लगा कि ''तुम्हारी कठोर तपस्या के फल उससे कहीं ज्यादा श्रेष्ठ होंगें जिसको प्राप्त करने के लिए तुम जूझ रहे हो''। उनके ख्याल में आया उसकी पूर्ति इस पुत्र के माध्यम से अच्छी तरह हो सकती है। किन्तु शीरीन माई को ''दिव्य प्रकाश'' में जरा भी रूचि नहीं थी, वे सोचती कि क्या उनके जीवन को मार्ग दर्शन हेतु जोरोस्तर का प्रकाश प्राप्त नहीं हो रहा? वे चाहती थी कि उनका मेरवान एक बड़ा आदमी बने, ऊँचा उठे और जगत में सम्मान पाये।

मेरवान बचपन में बड़े चपल और चंचल थे। जब उनकी माँ घर के कामों में व्यस्त रहती तो वे बाहर की ओर भागने की चेष्टा करते। अतः उन्होंने साड़ी का एक सिरा उनके शरीर के चारों ओर बांधकर दूसरा सिरा टेबिल के एक पायें में बांधना शुरू किया। एक दिन शीरीन माँ न उन्हें एक काले नाग से खेलते हुए पाया। वह स्तम्भित रह गई और नाग अदृश्य हो गया। मानो एक बार फिर कृष्ण अपनी मैया यशोदा के साथ इस धराधाम पर अपनी लीला प्रगट करने को अवतरित हो गए थे लोगों को यह भरोसा दिलाने कि अब फिर ग्वालों की टोली सजेगी बंशी की मधुर तान छेड़ी जायेगी और युग की नई गीता लिखी जायेगी।

कुछ बड़े होने पर उन्हें 'किन्डर गार्टेन' भेजा जाने लगा और पांच वर्ष की आयु में उन्हें केम्प गवर्नमेंट इंगलिश स्कूल भेजा गया और फिर सेन्टबिसेन्ट हाई स्कूल में प्रवेश दिलाया गया जहां अंग्रेजी भाषा को ज्यादा महत्व दिया जाता था। अंग्रेजी के साथ-साथ मेरवान ने गुजराती भी सीखी और बाद में मराठी, उर्दू और

पार्शियन भाषा को भी अच्छी तरह सीखा। स्कूल के दिनों में मेरवान अटिया–पटिया, गिल्ली डंडा, सोर–सोर काठी व सात ईट आदि खेलों में रूचि लिया करते थे। शाला की तरफ से मेरवान क्रिकेट व हाकी भी खेले। क्रिकेट में उनकी रूचि सारे जीवन रही। अनेकों प्रसिद्ध क्रिकेट के खिलाड़ी उनके पास आया करते थे। वे ड्राट्स और ताश पत्ते भी खेला करते थे। होमा उपनाम से वे कवितायें लिखते थे जो उनकी शाला पत्रिका में प्रकाशित हुई है।

मेरवान ने कास्मोपालिटन नामक एक क्लब की भी स्थापना की थी जिसका वे संचालन भी करते रहे। इस क्लब में आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित चर्चाऐं हुआ करती थी। अपने स्कूल जीवन में वे नाटकों में भी भाग लिया करते थे। कभी–कभी उनकी बहिन मनी दोपहर में उन्हें सेक्सटन ब्लेक की पुस्तकें भी पढ़कर सुनाया करती थी। इसी काल के दौरान इंग्लेण्ड के इन आरंभिक रोमांचकारी लेखकों की चेतना में अचानक परिवर्तन हुआ था। बचपन से ही पार्शियन कवि हाफिज के प्रति उन्हें लगाव उत्पन्न हो गया था जो निरंतर बना रहा। मेरवान का गला मधुर स्वरों से भरा हुआ था और वे हाफिज की गजलें बड़ी ही तन्मयता से गाया करते थे।

मेरवान अपनी शाला की छुट्टियों का अधिकांश समय मौसा–मौसी जी के यहां लोनावाला में बिताया करते थे। वहां दो लड़के इनके बड़े प्रिय बन गए। उनमें से एक 'सेलर' सर्वप्रथम मेरवान के पास आया और वह अन्त तक उनके साथ रहा। एक अन्य 'कुबड़ा' था जो बड़ी निपुणता से कहानी सुनाया करता था और लोगों का घन्टों तक मन बहलाया करता था और वह जो कि विश्व की कहानी संचालित करता था इस व्यक्ति की कहानियों को बड़े चाव से सुना करता था।

मैं राम था, मैं कृष्ण था, मैं यह था, मैं वह था और अब मैं। मेहेरबाबा हूँ। मैं इस मास मज्जा के शरीर में वही आदि पुरूष हूँ जिस एकमेव की पूजा एवं उपेक्षा सनातन काल से की जाती है, जो सदैव याद किया जाता है और भुलाया जाता है।

– मेहेरबाबा

शक्तिपात

मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर मेरबान ने डेकन कालेज में प्रवेश लिया जो उन दिनों भारत के अच्छे शिक्षा केन्द्रों में से एक था। मेरबान सुबह घर से साइकिल लेकर अपने कालेज को उसी रास्ते से जाया करते थे जहां एक नीम के वृक्ष के नीचे ''बाबाजान'' बैठी रहती थीं। प्रायः रोज ही कालेज आते-जाते दोनों एक दूसरे की ओर चुपचाप देख लिया करते थे। जनवरी 1914 में एक दिन दोपहर को जब मेरबान अपने घर वापिस आ रहे थे तो बाबाजान ने इशारे से उन्हें बुलाया और वे सीधे चुम्बक की भांति खिचे हुए उनके पास जा पहुंचे। बाबाजान ने उन्हें नेत्रों के मध्य भृकुटि पर चूम लिया। उसके बाद मेरबान घर गये लेकिन अब तो उनके चारों ओर का संसार धूमिल हो गया था क्योंकि उन्हें ''बाबाजान के चुम्बन'' के रूप में दिव्य चेतना के द्वार की उपलब्धि प्राप्त हुई थी। इस चुम्बन की घटना के बाद मेरबान उस दिव्य अनुभूति में इतने गहरे खो गए कि सिर्फ अनन्त सागर की अवर्णनीय अनुभूति के अलावा उन्हें स्थूल जगत की संज्ञा का जरा भी मान नहीं रहा। इस घटना के तीन दिन बाद ''बाबाजान'' उन्हें उनकी स्वयं की स्थिति में ले गई अर्थात इस अनुभूति में कि वे कौन थे? अनन्त आनन्द के सागर - किन्तु वे कौन है? इसका सम्पूर्ण ज्ञान उन्हें नौ माह बाद हुआ।

उनकी मां शीरीन को ऐसा लगा कि मेरबान किसी विचित्र रोग से ग्रसित हो गए हैं - उन्होंने कई डाक्टरों से सम्पर्क किया किन्तु कोई भी डाक्टर मेरबान को ठीक न कर सका। प्रेतबाधा की शक से कई ओझा भी बुलाए गए किन्तु वे भी उन्हें सामान्य अवस्था में न ला सके। इसी बीच उन्हें ज्ञात हुआ कि बाबाजान ने उनका चुम्बन लिया था - शीरीन माई बाबाजान से भी लड़ने गई। किन्तु बाबाजान ने कहा - ''मेरबान तुम्हारा बेटा नहीं हैं - वे संसार के है और संसार को बदलने हेतु उनकी नियति है। उन्हें अकेला छोड़ दो और उनके बारे में चिंता मत करो''। किन्तु शेहेरियार जी अत्याधिक आनंदित होते उस दिव्य आवाज का स्मरण करते हुए कि - ''उनका दिव्य हिस्सा उस कठोर संयम के फलों से कहीं बहुत अधिक होगा''। वे हृदय में अत्याधिक प्रसन्न होते और उन्हें पूरा विश्वास भी हो चला कि निश्चित ही उनका पुत्र

बड़ा महान होगां वह शीरीन माई को सान्तवना देते – उन्हें समझाते भी कि मेरबान के कारण वे अत्याधिक धन्य हुए है किन्तु यह बात उन्हें और अधिक क्रोधित कर जाती थी।

समय स्वयं मेरबान को परमात्मा स्तर पर लाने को उत्सुक था। घर में मेरबान अपने दिन का समय अपने छोटे से कमरे को बन्द कर एकान्त में बिताया करते थे वह अपने हिस्से का खाना कुत्तों को खिला दिया करते और स्वयं भूखे रहा करते थे। कभी–कभी वे अपना सिर टेबल पर जोर से पटकते जिसकी आवाज कमरे के बाहर परिवार के सभी लोग सुना करते। इस प्रकार नौ माह बीत गए। अब मेरबान को शिर्डी के सांईबाबा के प्रति आकर्षण हुआ – वे अपने मित्र सेलर के साथ शिर्डी गए। यह दिसम्बर 1915 की बात है। जैसे ही मेरबान शिर्डी आश्रम पहुँचे सांईबाबा जुलूस में गाजे बाजे के साथ दीर्घशंका से निवृत हो वापिस लौट रहे थे। मेरबान ने उनके समक्ष दंडवत हो प्रणाम किया सांईबाबा ने जोर से ''परवरदिगार'' कहा और आगे बढ़ गए। ''परवरदिगार'' का अर्थ है – सृष्टि को धारण करने वाला, सर्वशक्तिमान ईश्वर। सन्दर्भ ऐसे भी मिलते है कि जब मेरबान उठकर खड़े हो गए तो सांईबाबा ने पुनः कहा ''परवरदिगार'' और जब मेरबान लौटकर जाने लगे तो तीसरी बार फिर सांईबाबा ने कहा ''परवरदिगार''। अतः इस प्रकार सांईबाबा ने मेरबान को मानव देह में ईश्वर के अवतरण की खुली घोषणा कर दी और उनको श्री उपसनी महाराज के पास जाने की आन्तरिक प्रेरणा दी।

जब मेरबान वहां से थोड़ी दूर स्थित खन्डोबा मंदिर गए तो देखा एक पूर्ण रूप से अनावृत व्यक्ति मंदिर के बाहर बैठा है। ये काशीनाथ उपासनी महाराज थे जिन्हें सदगुरू सांईबाबा के द्वारा के द्वारा सांसारिक चेतना में अवतार के कार्यो में हाथ बटाने को तैयार किया गया था। उपासनी महाराज अत्यंत उग्र स्वभाव के थे। मेरबान जब उपासनी महाराज से थोड़ी दूरी पर थे तो महाराज ने एक छोटा सा पत्थर मार कर उनका स्वागत किया। वह पत्थर मेरबान के ललाट पर उसी जगह लगा जहां बाबाजान ने अपने दिव्य चुम्बन से स्पर्श किया था। इस प्रकार ईश पुरूष का अवतरण प्रारंभ हुआ। उपासनी महाराज ने पत्थर मार कर उनकी चेतना जो ईश्वरीय अवस्था में स्थापित हो चुकी थी – उसको कायम रखते हुए उन्हें सामान्य भौतिक

चेतना में उतारा। इस घटना के बाद मेरबान दो दिनों तक महाराज के साथ रहे और फिर पूना वापिस लौट आए।

मेरबान यथार्थ में सूर्य थे। महाराज का कार्य तो मेरबान को उनकी ईश्वरीय सत्ता में स्थापित करना था जिससे कि सूर्य अपनी स्वयं की छाया में निष्प्रभ हुए बिना निरंतर चमकता रहे। छाया तो मात्र भ्रम होती है जिसके बिना प्रेमी और प्रियतम के मध्य प्रेमलीला नहीं चल सकती।

इन बातों के सन्दर्भ में कई वर्षो बाद बाबा ने बताया था कि बाबाजान ने उन्हें अनुभव कराया कि वे क्या हैं? सांईबाबा ने ज्ञात कराया कि वे कौन हैं? और महाराज ने उन्हें वे सभी दैवी शक्तियां प्रदत्त की जो सदा से उनकी रही है।

पूना लौटने पर मेरबान आने माता-पिता के साथ 795 दस्तूर मेहेर रोड केन्टोनमेंट वाले घर में रहे। उस घर में पीछे की ओर एक छोटी सी कोठरी थी। उस कोठरी में चौकोर पत्थरों का एक फर्श था और एक पत्थर बाहर की ओर निकला था। उस पर वे लगातार घंटों अपने माथे को पीटा करते थे। प्रत्येक चोट मानों एक उद्घोषणा थी। सिर पीटने की यह प्रक्रिया विभिन्न स्तरों पर पूरे सात वर्षो तक चलती रही जब तक कि उनकी चेतना पूर्णरूपसे इस चेतना में एकाकार नहीं हो गई। आम आदमी तो सिर पीटने की इस प्रक्रिया की आवाज ही सुनता था। वह नहीं जानता था कि कृपा के वृक्ष के चारों ओर विश्व चैतन्य की मिट्‌टी खोदी जा रही है जिससे कि वृक्षों की शाखायें एकत्व के फलों से लदी डुई नीचे झुकेगी और सारी मानवता उन फलों को तोड़ सकेगी और खा सकेगी। इसी बीच एक मित्र के साथ वे अप्रैल 1915 में नारायण महाराज के पास केडगांव भी गए। जलसत्ता के उस शिरोमणि ने संघटित आनंद को अपने में प्लावित करते हुए रसमय बना दिया। वहां से उन्हें ताजुद्दीन बाबा के पास जाने के निर्देश मिले। वायु सत्ता के उस स्वामी ने जगती की एक एक श्वांस को ब्रम्हांड की महाश्वास में स्थापित कर दिया। यहां यह ध्यान देने योग्य तथ्य है, कि अवतार की एक हलकी सी थिरकन भी अपना एक विशेष महत्व रखती है। उनके कार्य-कलाप भले ही मानवीय बुद्धि की परिसीमा में न आ सके किन्तु वे पूर्णता से प्रारम्भ होते है और पूर्णता में समाप्त होते हैं। सदगुरू नारायण महाराज और सदगुरू ताजुद्दीन बाबा का अवतार के नाटक में बाह्यरूप से

भले ही हमें कोई उपदेश स्पष्ट न होता हो किन्तु आंतरिक संगीत की लयबद्धता में जो लेन–देन होना था वह इन मिलन की थोड़ी सी घड़ियों में भी घटित हो गया।

पूना लौटने पर मेरबान अपने पिता की साचापीर स्ट्रीट पर स्थित ताड़ी की दुकान में हाथ बंटाने लगे। वह ग्राहकों को ज्यादा नहीं पीने, अपने पैसे बचाने और ईश्वर का स्मरण करने की सलाह दिया करते। उन्हें प्रेरणा देते कि नशे की हालत में वे सम्मिलित रूप से ईश्वर का गुणगान करें। इसका प्रचार हुआ और फलस्वरूप अन्य ग्राहक दूसरी जगहों को छोड़ यहां आने लगे जहां सिर्फ बहकाने वाली मादकता ही नहीं अपितु सच्चे आनन्द का उत्सव भी मनाया जाता था। रात को दुकान बंद कर मेरबान बाबाजान के पास बैठकर उनकी पीठ सहलाया करते और बातचीत करते रहते। इसी बीच महाराज ने अपना स्थायी निवास साकोरी गांव में बनाया। जब यह खबर मेरबान ने सुनी वे वहां गए और कुछ दिन उनके साथ रहकर उनके लिए उचित निवास की व्यवस्था की।

शीरीन माई उद्विग्न हो बड़बड़ाती हुई बाबाजान के पास लड़ने पहुंचती किन्तु बाबाजान उनसे कहती मेरबान सिर्फ उनका ही पुत्र नहीं है वह तो विश्व का पुत्र हैं किन्तु शीरीन कहती ''मैं सारी दुनिया की चिंता नहीं करती, मैं संसार में उसे सफल होते देखना चाहती हूँ। बजाय इसके कि वह जीवन में पढ़ लिखकर कोई उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता उसका जीवन व्यर्थ में बरबाद हो रहा है। वे कभी नहीं समझ पाई कि उनका पुत्र कौन है? एक बार उन्होंने कुछ भक्तों से कहा था ''तुम मेरबान की पूजा कर सकते हो किन्तु मैंने तो उसे थप्पड़ मारी है।'' एक अन्य समय पर उन्होंने कहा था ''यह मत कहो कि वह जोरोस्तर है कहो जोरोस्तर जैसा है।''

एक बार वे महाराज से लड़ने साकोरी गई और साथ में फूलों की एक माला भी ले ली। उपासनी महाराज के दर्शन के बाद उन्होंने उनके गले में माला भी पहनाई तो महाराज ने कहा ''तुम मेरे लिए पुराने जतों की माला क्यों लाई? शिरीन ने कहा महाराज इन पुष्पों को आप जूते कैसे कह रहे हैं? महाराज हँस पड़े और कहा ''जब तुम यहां रेल से आ रही थी तब तुमने मन में नहीं सोचा था कि फूलों की जगह मुझे तो वास्तव में उन्हें पीटने के लिए एक पुराना जूता ले जाना चाहिए था। शीरीन माई लज्जा से झुक गई और उनसे क्षमा मांगी।

मेरबान महाराज के पास लगातार सात वर्षो तक जाते रहे। प्रायः वे रात्रि में एक साथ किन्तु दूर–दूर बैठ जाया करते थे। कभी–कभी मेरबान गाते थे। एक बार वे महाराज के साथ पूरे तीन माह रहे। एक दिन महाराज ने मेरबान से कहा ''तुम संसार को मुक्त कराने मानव के रूप में परमेश्वर के अवतार हो – मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ'' गुस्तादजी व यशवंतराव से उन्होंने कहा ''मैंने अपना सारा अधिकार मेरबान को सौंप दिया है – अब मेरा साथ छोड़ो और उनके साथ जाओ।'' बुआ साहिब से उन्होंने कहा ''तुम्हारा मित्र अब आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है, उसका साथ करो और उसकी आज्ञा का पालन करो।'' और इस प्रकार महाराज ने अपनी सारी शिष्य मंडली मेरबान को सौंप दी।

महाराज ने अपने ब्राम्हण भक्तों से भी कहा कि मेरबान अवतार है किन्तु वे सहसा इस उद्घोषणा को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे – शायद वे कृष्ण की इस महान शिक्षा को भूल चुके थे – ''युगों के पश्चात मैं आता हूँ।''

मेरबान अब अवतार थे हर दृष्टि से, हर प्रकार से, ईश्वर अवतरित हुआ सकेन्द्रित हो एक आवरण में और पुनः अनावृत हुआ पांचों सदगुरूओं के निरन्तर श्रम और प्रयास से।

इस बार मेरबान गुस्तादजी को लेकर पूना वापिस आये।

कई वर्षो बाद मेरबान ने उस समय का वर्णन करते हुए बताया कि ''ललाट पर भूमध्य के बीच मात्र एक चुम्बन से बाबाजान ने मुझे अवर्णनीय आनंद का अनुभव कराया जो लगभग नौ माह तक निरंतर बना रहा। तब एक दिन रात्रि के समय उन्होंने मुझे एक क्षण विशेष में उस चिरन्तन स्वानुभूति का साक्षात्कार भी करा दिया।'' मैं पुरातन पुरूष हूँ – मैं ईश्वर हूँ – वह केवल इसलिए नहीं कि ऐसा मैं सोचता हूँ और इस निष्कर्ष पर पहुंचता हूँ कि मैं ईश्वर हूँ – मैं जानता हूँ कि ऐसा है। बहुत लोग इसे उपहास जनक मानते हैं–यह कहना कि वे ईश्वर है किन्तु सत्य यह है कि वह मुझे निंदा का कारण होगा यदि मैं ये कहूँ कि मैं ईश्वर नहीं हूँ।''

ऐसे ही एक अन्य अवतार पर जब मेरबान बाबाजान के पास पुनः गए तो बाबाजान ने उनकी ओर इशारा करते हुए कहा ''मेरा यह बच्चा एक दिन विश्व में तहलका मचा देगा।''

लीला के सहयोगी गण

इनको मिलकर क्या बताऊँ, मुझको क्या मिल गया
डूबने वाले को समझो तिनके का सहारा मिल गया।

पूना वापिस लौटने पर मेरबान एक झोपड़ी में रहने लगे। यह झोपड़ी उनके मित्रों ने उनके ही निर्देश पर तैयार की थी। यह बांस और चटाई की बनी थी मेरबान विशेष कर रात्रि के समय उसका उपयोग करते थे। दिन के समय वे झोपड़ी के दरवाजे या फिर पेड़ की छाया में बैठ अपने साथियों के साथ भजन आदि गाया करते थे। मेरबान उस झोपड़ी में अकेले रहते थे, और रात्रि के समय अर्जुन और बेली को बारी बारी से पहरे पर बाहर रखा करते थे। उनका सख्त आदेश था कि कोई वहां न आने पाये और यदि झोपड़ी से कोई विशेष आवाज आदि भी सुने तो वे किसी भी दशा में उसके कारण को जानने का प्रयत्न न करें, साथ ही उन्हें झोपड़ी की ओर देखना भी नहीं चाहिए। एक रात अर्जुन ने पहरे पर रहते हुए यह महसूस किया कि झोपड़ी में कुछ गड़बड़ है। वे यहाँ वहाँ घूमे और उन्होंने देखा कि विशाल कद का एक व्यक्ति झोपड़ी के समीप है, तो डर के मारे उनका गला रूंध गया, किसी भांति वे चीखे। मेरबान बाहर आय और उन्हें संभाला। बाद में मेरबान ने बताया कि यदि वे ऐसा न करते तो अर्जुन मर गया होता।

यह समय वास्तव में कृपानिधान का वह समय था जब वे अपने उन समस्त साथियों को अपने पास एकत्र करना चाहते थे जो समय–समय पर विभिन्न अवतार काल में उनकी लीला में सहयोगी रहे हैं और इस अवतार काल में यत्र–तत्र रह रहे थे।

इन दिनों मेरबान गुस्तादजी पर विशेष ध्यान दे रहे थे और अपने शेष साथियों को संकेत दे रहे थे कि वे उनको उचित आदर दें। उन्होंने रमजू से लोनावाला में अपनी दुकान बेच देने को कहा ताकि वह उनके साथ एक निश्चित अवधि तक बम्बई में रह सके। अर्जुन और पाटिल को भी मेरबान ने उनसे जुड़कर रहने को कहा। एक बार जब झोपड़ी के बाहर कव्वाली और भजन हो रहे थे, सैयद

साहब ने कहा कि हम सबकी इच्छा है कि अब आगे वे उन्हें मेरबान कहकर नहीं पुकारेंगे बल्कि ''मेहेर–बाबा'' नाम से सम्बोधित करेंगे। मेरबान ने इस नाम को स्वीकार किया। कुछ समय बाद उन्होंने कहा कि वे शीघ्र ही झोपड़ी छोड़ देंगे और यात्रा पर निकलेंगे और प्रत्येक को यह निर्णय लेना होगा कि क्या वह उनके साथ जायेगा और उनके हर आदेश का पालन करेगा अतः कुछ लोग जिनके पारिवारिक उत्तरदायित्व थे – उन्हें छोड़ शेष सभी ने उनके साथ जाने का विकल्प चुना। इसी बीच उपासनी महाराज का जन्म दिन पड़ा जिसे विशाल स्तर पर मनाने के लिए मेहेरबाबा सभी साथियों को साकोरी ले गए। वहाँ बाबा ने कार्यक्रम के दौरान एक गज़ल गाई ''फनां कैसी, बका कैसी''। (फना–लय, बका–प्रलय) सभी साथियों ने महाराज के चुम्बकीय व्यक्तित्व के दर्शन किए और उन्हें पुष्प भेंट किए। महाराज ने प्रत्येक को एक एक फूल दिया और आशीर्वाद दिया कि ''तुम्हें शीघ्र ईश्वर प्राप्त हो'' इसी दौरान उन्होंने कहा – अत्यंत ध्यान से सुनो जो मैं तुमसे कहने जा रहा हूँ, मेरे पास जो कुछ था उसकी चाबी मैंने मेरबान को दे दी है और तुम सबको उन्हें पकड़े रहना चाहिए और जो कुछ भी वे कहें करना चाहिए। ईश्वर की कृपा से तुम शीघ्र लक्ष्य तक पहुँचोगे।'' महाराज के जन्म दिन कार्यक्रम के बाद सभी लोग विदा हुए।

पेण्डू बाबा के मौसेरे भाई थे सांसारिक रिश्ते में। उनकी छोटी बहन का नाम नाजा था। वे बचपन से ही मेरबान को बहुत अधिक चाहते थे। उनकी मां मेरवान का बड़ा ख्याल रखती थी। मेरबान भी महाराज के पास जब साकोरी जाते तो उन्हें बता कर जाया करते और जब लौट्ते तो वहां का सारा हाल उन्हें सुनाया करते थे। मेरबान का अपनी मौसी के यहां आने जाने का पूरा हिसाब मेरबान के छोटे भाई जाल रखा करते थे। जिसकी जानकारी वे अपनी मां शीरीन माई को समय–समय पर दे दिया करते फलस्वरूप शीरीन माई अपनी बहिन के घर जाकर झगड़ आया करती कि वह उनके लड़के को बिगाड़ने में सहायक हो रही है – कुछ दिनों बाद पेण्डू की मां अस्थमा से पीड़ित हुई और चल बसी।

इसके बाद 1919 में मेरबान शीरीन माई, दौलत मासी, खोरशेद, नाजा और पेण्डू महाराज के पास साकोरी गए। वहाँ महाराज ने इन लोगों से कहा कि मेरबान

बहुत महान है – जोरोस्तर के समान। उनके इस कथन से सभी लोग आश्चर्य चकित हुए।

उन्हीं दिनों क्वेटा (अब पाकिस्तान में) से रूस्तम जहांगीर ईरानी नामक एक व्यक्ति अहमदनगर आया। पेण्डू की भेंट उससे हुई। उसका क्वेटा में एक जलपान गृह था। रूस्तम ने उसे अपने जलपान गृह में कैशियर का पद देने का आग्रह किया, पेण्डू उसके साथ क्वेटा चले गए। दो वर्ष बाद उनकी बहिन नाजा क्वेटा गई – उन्होंने बताया कि मेरबान ने घर त्याग दिया है – वे एक कुटिया में रहा करते है और किसी से मिलते भी नहीं है। सिर्फ इतवार को जब उनके साथी वहां पहुंचते हैं तभी उनसे मिलते हैं। किन्तु अब उनके साथियों के संबंध भी बदल गए हैं। अब वे उन्हें ''अपने में ही से एक'' नहीं मानते बल्कि उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरू मानते हैं और उनमें से कई अपना अपना घर छोड़ कर उनके साथ चल पड़ेंगे जब वे यात्रा पर निकलेंगे। अब उन्हें मेरबान नहीं मेहेरबाबा के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि बाबाजान ने उन्हें अपना पुत्र माना है और महाराज ने अपने सभी शिष्य उन्हें सौंप दिए हैं।

नाजा के द्वारा यह सुनकर पेण्डू का हृदय खुशी से भर उठा और उनका हृदय अदम्य विश्वास के साथ मेरबान के प्रति अपने पथ प्रदर्शक और गुरू के रूप में परिणित हो गया। कुछ दिनों बाद इन्हें पता चला कि मेरबान अपने चालीस साथियों के साथ बम्बई गए हैं। इन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और बम्बई चल पड़े। शीघ्र ही इन्होंने वह स्थान खोज लिया जहाँ बाबा ठहरे थे। पेण्डू ने देखा कि उनके पिता जो बाहर पहरेदार की भांति बैठे हैं, उन्हें देखते ही अन्दर गए और लौटकर बिना पुत्रवत स्नेह किए–बोले कि ''तुम बाबा से मिल सकते हो।'' ये शीघ्र ही अन्दर गए और बाबा के चरणों पर अपना शीश रख दिया। जब बाबा ने इनसे पूछा कि ''क्या तुम मेरे साथ रहना पसन्द करोगे''। इन्होंने कहा ''हाँ बाबा'' बाबा ने कहा – ''ठीक है, यहीं से और अभी से तुम मेरे साथ हो।''

अब प्रभु की लीला में शामिल होते है अब्दुल गनी। सर्वप्रथम अब्दुल गनी बाबा से स्कूल और फिर कॉलेज के दिनों में मिले थे। बाबा के कॉलेज छोड़ देने के बाद उनका मिलन छह वर्षो तक नहीं हो पाया। इस बीच अब्दुल गनी ने बम्बई में

होम्योपैथिक दवाखाना खोल लिया था और वे यदा–कदा अपने मित्रों से मिलने पूना आया करते थे जहाँ पर एक दिन मुन्शी अब्दुल रहीम के घर उनकी भेंट बाबा से पुनः हुई। इस पुर्नमिलन पर अब्दुल गनी ने भाव विभोर होकर बाबा का अभिवादन किया। उसी समय उन्हें बाबाजान के बारे में ज्ञात हुआ और वे यह भी समझ सके कि बाबाजान की ही वजह से अचानक उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया था। बाद में उन्हें उपासनी महाराज के प्रति उनके सान्निध्य का भी पता चला।

उन्हीं दिनों जफराबाद का एक ईरानी नवयुवक अपनी पत्नी व बच्चों को छोड़ पूना आकर बस गया था और चाय की दुकान में नौकरी करने लगा। गुस्तादजी बाबाजान को प्रतिदिन प्रातः वहां चाय लेने जाते थे। वह बड़ा ही हृष्ट–पुष्ट व्यक्ति था। उसके हाथ भारी व पैर छोटे थे। वह बड़ा ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का था। एक दिन उसने गुस्तादजी से उस सन्त के बारे में पूछा जिसे वे प्रतिदिन चाय ले जाते थे। गुस्तादजी ने बाबाजान के बारे में बताया – उसने बाबाजान के दर्शन किए। गुस्तादजी ने उसे मेहेरबाबा के बारे में भी बताया – उसने शीघ्र ही सम निकाल बाबा के भी दर्श किए। बाबा ने उसे 'बैदुल' नाम दिया। बैदुल ठिगने कद का चुस्त एवं शक्तिशाली नवयुवक था। उसे दर्द का लगभग अनुभव भी नहीं होता था। एक बार उसने स्वयं की बवासीर की बीमारी जलते हुए कोयले पर लगभग बैठते हुए जलाकर ठीक कर ली थी। वह रात्रि के समय भी शहर एवं देहातों में रास्ते अच्छी तरह स्मरण रखते हुए कहीं भी आ जा सकता था। उसकी यह ईश्वरीय देन आगे चलकर बड़ी सहायक सिद्ध हुई जब वह बाबा के साथ दुर्गम स्थानों पर उनके छिपे हुए प्रेमियों की खोज में उनके साथ रहा।

रमजू अब्दुल्ला की बाबा से भेंट बम्बई में समुद्र के किनारे उस समुद्र नौका में हुई जिसमें बाबा अन्य साथियों के साथ भ्रमण हेतु जल विहार कर रहे थे। यह सन् 1922 की बात है। इस दौरान बातचीत के क्रम में उनका निश्चित और दृढ़ विश्वास बना कि बाबा एक आम आदमी की बजाय कुछ अलौकिक हैं। बाबा ने उनसे पूछा कि क्या वे उनके साथ रहना व उनका अनुसरण करना पसन्द करेंगे। उन्होंने कहा कि यदि वे स्वास्थ्य, धन, नाम व यश चाहते हों तो वह सब वे अभी उन्हें दे सकते हैं किन्तु यदि वे उनका अनुसरण करना चाहते हों तो बिना किसी मानसिक या

शारीरिक स्थिति का ख्याल किए उन्हें वह सब करना होगा जो वे कहेंगे। अतः उन्हें अच्छी तरह सोच समझ लेना चाहिए। आभामय परिवेश से आच्छादित उस वातावरण ने जो बाबा के चारों ओर फैला था, रमजू के सारे संशय नष्ट कर दिए जो उन्हें प्रारंभ से भ्रम में डाले हुए थे और उन्होंने उनकी प्रत्येक आज्ञा शिरोधार्य कर ली।

प्रभु लीला के अगले पात्र आदि की मां का नाम गुलमाई था जो उपासनी महाराज ये यहा जाया करती थी और कभी कभी साथ में आदि को भी ले जाती थी। गुलमाई ने ही आदि को बाबा के बारे में बताया था कि बाबा महाराज के प्रमुख शिष्य हैं। एक बार जब आदि उपासनी महाराज के पास साकोरी गए थे तब बाबा वहां थे। उन्होंने देखा कि वे हर समय महाराज व बाबाजान की प्रशंसा करते हैं उनकी आवाज कड़क, लययुक्त, मधुर और मीठी थी। एक दिन एकान्त में बाबा का सान्निध्य प्राप्त होने पर बाबा ने उनसे कहा यदि वे उनके साथ हो जाये और उनके कार्य का उचित माध्यम बन जायें तो उनकी शिष्यिता भक्तों में प्रसिद्धि पा जायेगी। बाबा के आदेशानुसार ही निरन्तर बाबा को हृदय में स्मरण रखते हुए उन्होंने डेकन कालेज से अपनी पढ़ाई भी पूरी की।

अब बाबा अपनी छत्र छाया में बुलाते हैं अपने एक अन्य प्रियजन को जिनका नाम था फेरमरोज होरमुसजी दादाचांजी। आप बम्बई में 'मेडलाइन' सिनेमा घर के साझीदार थे। कहा जाता है कि उनका साझीदार उन्हें धोखा दे रहा था। इसलिए व्यवसाय में निरंतर घाटा हो रहा था। इसी बीच उनकी पत्नि ने भी उनसे किनारा कर लिया और वे किसी अन्य पुरुष के साथ चली गई अतः उन्होंने उनसे तलाक ले लिया। उन दिनों समाज में तलाक एक भयंकर लज्जा की बात थी। इन्हीं सब बातों से दुखी हो वह अपने मित्र नवरोजी तलाटी से मिले और उनसे अपनी पीड़ा व्यक्त की। उसने फेरमरोज को बाबा के बारे में बताया और कहा वही एक मात्र हैं जो तुम्हारी कठिनाईयों को दूर कर सकते हैं। तलाटी जो कि मंजिले मीम में बाबा के साथ रहा था - वह अपने साथ इन्हें बाबा के पास ले गया। बाबा ने उनकी सारी कहानी सुनकर उनसे कहा कि वे अपने सभी कार्य बंद कर दें और उनके पास उनके आश्रम में चले आए।

दादाचांजी, सरल, ईमानदार, विनोद प्रिय व्यक्ति थे और धारा प्रवाह पांच भाषायें बोल लेते थे। बाबा ने उन्हें अपना ''निजी सचिव'' बनाया और चांजी अपनी पूरी निष्ठा से बाबा का कार्य करने लगे। एक बार जब वे समुद्र में अधिक गहराई तक चले गए और जब प्राणों पर संकट आ गया, डूबने लगे तो सहसा चिल्लाकर बाबा को पुकारा और तभी एक हाथ ने उन्हें ऊपर उठा लिया और उन्हें समुद्र के किनारे पहुंचा दिया। चांजी के पिता जो बाबा को कभी अभिवादन नहीं करते थे। उनको गले का कैंसर हो गया था और वे कुछ खा पी नहीं पाते थे। बाबा ने उनसे कहा कि वे चार दिन तक मछली खायें। उन्होंने चार दिन बाद कहा ''हाँ'' बाबा एक महान पुरूष हैं – एक बहुत महान पुरूष। धीरे–धीरे दादाचांजी का पूरा परिवार बाबा का कृपा पात्र बन गया।

21 मई 1938 को बाबा ने तार द्वारा श्री एरच को नागपूर से पंचगनी बुलवाया। बातचीत में बाबा ने उनसे पूछा कि क्या वे सबकुछ छोड़कर सदा के लिए उनके पास आ सकते हैं? एरच के हाँ कहने पर बाबा बड़े प्रसन्न हुए और फिर सन् 1952 में वे बाबा के साथ अमरीका यात्रा पर गये–बाद में वर्षो में एरच ही वे व्यक्ति हैं जो बाबा की समस्त यात्राओं और दर्शन कार्यक्रमों में बाबा के संकेतों को वाणी का रूप दिया करते थे।

भाऊ कलचुरी उन दिनों नागपूर के एक कॉलेज के छात्र थे जब सावनेर में उन्होंने प्रथम बार बाबा के दर्शन किए। बाबा ने उनसे कहा कि वे एम.ए. पास करने के बाद उनके पास आ जायें। भाऊ उसके बाद से ही बाबा के साथ निरंतर रहे। श्री अलोवाजी, बालनातू आदि भी निरंतर बाबा के साथ रहे।

मई 1944 से मेहेरबाबा का निवास अहमद नगर से 16 कि.मी. दूर मेहेराजाद में हो गया। मेहेराजाद आश्रम में पेण्डू, बैदुल, विष्णु, काका, अलोगा, भाऊ कलचुरी, गोहर, नाजा, मनी रानो और एरज स्थाई मंडली के रूप में रहा करते थे। मेहरा और मेहरू उस समय बाबा की आज्ञा से पर्दे के पीछे रहा करती थी।

इनके अलावा पादरी मेहेराबाद आश्रम की देखभाल किया करते थे, आदि के. ईरानी अहमदनगर कार्यालय के संरक्षक थे। नारीमन उनकी पत्नि आरनवाज, मेहेर जी करकरिया, मेरवान जस्सावाला आदि आश्रम में आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति किया

करते थे। बाद में डॉं. डान्किन भी निवास करने वालों की पंक्ति में जुड़ गए। बाबा ने स्पष्ट कर दिया था कि दोनों मण्डलीजनों के बीच कोई अन्तर नहीं है ओर जब वे अपने प्रेम में परिपक्व होंगे तो चाहे उनके पास रहें अथवा दूर अपना जीवन धन्य करेंगे बस शर्त यही है कि उनके निर्देशों का अक्षरतः पालन करते रहे। उपयुक्त सभी का पथ सच्ची सेवा का पथ था, व्यक्तिगत स्वार्थ के विचार से सर्वथा शून्य।

आज श्री एरच, श्री अलोबा, भाऊ कलचुरी, बालनातू, नाना खेर आदि मेहेराजाद–महेराबाद की व्यवस्था में अनवरत रूप से लगे हुए अपने प्रिय बाबा की याद में खोये रहते हैं। अधिकांशतः अपना जीवन सार्थक कर बाबा धाम चले गए हैं और अभी अभी मेहरा और बाबा की बहिन मनीजा भी प्रियतम बाबा के पास उनके साकेत धाम प्रस्थान कर चुकी है।

मैं तुम सबको अपने ईश्वरीय अधिकार से बतलाता हूँ कि तुम और मैं। 'हम' नहीं हैं वरन 'एक' हैं। तुम अचेतन रूप से मेरे अवतारपन को अपने अन्तर में अनुभव करते हो, मैं चेतन रूप में तुम्हारे अन्तर में वही अनुभव करता हूँ जो तुममें से हर एक अनुभव करता है।

– मेहेरबाबा

मंज़िले मीम

कूचे में यार अब्बल तो गुज़र मुश्किल है
जो गुजरते हैं जमाने से गुज़र जाते हैं

अब मेहेर बाबा अपने साथियों के साथ प्रवेश किए बम्बई के उस बंगले में जो बड़ी तलाश के बाद दादर, में रेल्वे स्टेशन के समीप प्राप्त हुआ था। सबसे पहले यह विचार किया गया कि इस जगह को क्या नाम दिया जाये? अनेको सुझावों के बाद बाबा ने ''**मंजिले मीम**'' नाम तय किया जिसका अर्थ है – 'वह स्थान जहां अवतार रहता हो' और सभी ने इसे पसन्द किया। बाबा ने सभी साथियों के रहने की उचित व्यवस्था हेतु निर्देश दिए और उनके ही आदेशानुसार अधिकांश साथियों ने राजकीय या निजी कार्यालयों में कोई न कोई कार्य प्राप्त किया। साथ ही बाबा ने डाक्टर से सात आदेश लिखाये जिनमें स्वास्थ्य, खाने–पीने, रहने आदि के बारे में सख्त निर्देश थे उनमें सातवां आदेश था ''मुझे किसी भी परिस्थिति में न छोड़ें–चाहे सारी दुनिया मेरे विरूद्ध हो जाये–जब तक कि मैं उसे ऐसा करने का निर्देश न दूँ। यदि इनमें से किसी भी आदेश को किसी के द्वारा जानबूझ कर तोड़ा गया तो मैं अपने आपको अपने कमरे में ताला लगाकर बन्द कर लूंगा और खाना–पीना त्याग दूंगा।''

अच्छे भोजन, सभी सुविधाओं व साहसिक जीवन के बावजूद भी वातावरण सुखकर नहीं था। प्रत्येक बात के लिए आदेश थे और उनका पूरी तरह पालन करना होता था। जैसे यदि कोई चेहरे पर साबुन लगाकर धो रहा होता और उसी समय बाबा द्वारा बुलवाया जाता तो उसी दशा में तत्काल जाना होता था आदि–आदि। – शायद यह परमात्मा की अपने साथियों को पूरी तरह से हर स्थिति में निपटने की तैयारी की एक विद्या थी। धीरे–धीरे सभी साथीगण इस नये परिवेश में स्वयं को ढालने के अभ्यस्त हो चले।

एक दिन दोपहर एक हिम सम शुभ्र कपोत कहीं से उड़ता–उड़ता आया। उसे पकड़ लिया गया। उसे बाबा के पास लाया गया। बाबा ने उसे अपने हाथों में लेकर

प्यार से थप–थपाया। शाम को भी बाबा ने उसे देखा। प्रातः बाबा को बताया गया कि रात्रि में उसकी मृत्यू हो गई हैं। अपने पिछले पैरों पर बैठकर सिर छाती से झुकाकर मानो नमस्कार की मुद्रा में उसने प्राण त्याग दिए हैं। बाबा ने पूछा क्या कोई उसके प्राण त्यागने के सम्बंध में कुछ अनुमान लगा सकता है किन्तु कोई कुछ न कह सका। तब बाबा ने बताया कि उन्हें बाबा जान से इस कपोत के माध्यम से एक महत्वपूर्ण सन्देश प्राप्त हुआ हैं। किन्तु वह संदेश इतना गुरूतर था कि उसे सौंपने के बाद यह वाहक शीघ्र ही मर गया। बाबा ने अपने हाथों से उसे दफनाया। इसी बीच अपने कुछ साथियों के साथ बाबा अजमेर भी गए जहां उन्होंने ब्रम्हा जी के मंदिर में दर्शन किए। इसके बाद बाबा ने कुछ और आदेश सूचना पट पर अंकित कराये – जैसे कि रात्रि नौ बजे शयन करना और प्रातः चार से पांच बजे तक दैनिक कर्मो से निवृत होना, स्नान करना आदि और 5 से 6 बजे तक अपने धर्मानुसार ईश्वर नाम जप करना, उसके बाद एक कविता की एक लाइन लिखाई–

जूद शाउव वीदार आई दिल खिदमते मयखाना कौन

(ऐ हृदय, तू जल्दी से जाग और स्वर्ग के दरवाजे शीघ्रता से खोल)

अब बाबा ने मण्डली जनो से शारीरिक श्रम कराना आरम्भ कराया। इसके अन्तर्गत खेल का मैदान बनाने हेतु परिसर का पिछवाड़ा समतल और साफ कराया जाना था। तदनुसार पत्थर व काँच बटोरना, भूमि खोदना, पाटना आदि में सारा दिन व्यतीत हो जाता था। सब बाबा के आदेश का पालन कर रहे थे। भले ही पूर्व में उन्होंने अपने हाथों में कभी औजार भी न पकड़े थे। डाक्टर ने श्रम से बचने हेतु एक बड़ा मजेदार तरीका अपनाया। दोपहर को जब बाबा बरामदे में आये तो उन्होंने देखा कि डाक्टर मिट्टी पीटने वाली लकड़ी से लयबद्ध करते हुए कुछ पंक्तियों को साथ–साथ गुन–गुनाते जा रहे हैं–

फरहाद को तकलीफ न दो कोहकानो की।
शिरीन तेरा आशिक है मजदूर नहीं।।

बाबा ने जब अपने प्रेमी के इस प्रकार के हाव–भाव देखे तो उन्हें उस दिन के कार्य से मुक्त कर दिया। शाम को बाबा ने कहा कि प्रातः चार और पांच बजे के मध्य का समय आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण हुआ करता है। प्रत्येक धर्म की महत्वपूर्ण प्रार्थनायें इसी समय की जाती हैं। उन्होंने बताया कि वे किसी से किसी विशेष धार्मिक प्रक्रिया (शरियत) पर चलने को नहीं कह रहे हैं किन्तु जो उनके मन में है वह बिल्कुल भिन्न है। वे चाहते हैं कि आप सब जाग्रत हों। बाबा ने कहा कि वह इसी समय के मध्य की बात है कि जब बाबाजान ने उनहें ''अनुभूति'' प्रदान की थी और वह भी यही समय था जब महाराज (उपासनी महाराज) उन्हें भवसागर से वापिस खींच लाये थे–यह मण्डली भी इसी समय के दौरान अनुभूति प्राप्त करेगी। प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी स्थिति व भगवत नाम परिवर्तन के जो वे चुनते हैं दस माह तक दृढ़ रहे। ये उनकी प्रथम आध्यात्मिक सूचनायें अपने ही किस्म की हैं और इनमें असफल मत होना। इसके बाद सभा समाप्त कर दी गई। एक समय बाबा ने बताया कि सदगुरू न तो आशीष देता है और न ही अभिशाप देता है, वह सिर्फ कार्य करता है। सांसारिक सुखों का समुद्र परमानन्द के महासमुद्र की एक बूंद की छाया मात्र होती है। इसी कारण से सदगुरू को सत्‌चित आनन्द कहा जाता है। सदगुरू अपना स्थान वहां स्थिर करता है जहां से वह मस्तिष्क की सभी दशाओं के आनन्द का अनुभव, जब भी वह इच्छा करे प्राप्त करता है।

एक दिन भोजन के पश्चात बाबा ने कहा कि ''एक योगी उच्चतम स्थिति को प्राप्त कर लेने पर भी मुक्त नहीं हो पाता क्योंकि उसके मन पर संस्कारों की छाप बनी रहती हैं। बात करना, सुनना देखना, सोचना, खाना, पीना, सोना आदि सभी क्रियायें संस्कार निर्मित करती हैं – इनका अनजाने में ही यांत्रिक रूप से अनुभव होता है और जब तक कि सदगुरू की कृपा इन्हें जड़ से समाप्त नहीं कर देती। वह प्रत्येक श्वास जिसे हम लेते हैं, पलकें जिन्हें हम गिराते हैं, अंगुली जिसे हम उठाते है, सभी पूर्व के संस्कारों के कारण हैं। हमारा वर्तमान अस्तित्व समग्र रूप से पूर्व स्मृतियों का मात्र फैलाव है और पुनः हमारे वर्तमान के समस्त क्रियाकलाप स्मृतियां निर्मित करते हैं और यही क्रम निरन्तर चलता रहता है। जिस प्रकार एक अच्छे कार्य या शब्द का अपना प्रतिफल होता है ठीक वैसे ही बुरे परिणाम एकत्रित होते रहते हैं।

किसी भी दशा में वह ग्रंथि तो होती ही है जो खुल नहीं पाती। अच्छे कार्य मनुष्य को सोने की जंजीरों से बांध लेते हैं और बुरे कार्य उसे कंटीली लौह श्रृंखलाओं से कस देते हैं किन्तु दोनों दशाओं में श्रृंखला तो होती ही है और वह स्वतंत्र नहीं होता। अतः मुक्ति प्राप्त करने हेतु न तो गुण की आवश्यकता है और न ही विश्वास की बल्कि मस्तिष्क एक स्वच्छ पट्टिका की भांति हो जो उस अवस्था को ग्रहण कर सके।

ना हम जन्नत में जायेंगे, ना दोज़ख में जायेंगें।
खड़े देखा करेंगे इशार में सूरत मुहम्मद की।।

बिना गुरू की कृपा के यह सम्भव नहीं है। उसे यह मात्र क्षण भर का कार्य है। गुरू मात्र एक तीली जलाता है और स्मृतियों के विशाल ढेर को स्पर्श करा देता है जो क्षण मात्र में जलाकर खाक हो जाता है यानि कि हजारों वर्ष से छाये अंधकार को प्रकाश की एक किरण, एक क्षण में समाप्त कर देती है। एक दिन प्रातः की प्रार्थना के समय मण्डलीजनों ने ढोल पीटने जैसी आवाज सुनी। गुस्ताद जी ने बताया कि बाबा अपने सिर के चारों ओर रूमाल बांध रहे है, स्पष्ट था कि ऐसा वे अपना घाव छिपाने की दृष्टि से कर रहे थे।

इससे स्पष्ट था कि बाबा दिन–रात अत्यधिक कष्ट उठा रहे थे किन्तु फिर भी वह सभी के लिए ‘‘जीवित विद्युत’’ के समान थे। एक बार समुद्र के किनारे जुहू तट पर पिकनिक मनाने के दौरान बाबा ने कहा कि ‘‘लोगो ने संसार का परित्याग कर ईश्वर की प्राप्ति के लिए अनेकों कष्ट उठाये किन्तु तुम लोग कितने भाग्यशाली हो कि तुम उसे इतनी सरलता पूर्वक प्राप्त करने की स्थिति में हो। मेरे साथ रहने से – यह समझा जा सकता है कि तुमने सारे संसार का परित्याग कर दिया है जबकि तुम उसी में रह रहे हो।’’ उन्होंने आगे कहा – ‘‘यह समस्त ब्रम्हाण्ड अपने अनन्त फैलाव और वैभव के बावजूद भी मात्र कल्पना है। इतनी अधिक चीजों, आविष्कार और इतने अधिक वैज्ञानिक ज्ञान के बावजूद भी सृष्टि एक विकट पहेली बनी हुई है। महानतम योद्धा, वैज्ञानिक, डाक्टर और ज्योतिषी सभी को बिना किसी अपवाद के प्रकृति के सामान्य नियम’’ ‘‘मौत’’ के समक्ष झुकना पड़ा है। संसार में प्रत्येक असहाय है ओर अज्ञानी है और स्वयं में निहित है। रिश्तों के सांसारिक बंधन मात्र पाखण्ड हैं’’

''ईश्वर सभी के लिए है और तब आते हैं पैगम्बर और गुरु–इन्हें छोड़कर संसार में कोई अन्य सच्चा प्रेम नहीं समझता। देखो–महाराज मेरे लिए कितने उत्सुक रहते हैं। हमेशा चाहते हैं कि मैं साकोरी जाऊं जिससे कि वे स्वयं भीषण कष्टों के भागीदार बन सकें–जिन्हें मैं भोग रहा हूँ।'' बाबा ने बताया कि सभी धर्मो का स्वरूप उनके अनुयायियों द्वारा बिगाड़ा गया है। मुल्लाओं, दस्तूरों और पंडितों ने मूल शिक्षा को अपनी सुविधा और लाभ के आधार पर विकृत कर दिया है। एक अन्य अवसर पर बाबा ने बताया कि ''सदगुरू सामान्य जन के लिए निचले स्तर पर आता है और समय आने पर उसे अपना ज्ञान देता है तभी वह दूसरों को अपने जैसा बना सकता है। रसूल–ए–खुदा स्वयं ही सभी लोगों के स्तर तक इतना नीचे उतरे कि जब दुश्मनों ने उन्हें निराश किया और उनके लिए जिन्दगी की धमकी दी गई तब वे सामान्य जन की भांति कार्य करते हुए अपने जन्म स्थान से भाग कर मदीन पहुंचे। अब देखो–संसार का मालिक ठीक वैसे ही भाग रहा है जैसा एक सामान्य जन भागता है।'' एक बार प्रातःकालीन प्रार्थना के समय एक साथी अस्सार साहब ने गाकर कही जाने वाली एक विशेष प्रार्थना पर अपनी आपत्ति प्रगट की। जब बाबा ने यह सुना तो वे अत्यधिक क्रोधित हुए। थोड़ा शान्त होने पर उन्होंने कहा ''आप में से ऐसा कौन है जो शरियत के बारे में मुझसे ज्यादा जातना है? अच्छा मुसलमान कौन है? मैं वहीं हूँ जो मेरा बाह्य स्वरूप है। कौन जानता है मैं आन्तरिक स्थिति में क्या हूँ? प्रार्थनायें और रिवाजी पूजा सिर्फ ईश्वर के लिए है परन्तु तुम उसके प्रारूप में और उसके फैलाव में इतने जकड़े हुए हो कि तुमने ईश्वर को बाहर छोड़ दिया है और प्रार्थना की पूजा करते हो।''

कुछ समय बाद बाबा के साथ अधिकांश मंडली महाराज के पास साकोरी गए। महाराज ने उनका भव्य स्वागत किया और मण्डली जनों को सलाह दी कि वे बाबा से अत्यंत गहरे रूप में जुड़े रहे और उनके आदेशों का पालन करें चाहे कितना ही कष्ट क्यों न उठाना पड़ें। किन्तु किसी भी हालत में बाबा से अपना लगाव कम न करें। मेरबान में प्रतिदिन अधिकाधिक ईश्वर अवतरित हो रहा है और उन सभी के लिए जो उनके साथ है अच्छे दिन आने वाले हैं, किसी भी कीमत पर उनसे जुड़े रहो और उनकी वाणी का अमृत पियो। इसके बाद मंडली जन बाबा के साथ पूना गए

जहां बाबा जान के दर्शन कर बम्बई लौट आए। कुछ दिनों बाद मंजिल में एक सौ अपंगों, कोढ़ियों व अन्धों को भोजन कराया गया व उन्हें वस्त्र प्रदान किए गए। प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी बजीफदार इस कार्य में बड़े सहायक सिद्ध हुए। अब बाबा मंजिले मीम में विशेष रूप से तैयार किए गए एक ऊपर के कमरे में ही अधिकतर रहने लगे व उपवास करने लगे। उपवास के पांचवे दिन सभी मण्डली जनों के साथ आदेशों पर पुनः विस्तृत चर्चा हुई और बाबा ने अपनी सहमति दी कि वे नीचे आकर चौबीस घंटे में सिर्फ एक बार भोजन लेना प्रारंभ कर देंगे। बाद में रात्रि को कव्वाली सुनने का भी आयोजन किया गया।

एक बार डाक्टर ने रात्रि के भोजन के समय बाबा के निर्देशानुसार भोजन उसी मात्रा में न लेने के कारण डाक्टर को बाबा के क्रोध का सामना करना पड़ा। डॉक्टर रात्रि भर रोते रहे–उस रात्रि उन्होंने स्वप्न देखा कि महाराज सिर से पैर तक धूल में सने हुए हैं और लड़खड़ा रहे हैं मानों वे काफी दूर से चलकर आ रहे हों और मण्डली को सम्बोधित करते हुए बोले ''मैं आप लोगों से कुछ कहने आया हूँ। आप लोग मेरबान के सख्त आदेशों से बचने के लिए कोनों में छिप जाने का प्रयत्न करते हैं जबकि आपको हिम्मत के साथ उनका पालन करना चाहिए।'' और डॉक्टर को सम्बोधित करते हुए महाराज ने कहा कि ''क्या तुम बच्चे हो जो इन बातों को नहीं समझते? अपनी स्थिति के बारे में ध्यान रखो।'' प्रातः डॉक्टर ने इस स्वप्न को बाबा को बताया – बाबा ने इस स्वप्न को टाइप कराकर सूचनापट पर लगाने का आदेश दिया था ताकि सभी मण्डली जनों को ज्ञात हो सके।

1923 की 3 जनवरी के शाम बाबा ने सभी मण्डली जनों को सलाह दी कि प्रतिदिन शाम को एक या दो घण्टे साथ में बैठकर विभिन्न मसलों पर चर्चा की जाये, सभी ने इस पर अपनी सहमति व्यक्त की। शाम की इस बैठक का नाम ''गट्टा'' या मधुशाला रखा गया। तय किया गया कि मण्डली का प्रत्येक सदस्य चर्चा में भाग लेगा और समस्याओं पर अपना मत व्यक्त करेगा। डॉक्टर उसके सचिव हुए और बाबा को सभापति बनाया गया। इन दिनों महाराज की जीवनी के विक्रय का कार्य जोरों से चल रहा था विशेषकर बजीफदार और रूस्तम प्रमुख विक्रेता थे किन्तु खाक और डॉक्टर भी इस कार्य में अपना हाथ बंटा रहे थे।

एक दिन बाबा ने डॉक्टर और खाक को मण्डली में उत्पन्न निराशा की स्थिति पर समझाया कि आध्यात्मिक पथ पर व्यक्ति को आम तौर पर तीन स्थितियों का सामना करना पड़ता है। प्रथम स्थिति में ''सत्य'' के लिए शौक उत्पन्न होता है और अज्ञात को जानने को एक गहरी रूचि उत्पन्न होती है और निरंतर रोचक अनुभवों की आशा की जाती है। दूसरी अवस्था में वह निराशा, उत्साह हीनता व असहयोग का सामना करता है, यह लम्बे समय तक चलता है। यही वह अवस्था होती है जिसमें किसी को अपने पथ से विचलित नहीं होना चाहिए और उसे उत्साह पूर्वक स्वीकार करते रहना चाहिए। तीसरी अवस्था में साधक को अनुभूति प्राप्त होती है।

एक अन्य अवसर पर बाबा ने डॉक्टर को समझाया कि ''प्रेम प्रथम प्रियतम के हृदय में उत्पन्न होता है। जब तक कि दीपक जलता नहीं, पतंगे उस पर पागल नहीं होते। प्रेम प्रियतम और प्रेमी को एक कड़ी में जोड़ता है। जिस क्षण प्रेमी में यथेष्ट प्रेम उत्पन्न होता है प्रियतम अभिन्न होता जात है। इस प्रकार आकर्षण और विकर्षण और विकर्षण की क्रिया लम्बे समय तक चलती रहती हैं और दोनों के मिलने में समाप्त होती है। हाफिज की पंक्तियों का उदाहरण देते हुए बाबा ने कहा कि हाफिज कहते है कि ''बाल का एक सिरा मेरे हाथ में और दूसरा मेरे मित्र के वर्षो से हमारे मध्य रस्साकशी चल रही है।'' बाबा ने आगे कहा ''जितना प्रेम तुम्हारा मेरे प्रति है, उसी अनुपात में किन्ही क्षणों में तुम मुझसे घृणा भी करोगे। यह विकर्षण तुम्हारे द्वारा स्वीकृत अवरोध है जो तुम्हें अपनी ओर खींचने के मेरे प्रयत्न में उभर रहा है। कुछ समय में तुम मेरे प्रेम का समान शक्ति से प्रतिदान करने लगोगे और तब मेरे प्रेम की अग्नि मर जायेगी और मैं अभिन्न हो जाऊँगा।''

अब बाबा ने अपने भोजन में मात्र पेय लेने का ही निश्चय किया। चाय, मक्खन, दूध और शुद्ध जल। इसी बीच पांच सौ लोगों को भोजन व सौ लोगों को कपड़े बांटने का आयोजन किया गया।

एक दिन कव्वाली आयोजन के पश्चात डाक्टर और रमजू को बाबा ने समझाया कि ''अनुभूति एक है–सदगुरू को जो प्राप्त होती है।– वह शक्ति नहीं वह तो पूर्व से ही उसमें है, किन्तु उन्हें शक्ति के प्रयोग करने का हक दिया जाता है।

हममें से बाहर कुछ भी नहीं है। सभी सातों स्वर्ग, चक्र पृथ्वी हमारे भीतर ही है। सदगुरू हमें केवल उस खजाने के दर्शन कराता है जो हममें निहित है।''

कुछ दिनों बाद 25 फरवरी को बाबा का जन्म दिन मनाया गया। यह आयोजन दौलत मासी की ओर से किया गया था। उनकी इच्छा थी कि वे बाबा के इस प्रथम जन्मोत्सव पर बड़े रूप में एक दावत दें। शीरीन माई व गुलमाई भी इस आयोजन में शामिल हुई। आयोजन हेतु आवश्यक मात्रा में आटा, घी, अचार, बादाम, पिश्ते, मसाले सभी खरीद लिए गए। यह काम पाटिल के सुपुर्द था। किन्तु पाटिल व उनके साथी सामग्री लेकर देरी से पहुंचे। इस पर बाबा नाराज हो गए और उनसे कहा कि जो भी वे लाये हैं हर चीज वापिस ले जाकर समुद्र में फेंक दें और जब तक स्नान न कर लें वापिस न आयें। दूसरे दिन पुनः खरीददारी की गई और सारे आयोजन की तैयारी दौलत मासी की देख रेख में प्रारंभ हुई कि उसी समय बाबा परिसर में आये व उन्होंने कहा कि सामग्री आवश्यकता से कम है और उसे हटवा दिया गया, सभी स्तब्ध रह गए। तीसरी बार पुनः सामग्री खरीदी गई। इस बार कोई भी प्रतिरोध नहीं हुआ और प्रातःकाल से ही रसोईयों एवं अन्य लोगों ने दावत हेतु भोजन तैयार किया।

अभिमान की वह अभिव्यंजना जो व्यक्ति के हृदय में घर कर जाती है उसे दूर करने परमात्मा कितना निष्ठुर हो जाता है– यह घटना इसका जीता जागता उदाहरण है–शायद दौलत मासी को यह अभिमान हुआ था कि वह अवतार का जन्म दिन मनाने का श्रेय ले रही है– बाबा को ऐसा करना पड़ा। तीसरी बार जब दौलत मासी अत्यधिक विनम्र व कातर भाव से बाबा के प्रति समर्पित हुई तो परमात्मा की स्वीकृति मिल गई। यह सारा आयोजन हंसी खुशी एवं स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ–साथ सभी ने आनन्द पूर्वक मनाया और इस प्रकार एक अजन्मे पुरुष का प्रथम जन्मोत्सव सम्पन्न हुआ।

जन्मोत्सव समापन के पश्चात शीरीन माई, दौलत मासी और गुलमाई साकोरी गई। वहां से लौटने पर उन्होंने बाबा को बताया कि महाराज अब भी पिंजड़े में रह रहे हैं वे काफी कमजोर हो गए है। और बहुधा मेरबान को पुकारा करते है। इस पर बाबा ने रूस्तम को साकोरी भेजा कि वे बाबा को वहां न बुलाये। रूस्तम ने साकोरी

से लौटकर बताया कि महाराज आपसे (बाबा से) अत्याधिक नाराज हैं और उन्होंने मण्डली जनों को भी संदेश दिया है कि वे सब मेरबान का साथ छोड़ दें। बाबा ने सभी से पूछा कि क्या अब भी आप सब मेरे साथ रहना चाहेगें? सभी ने बाबा के साथ रहने की स्वीकृति व्यक्त की। इसी बीच रूस्तम की सगाई का दिन आया। बड़ा भव्य आयोजन किया गया। मण्डली के अर्ब्दुरहमान नाम के व्यक्ति ने पनीर के टुकड़े के धोखे में साबुन का एक टुकड़ा मुंह में रख लिया जिसे खाना खाने के बाद हाथ धाने को रखा गया था। बाबा को जब ज्ञात हुआ तो उन्होंने आदेश दिया कि आज से अर्ब्दुरहमान को ''वारसोप'' के नाम से सम्बोधित किया जाये। इस प्रकार हंसी खुशी के माहोल में सारा आयोजन समाप्त हुआ।

मार्च 1923 के अन्त में सूचना पट पर एक आदेश लिखा गया कि बाबा अप्रैल के प्रारंभ में अधिकांश साथियों को उनके घर भेजने की तैयारी कर रहे है और कुछ लोगों के साथ वे स्वयं मेहराबाद चले जायेंगे। किसी को भी जरा सा भी मान नहीं था पड़ाव का अवसान होने वाला है।

रात्रि के समय बाबा ने समस्त मण्डली को परिसर में बुलाया और कहा कि मंजिल-ए-मीम अन्त तक अच्छी रहीं। रूस्तम की शादी में शामिल होने के बाद वे किसी उपयुक्त स्थान पर निवास करेंगें और आप सीाी को पुनः बुलायेंगे किन्तु आप लोगों के रहने का तौर तरीका काफी कठिन होगा। वे सभी प्रतिबंध जो मंजिल में लागू थे - जारी रहेगें और उन्हें अनेकों कठिनाईयों का सामना करते हुए कई श्रम के कार्य करने होगें। यदि आप लोग उनके साथ पुनः रहना चाहते हो तो अच्छी तरह से सोच समझ के ही वापिस आयें। इस समय आप सभी लोग अपने-अपने घर एक माह तक रह सकते है और उसी रात्रि बाबा अपने कुछ साथियों के साथ अहमदनगर को प्रस्थान किए।

इस प्रकार अपने 45 चुने हुए साथियों के साथ अवतार ने कभी अतीत के अपने उस वचन को पूरा किया जो हर अवतार काल में उसकी लीला में प्रगट होता रहा है। यह मंजिलें मीम का समय मंडली जनों के हृदय में प्रभु प्रवेश के लिए आवश्यक तैयारी का काल था- वह तैयारी और वह सफाई हृदय की और मन की इसलिए भी आवश्यक थी ताकि प्रत्येक में परमात्मा प्रविष्ट हो सके अपने पूर्ण वैभव

और सत्ता के साथ। मंजिल को छोड़ते हुए और प्रियतम बाबा से विलंग हुए मंडली जन सम्भवतः कह रहे हो –

‘‘तारो पतित जानि के, सुधारो विरद आनि के
आओ भुजा फैला के, कहां देर डारी है।
सुदामा यार तारो है, प्रहलाद तैं उबारो है,
द्रोपदी की लाज रखी, सभी देख सारी है।
गजने ध्यायो प्रभु गरूड़ छोड़ आयो,
ब्रज को बचायो ताते नाम गिरधारी है।
दास तो पुकारें प्रभु काटिये कष्ट मोर,
अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है।।’’

बन्धुओं एक संत हुआ है डायोजिनीज, अपने किस्म का एक अकेला इंसान। वह अपने साधकों से परम्परा से हटकर किन्तु बड़ी महत्वपूर्ण साधना करवाया करता था। वह साधक को बिना सूचित किए सहसा ही आदेश देता कि ‘‘दौड़ लगाओ’’ – साधक तत्काल ही दौड़ लगा देते। ठीक सामने वाली दिशा में चाहे आगे कोई भी कितना बड़ा अवरोध क्यों न हो? और फिर सहसा ही आवाज देता ‘‘स्टाप’’ रूक जाओ साधको को ठीक वैसी ही दशा में बिना हिले डुले रूक जाना पड़ता। आदेश का पालन वह इस सीमा तक करवाया करता कि यदि ‘‘स्टाप’’ कहते ही किसी का एक पैर उठा हुआ है तो उसे वैसे ही उठाये रखना होता– लोग आश्चर्य चकित होते कि साधना का यह कौन सा अंग है? किन्तु वह कहा करता कि जब तक साधक हर क्षण सजग नहीं है– वह गहरी आध्यात्मिक अनुभूति कदापि प्राप्त नहीं कर सकता–याने कि साधक को सजग होना – उसकी पहली शर्त है। अवतार मेहेरबाबा ने ‘‘मंजिले मीम’’ के दौरान अपरोक्ष रूप से अपने मंडली जन को सजगता का यही तो पाठ पढ़ाया है। संदर्भ मिलते है कि बाबा सो रहे है। पहरे पर मंडलीजन हैं, पूर्ण सजग और सचेत – न जाने बाबा कब ताली बजा दें और उसे तत्क्षण उनके समक्ष उपस्थित होना पड़े। यदि गहराई से हम समझे तो यह काल बाबा का अपने मंडलीजनों को हर क्षण सजग रहने के लिए तैयार करने का काल था।

इतना ही नहीं बाबा जानते थे कि आध्यात्मिक पथ पर बढ़ने वाले हर साधक को निडर, भयरहित ओर अकम्प हृदय चाहिए, इसलिए विपरीत से विपरीत परिस्थितियों का बाबा ने अपने साथियों से सामना कराया और उन पर अपना कड़ा अनुशासन रखा। भय रहित हृदय–अकम्प हृदय ही साधक में वह स्थिति विशेष उत्पन्न करता है जब वह परमात्मा को पाने की शर्त पर अपने जीवन को भी दॉव पर लगाने तैयार हो जाता है। कहते है एक राजा था उत्सुक इस बात का पता लगाने में कि उसके राज्य में श्रेष्ठ धर्नुधर कौन है? कई लोगों के नाम सुन रखे थे उसने जो श्रेष्ठ धनुर्धारी थे। उसने सभी को आमंत्रित किया और एक प्रतियोगिता कराई प्रतियोगिता में जो सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगी साबित हुआ उसे – राजा ने राज्य के श्रेष्ठ धनुर्धारी के रूप में प्रतिस्थापित करने का विचार किया किन्तु जब उसे राजा का यह विचार ज्ञात हुआ तो उसने बड़ी ही विनम्रता से प्रार्थना की कि महाराज ‘‘मैं श्रेष्ठ कहॉ?’’ मैं तो अपने गुरू का लेश मात्र ही हूँ – अभी मेरे गुरू जिन्दा हैं, उनके सामने मेरी हैसियत ही क्या है जो मैं श्रेष्ठता का दावा कर सकूँ? राजा सुनकर हैरान – बोले कहाँ है तुम्हारे गुरू और वह प्रतियोगिता में शामिल क्यों नहीं हुए? उसने कहा महाराज उन्हें प्रतियोगिता से क्या मतलब? वे तो जंगल में इस समय अपने किसी कार्य में व्यस्त होगें अतः वे बुलाने पर आयेगे भी नहीं। राजा हैरान हुआ किन्तु अब जिज्ञासा भी और बढ़ गई थी – उसने उस धनुषधारी को साथ लिया और कहा चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ – तुम्हारे गुरूजी के पास – मैं उनकी कला देखना चाहता हूँ। वह व्यक्ति राजा को जंगल में ले गया। काफी कष्टमय यात्रा के बाद एक जगह एक दुबला पतला सा व्यक्ति कुछ लकड़ियॉ बीनते हुए दिखा। उसने कहा महाराज यही मेरे गुरू है। राजा ने एक क्षीणकाय व्यक्ति को बड़े अचरज से देखा और पूछा – किन्तु यह धनुषबाण तो नहीं लिए – उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा महाराज धर्नुधारी को क्या यह आवश्यक है कि वह हमेशा अपने कंधे पर धनुषबाण लटकाये फिरे? फिर निशाना साधने के लिए कोई धनुष बाण ही आवश्यक हो ऐसा तो नहीं हैं, और उसने एक पतली सी लकड़ी को उठाकर एक सीध में खड़े हुए वृक्षों की ओर निशाना साधा। राजा आश्चर्य चकित हो उठा यह देख वे सभी वृक्ष एक ही वार से धराशायी हो गए। राजा ने प्रार्थना की उस बूढ़े से कि चलें आप हमारे साथ

और राज्य के श्रेष्ठ धर्नुधारी का पद स्वीकार करें। उस बूढ़े ने कहा भला मेरे गुरू के रहते मैं श्रेष्ठ धुर्नधारी कैसे कहला सकता हूँ? अरे – ये तो कुछ भी नहीं–लक्ष्य भेद देखना हो तो मेरे गुरू के पास चले। राजा चकित किन्तु जिज्ञासा अब और प्रबल हो उठी थी अब उसके साथ उस बूढ़े के गुरू के पास जाने को चल पड़ा।

अत्यंत दुरूह पहाड़ी पर चढ़ते हुए, राजा ने पाया कि रास्ता इतना संकरा है कि अगर पैर जरा सा भी फिसल पड़े तो हजारों फीट नीचे गढ़े में गिरना होगा। उसी पहाड़ी पर दूर बेहद संकरे रास्ते पर आगे जाते हुए एक अत्यंत क्षीणकाय वृद्ध व्यक्ति दिखा और बूढ़े ने कहा – महाराज वही मेरे गुरू हैं। जैसे तैसे राजा संभलते हुए उस व्यक्ति तक पहुंचा। राजा काँप रहा था और डर भी रहा था कि अगर हवा का तेज झोंका वह संभाल न सका तो जगह इतनी संकरी है कि हजारों फीट नीचे गिरना होगा, किन्तु संयत हो समीप पहुँचने पर राजा ने कहा – ''मुझे मालूम हुआ है कि आप एक श्रेष्ठ धनुर्धारी हैं? किन्तु क्या इस उम्र में भी आप निशाना साध सकते हैं? लेकिन आपके पास भी तो धनुष बाण नहीं है। बूढ़े ने राजा को बड़ी तरस भरी दृष्टि से देखा और कहा ''राजन सही निशाना लगाने के लिए धनुष बाण की आवश्यकता ही क्या हैं? और फिर निशाना बाहर थोड़े ही लगाया जाता है– निशाना तो सधता है भीतर अकम्प हृदय में – किन्तु दिखाई देता है बाहर।'' और ऐसा कहते ही आकाश में उड़ते हुए पक्षियों की ओर उसने देखा और जरा सी अपनी आंखों की भौंहों को तिरछा किया– और उसी समय लगभग बीस पक्षी धड़ाम से नीचे गिर पड़े।

तो निशाना साधने के लिए जीवन में जो आवश्यक है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो – वह है अकम्प हृदय और एक साधक के लिए भी यह उतना ही जरूरी है जितना एक धर्नुधारी को। मेहेरबाबा ने अपने मंडलीजनों को विभिन्न विषम परिस्थितियों में इसीलिए ही डाला कि वे अकम्प हृदय बनें, मंजिलें मीम–मण्डली जनों को अकम्प हृदय और सजगता का पाठ सीखने हेतु एक पाठशाला रही।

परमात्मा से सच्चाई के साथ प्रेम करो, वह अपने को तुम्हारे समक्ष प्रकट करेगा क्योंकि ऐसी कोई चीज नहीं है जो प्रेम प्राप्त नहीं कर सकता और ऐसा कुछ नहीं है जिसका त्याग प्रेम नहीं कर सकता। – मेहेरबाबा

मेहेराबाद और मौन

अहमदनगर पहुँचने पर बाबा को रूस्तम अपने घर सरोस मंजिल ले गए और मण्डली को खुशरू क्वाटर्स में ठहरा दिया। रूस्तम के पिता का नाम बहादुर कैखुशरू सरोस ईरानी था। उनके पिता ईरान से आये थे और जोरोस्तर मत के थे। कैखुशरू अंग्रेज सेना को माल दिया करते थे। उनकी पत्नी का नाम गुलबाई था किन्तु महाराज उपासनी ने उन्हें गुलमाई के नाम से सम्बोधित किया और वे गुलमाई कह जाने लगी। इनके चार बच्चे थे, रूस्तम, अरदेसिर, पीरोजा और डाली। रूस्तम की शादी इसी बीच तय हुई जो 9 मई 1923 को सम्पन्न होनी थी।

पहली मई को बाबा मण्डली के साथ वहॉ से चौदह मील दूर ''हेपीबेली'' तक घूमने गए। कहा जाता है कि वनवास काल के दौरान राम और सीता इस स्थान पर आये थे। बाबा वहॉ तीन दिन रूके। इस समय एस्पेन्दियार को बाबा ने पेण्डुलम नाम दिया क्यों वह जब बाबा के समक्ष बैठता था तो एक ओर से दूसरी तरफ हिलने की उसकी आदत थी। बाद में उन्हें पेण्डू कहा जाने लगा। एक अन्य व्यक्ति फरदून नोशेरवान चालक को ऊँचा कद होने और अत्यंत विनम्र होने के कारण पादरी कहा जाने लगा।

रूस्तम की शादी की तैयारियाँ बड़े जोर शोर से चल रही थी। शादी के समय बाबा मण्डली के साथ वहॉ उपस्थित हुए किन्तु विवाह में आमंत्रित एक व्यक्ति ने बाबा की निन्दा करना आरंभ कर दी। रूस्तम ने इसका प्रतिवाद किया किन्तु जब बाबा को इसका पता चला तो वे वहॉ से आरनगॉव की ओर चल दिए और मण्डली को साथ आने को कहा। रूस्तम को जब यह ज्ञात हुआ तो वे बाबा के पास पहुँचे और पुनः घर चलने की प्रार्थना की किन्तु बाबा ने उन्हें समझाया कि वे शादी के बाद उन्हें व उनकी पत्नी को आशीष देने अवश्य आयेंगे। आरनगॉव की ओर आते समय रास्तें में बाबा एक वृक्ष के नीचे रूके। वहॉ पर समीप ही कुछ पुरानी इमारतें बनी थी। बाबा के पूछने पर आदि ने बताया कि उनके पिता ने सेना से आरनगॉव के बाहर अनेक पुरानी इमारतों सहित कुछ जमीन खरीद ली है–शायद यही वह जगह हो। जब अंधेरा होने लगा तो गॉव से एक आदमी लालटेन लेकर आया। बाबा ने

उससे कहा – ''छोटे क्या तुम जानते हो कि यह प्रकाश तुम किसे लाये हो? इसकी वजह से तुम अपने सारे जीवन भर प्रकाश पाते रहोगे।''

कैखुशरू को जब यह ज्ञात हुआ कि बाबा उनकी खरीदी हुई जमीन एवं इमारतों में रूचि ले रहे है तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई इसलिए भी कि बाबा उनके इतने समीप रहेंगे। उन्होंने बाबा से निवेदन किया कि वे जैसा भी चाहें उसका उपयोग कर सकते हैं। वह स्थान अंग्रेंजी सेना का शिविर रह चुका था और जब वह बंद हुआ तो इमारतों की हालत अस्त व्यस्त थी। बाबा और मण्डली जनों ने विचार विमर्श के पश्चात् उन इमारतों की मरम्त करने का निश्चय किया। सभी ने बड़े उत्साह के साथ सभी इमारतों की साफ सफाई की और उसे रहने लायक बनाया। किन्तु रात्रि को गुस्ताद जी के बिस्तर में एक सॉप कुण्डलित अवस्था में पाया गया अतः सभी लोग विचलित हो उठे किन्तु बाबा ने आरनगॉव छोड़ने का विचार नहीं किया। उन्होंने मण्डली से पूछा क्या आप में से कोई ऐसा स्थान जानता है जहॉ सांप न होते हों? पेण्डू ने कहा ''हाँ क्वेटा''। बाबा ने कहा ''ठीक है हम लोग क्वेटा चलते हैं और वहॉ कुछ समय बिताकर ईरान चलेंगे।'' अगली सुबह सभी लोग रेल की पटरी के किनारे किनारे स्टेशन की तरफ पैदल चले। वहा विदाई देने हेतु लोगों की बड़ी भीड़ प्रतीक्षा कर रही थी। गुलमाई, पीलामाई, माशाजी, सरोश एवं कुछ अन्य व्यकित उनके साथ क्वेटा रवाना हुए। अनेकों कठिनाईयों का सामना करते हुए मण्डलीजन छह दिन में करांची पहुॅचे। कुछ समय करांची में रूकने के पश्चात् वे क्वेटा गये जहॉ उनकी भेंट रूसी (रूस्तम जहॉगीर ईरानी) से हुई। वे वहॉ अठारह दिन रूके और रूसी के आतिथ्य का आनंद लेते रहे। रूसी की एक पुत्री थी – गौहर जो बाबा से पहली बार मिली। बाद में उसने बम्बई से चिकित्सा की उपाधि ली। वह बाबा के साथ जुड़ गई और उन छह में से एक महिला सदस्य हो गई जो बाबा के पश्चिम भ्रमण के समय उनके साथ रही और बाद के वर्षो में भी उनके सामीप्य में रहती रही।

एक दिन बाबा ने कहा कि वे अब पर्शिया नहीं जायेंगे और भारत में ही छह माह बितायेंगे। वे कश्मीर से बम्बई तक की यात्रा कफनी पहिनकर करेंगें और भिक्षा ग्रहण करेंगे। अतः आवश्यक सामग्री बुलाकर सभी के लिए कफनी तैयार कराई गई।

बाबा ने सभी से पूछा कि क्या वे सब फकीर के इस नये आलम को हृदय से स्वीकार कर रहे हैं? किन्तु ध्यान रहे कि किसी भी परिस्थिति में उनसे किसी दैवीय शक्ति पाने की अपेक्षा न की जाये। सभी ने अपनी स्वीकृति दी। किन्तु वहॉ से बाबा रूसी के परिवार को साथ लेकर ट्रेन से अहमदाबाद को प्रस्थान किए। वहां से मण्डलीजन पैदल व बैलगाड़ी के द्वारा नासिक व कुछ समय बाद अहमदनगर वापिस आये और सीधे आरनगॉव की ओर प्रस्थान किए पर कुछ दिन रूकने के बाद पुनः सभी लोग बम्बई प्रस्थान किया और कुछ दिनों बाद बाबा लोनावाला गए। वह कुछ दिन बाद पुनः बम्बई लौटे, फिर बैलगाड़ी से मण्डली के साथ साकोरी प्रस्थान किया। उपासनी महाराज उन दिनों स्वयं को पिजड़े में कैद किए हुए थे। मण्डलीजन पर महाराज अत्याधिक क्रोधित हुए और उन्हें आश्रम में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी। लौटकर मण्डलीजनों ने बाबा को जो स्लेमसन के बंगले में दस मील दूर ही रूक गए थे - सारा हाल बताया। बाबा ने सभी को समझाकर शान्त किया और दूसरे दिन वापिस खुसरू क्वाटर्स लौट आए। यहॉ पर बाबा को विशेष रूप से एक स्थान तैयार किया गया था जिसे ‘झोपड़ी’ नाम दिया गया था।

एक दिन झोपड़ी पर झण्डा लगाने का प्रस्ताव रखा गया। काफी विचार विमर्श के बाद बाबा ने कहा कि झण्डा सभी सात रंगों का होना चाहिए जिसे सभी ने स्वीकार किया। झण्डे के ऊपर से नीचे की ओर रखे गये सात रंगों का क्रम इस प्रकार है। 1. नीलाम (एक्वामेरीन) 2. बैंगनी (बायोलेट) 3. आसमानी (ब्लू) 4. हरा (गीन) 5. पीला (येलो) 6. केशरिया (आरेंज) 7. लाल (रेड)। आध्यात्मिक क्षेत्र में सात का महत्व तो वैसे भी है। इन्द्रधनुष के सात रंग, सात आकाश, सात भूमिकायें, सात महासागर, सात द्वीप, सिर के सात गोलक, सात कर्मेन्द्रियॉ आदि आदि। अतः सतरंगें ध्वज के इन सात रंगों की विशेषता स्वयं ही स्पष्ट है। प्रकाश के सातों रंग जब मिल जाते हैं तो उसका रंग सफेद हो जाता है जो अंधकार से मुक्ति दिलाता है अतः आज जो बाबा का सतरंगा झण्डा हम देखते है - वह यही है। एक समय रमजू के पूछने पर कि सितारे क्या हैं? बाबा ने बताया कि वे प्रकाश के चक्र हैं जैसा कि हमारा ग्रह विज्ञान। उनमें से अनेकों ग्रह पर मनुष्य निवास करते हैं जो सभ्यता विज्ञान और भौतिक समृद्धि में हमारे समान ही हैं किन्तु आध्यात्मिक रूप से

हमारा गृह पृथ्वी सर्वाधिक विकसित है। बातचीत के क्रम में एक बार बाबा ने धमकाया कि मांस खाने से अनेकों हानियां तो हैं ही साथ ही कामेच्छा भी बढ़ती है। बाबा ने बताया कि पाषाण में बहुत ही कम अंश में चैतन्य है, लगभग शून्य के बराबर वनस्पति जीवन से ही चैतन्य का प्रारम्भ हुआ है। जानवरों में वह कुछ और बढ़ा है और मानव में वह पूर्ण विकसित हुआ है। चैतन्य के साथ-साथ काम की वृद्धि होती है अर्थात् जितना अधिक चैतन्य होगा उतना ही काम अधिक बलवान होगा और जितना कम चैतन्य होगा उतना ही कम काम होगा। इसलिए यदि हम जानवरों का भक्षण करते हैं तो कामेच्छा हम में ज्यादा होगी।

इसी दौरान बाबा ने अपनी इच्छा व्यक्त की कि वे पाँच हजार साधु संतों के चरण स्पर्श करना चाहते है, साथ ही यह भी कहा कि उनकी यह भी इच्छा है कि सन्त समागम की इस यात्रा के दौरान कोई उन्हें गाली देकर, धक्के मार दें ताकि उनके दैवी अहं को भी धक्का लग सके। सभी साथी यह सुनकर दंग रह गए किन्तु बाबा की इच्छा के विपरीत किसी को कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं हुई। इस हेतु बाबा ने मद्रास, कलकत्ता, हरिद्वार, ऋषीकेश, लुकसार, मुरादाबाद, झांसी, भोपाल, रतलाम, अंकलेश्वर, बड़ौदा, पाबागढ़, माऊंट आबू, पंजिम, गोवा, बेलगाम आदि स्थलों की यात्रा की और अनेकों साधु संतों को प्रणाम किया। इस दौरान भोजन में अधिकतर उपवास या जल ग्रहण ही करते रहे। किन्तु इन यात्राओं में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसने प्रभु को अपशब्द कहें हों या उन्हें अपमानित किया हो।

25 जनवरी 1925 को बाबा मेहेराबाद लौटे और अगले दो वर्षो तक रहे। इस समय बाबा के दर्शनों को प्रतिदिन अनेकों लोग आने लगे। पुराने मेस के कमरों में जिन्हें 1923 के प्रथम प्रवास के समय कुछ ठीक कर लिया गया था, एक मेहेर धमार्थ औषधालय व एक अस्पताल खोला गया। यह पीड़ित मानवता की सेवार्थ निःशुल्क व्यवस्था थी। गम्भीर दशा के मरीजों को थोड़े से पलंगों की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर बाबा ने कहा 'यदि तुम्हारा वश हो तो बीमार मत पड़ना किन्तु यदि तुम बीमार पड़ जाओ तो यहॉ उपचार के लिए अपने में चूक मत करना।'

इसके कुछ समय बाद एक पाठशाला प्रारंभ की गई जिसका नाम 'हजरत बाबा जान शाला' रखा गया। बांस और चटाइयों से झोपड़ियॉं तैयार की गई। पढ़ाई, रहना

व खाना सभी कुछ निःशुल्क रखा गया। नियमित रूप से भजन, कीर्तन, नाटक, व अन्य उत्सव मनाने का क्रम भी चलता रहा कभी–कभी तो बाबा स्वयं ही भजन गाया करते और वातावरण सभी को मंगलमय लगने लगता था।

इस समय पहली बार महिला शिष्यायें मेहेराबाद में निवास के लिये आई। इनके रहने का प्रबंध रेल्वे लाईन के दूसरी ओर किया गया। वहॉ अलग से रसोईघर, भोजनालय व आवास का प्रबंध किया गया। जमीन पर चटाइयॉ बिछाकर सोने का प्रबंध किया जाता किन्तु परिसर छोड़ने की अनुमति किसी को भी नहीं थी और पुरूषों को भी उनके पास जाने की मनाही थी हालांकि कई उनके नजदीकी रिश्तेदार भी थे। दौलतमासी भोजन की सारी व्यवसाा देखा करती थी।

एक सत्रह वर्षीय लजीली लड़की मेहरा जहांगीर ईरानी उस स्थल की प्राण केन्द्र बनी। उसकी मॉ बाबा के सानिध्य में आने के पूर्व बाबाजान की भक्त थी और हर बार अपनी दोनों बेटियों मेहरा व फेनी को अपने साथ ले जाया करती थी। मेहरा ने बाबा को प्रथम बार साकोरी में देखा था जब वे वहां अपनी मॉं के साथ महाराज के दर्शन को गई थी। उनकी बहन की शादी जब रूस्तम के साथ तय हुई थी उस समय वे साकोरी में महाराज के पास थी और पैर में तकलीफ होने के कारण मेहरा अपनी बहन की शादी में नहीं आ पा रही थी किन्तु बाबा ने उन्हें लाने के लिये उनकी मॉं को पुनः महाराज के पास भेजा। इस बार वे अपनी मॉं के साथ वापिस आ गई। एक लड़की की शादी करने के पश्चात् दौलतमाई और दूसरी महिलाएं मेहरा की शादी के संबंध में विचार करने लगे। इस बात को बाबा के समक्ष रखा गया। इस पर बाबा ने कहा इस संबंध में मेहरा से ही पूछा जाये। मेहरा ने कहा कि वे शादी नहीं करना चाहती। बाबा ने उनसे कहा कि ‘यह आपकी समस्या का उत्तर है अब इस संबंध में आगे बात नहीं होना चाहिये।’

दौलतमाई के साथ मेहरा आश्रम में आने वाली प्रथम महिला थी। मेहरा को प्रतिदिन आधा घंटा ईश्वर का ध्यान करने और एक घंटे तक यजदान का नाम लिखने का निर्देश दिया गया। एक बार दौलतमासी के पूना आने के कारण बाबा ने सभी महिला सदस्यों को भी वापिस जाने को कह दिया क्योंकि भोजन आदि की सारी व्यवस्था दौलत मासी के ही जिम्मे थी। किन्तु मेहरा के प्रोत्साहन देने पर नाजा ने

बाबा से कहा कि 'हम लोग अपनी ओर से आपकी सुख सुविधा का पूरा–पूरा ख्याल रखने का प्रयत्न करेंगे। नाजा के इस जवाब पर बाबा बड़े खुश हुये और उन्होंने कहा कि वे उनकी सहायता करेंगे।'

मेहरा को बाबा के आदेशानुसार एकांत में ही रखा गया। एक समय तो अन्य महिलाओं को आदेशित किया गया था कि वे उनका स्पर्श न करें। वह बाबा को वहीं है जो राम को सीता थी, कृष्ण को राधा थी, और जीसस को मेरी थी–अनन्त प्रियतम की सर्वाधिक प्रियतमा।

कुछ समय बाद बाबा ने एक बड़े सूचना पटल पर एक वर्ष के लिए अपने मौन धारण करने की घोषणा लिखी। उस दिन गुरूवार था और हमेशा की तरह दर्शनाार्थियों की भीड़ थी। बाबा ने घोषणा में लिखा कि उनका मौन 10 जुलाई 1925 से प्रारंभ होगा उस दौरान किसी भी परिस्थिति में बात नहीं करेंगे। अब बाबा ने सभी मण्डलीजनों को एकत्रित कर प्रत्येक को अगले वर्ष के कार्यो की रूप रेखा समझाई। शाला के बच्चों को भी उन्होंने सलाह दी कि वे अगले बारह माह तक निरंतर उपस्थित होते रहें।

वह नौ जुलाई की शाम थी। विश्राम करने के पूर्व एक बार पुनः बाबा ने मंडलीजनों से बातचीत की और वह समझते हुए कि यह बातचीत उनसे अंतिम बार की जा रही है सभी ने अत्याधिक ध्यानपूर्वक उनके कीमती शब्दों को सुना। बाबा ने कहा कि 'अपने आपसे कहीं अधिक दूसरों का ध्यान रखें – अपने शरीर का उपयोग सेवा के लिए करो। यदि आप परमात्मा की अनुभूति प्राप्त करना चाहते है तो यह निश्चित ही अत्याधिक आवश्यक है।' उन्होंने बताया कि उनके मौन में जाने का एक कारण यह भी है कि बाबा जान के समाधिस्थ हो जाने पर उन्हें अत्याधिक आध्यात्मिक बोझ उठाना पड़ेगा (चूंकि बाबा जान अगले छह वर्षो तक और शरीर में रही अतः बाबा का उनकी भौतिक मृत्यु के बारे में नहीं बल्कि अवतार के पटल से उन्हें स्वयं को अलग कर लेने के बारे में उनका संकेत था) बाबा ने कहा कि शीघ्र ही दूर–दूर तक जातिगत झगड़े फैलने वाले हैं, विशेष कर भारत में। विश्व युद्ध और प्राकृतिक संहार होने वाला है–उनमें लाखों लोग अपने प्राण गंवायेंगे किन्तु उसके बाद शान्ति और स्थिरता कायम होगी।

अगली सुबह 10 जुलाई 1925 को बाबा अपने नियत समय पर प्रातः 5 बजे झोपड़ी से बाहर आये और स्नान आदि के पश्चात स्लेट और पेन्सिल लेकर मण्डलीजनों की तरफ गये और लिखकर व इशारों से उनका अभिवादन करते हुए–उनके स्वास्थ्य एवं रात्रि को अच्छी नींद आई इस संबंध में सभी से पूछताछ की।

अब स्लेट पेंसिल एवं संकेतों के हावभाव के माध्यम से ही बाबा अपनी बात व्यक्त करते थे। (बाद में वह अंग्रेजी वर्णमाला की पट्‌टी और एक से 10 तक के अंकों की पट्‌टी के सहारे शब्दों से वाक्यों की रचना करते थे।) सभी कार्य पूर्व की ही भांति चलते रहे। बाबा अपनी प्रतिदिन की जांच पड़ताल साक्षात्कार, पुस्तक लेखन, चक्की पीसना आदि कार्य यथावत जारी रखे रहे। प्रियतम बाबा के मौन ने किसी भी समय वाणी रहितता का अहसास नहीं होने दिया। मौन स्वयं ही मुखरित हुआ करता था और सिर्फ आकस्मिक रूप से आया दर्शक ही यह महसूस कर पाता था कि वह बोल नहीं रहे हैं किन्तु मंडली का कोई अन्य व्यक्ति उनकी ओर से बोल रहा है।

कुछ समय बाद झोपड़ी के सामने एक नीम वृक्ष के नीचे बाबा का एक नया आसन बनाया गया। यह एक बड़ी मेज थी जिसमें एक सिरे पर दराज थी जो इतनी बड़ी थी कि उसमें बैठा जा सकता था और मेज का शेष भाग एक बरामदा जैसा था जिसमें से आया जाया जा सकता था।

मेहेर बाबा मौन क्यों रहे? यह आम प्रश्न लोगों द्वारा पूछा जाना बड़ा ही स्वाभाविक है? 10 जुलाई 1925 को मौन धारण करते समय उन्होंने स्पष्ट किया था कि यह केवल उनके अत्याधिक अध्यात्मिक कार्य की वजह से है जो उनके आगे के पथ निर्धारण में सहायक होगा। आने वाले वर्षो में बाबा ने संकेतों के माध्यम से अपने मौन का अर्थ स्पष्ट किया। अनेकों बार उन्होंने घोषणा की कि जब वे अपना मौन तोड़ेगे तब वे केवल 'एक शब्द' ही बोलेगें।

'मैं तुम्हारे हृदयों में प्रेम का बीज बोने आया हूँ जिससे कि समस्त प्रकार के आचरणों के बावजूद भी तुम प्रेम के माध्यम से विश्व के सभी राष्ट्रों नस्लों वर्गो और जातियों में एक रूपता का अनुभव और अहसास कर सको।' 'ऐसा कुछ करने के लिए मैं अपना मौन तोड़ने को तैयार हूँ। यह तुम्हारे कानों को आध्यात्मिक व्याख्यानों से भर देने से नहीं होगा। मैं केवल एक शब्द ही बोलूंगा और यही शब्द सभी

मानवों के हृदय में प्रवेश करेगा और यहां तक कि पापी को भी यह अहसास करा देगा कि वह साधु होने के लिए ही इस पृथ्वी पर आया है और साधु को भी यह अनुभूति करायेगा कि ईश्वर जितना उसमें है उतना ही एक पापी में भी है।' मेहरबाबा ने स्पष्ट किया कि शब्द मात्र के उच्चरण से वास्तव में गहर आध्यात्मिक ऊर्जा एवं सहज प्रेम निःसृत होता है और उससे सभी व्यक्ति एवं प्राणी लाभ पाते हैं क्योंकि सभी स्वरूपों एवं शब्दों का मूल यही प्रथम ध्वनि या मूल शब्द हैं और निरंतर उससे जुड़े रहकर जीवन प्राप्त करते हैं। जब उसका उच्चारण मेरे द्वारा किया जायेगा तब वह सभी मनुष्यों एवं प्राणियों में प्रवेश कर जायेगा और सभी को ज्ञात हो जाएगा कि मैंने अपना मौन तोड़ दिया है।

''मनुष्यों में इस शब्द की प्रभावी शक्ति और उसकी प्रतिक्रिया प्रत्येक व्यक्ति के अनुसार होगी।''

''मेरे मौन तोड़ने पर एक आध्यात्मिक उत्थान होगा जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदय में अनुभव करेगा।''

मेहेर बाबा ने बार-बार यही कहा है कि वे तभी अपना मौन भंग करेंगे जब उसका विश्व व्यापी प्रभाव होगा। उनके कार्य, उन्होंने बताया की ''तुलना एक वृहद ढेर से की जा सकती है जो व्यक्तिगत रूप से विश्व में व्याप्त है और यह विश्व व्यापी ढेर भ्रम में पड़े हुए मनुष्य की निरर्थक अज्ञानता का पुंज है जो उसे असत्य की चलनी में डालकर सत्य की अनुभूति कराने में बाधक होता है।'' बारम्बर उन्होंने इसी पर जोर जा दिया कि उनका मौन भंग सर्वाधिक उपयुक्त समय पर होगा अतः वे वांछित परिणाम की प्राप्ति हेतु उस सर्वोत्तम क्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बाबा ने संकेत किया था कि विश्व में जब युद्ध और विनाश आपने चरम उत्कर्ष पर होंगे और मानवता अत्यंत कातरता से उस ''सत्य की लहर'' के लिये विकल हो उठेगी तब वह समय विशेष आयेगा।

मेहेर बाबा निरंतर एक विचित्र एवं कठिन समय के आने का संकेत देते रहे जो उनके मौन भंग के समय के कुछ ही पूर्व उपस्थित होगा उन्होंने एक समय विशेष को ''मार्गदर्शन'' का काल कहा जिसके बाद उनका प्रगटीकरण होगा जिसमें उनके अनुयायियों के प्रेम एवं विश्वास की कठिन परीक्षा होगी। उस काल में उनके

शब्द भी उनके स्वयं के विरोध में कहे गए प्रतीत होगें। उन्होंने पुनः जोर देकर कहा कि समय और युग के अवतार के रूप में उनका प्रगटीकरण उनके मौन भंग की विश्वव्यापी घटना के साथ–साथ लयबद्ध होंगे, और यह विशिष्ट काल उस समय तक नहीं आयेगा जब तक विश्व में अत्यंत संघर्ष भ्रम एवं संहार की स्थिति निर्मित नहीं हो जाती।

''जब मैं यह कहता हूँ कि मेरा प्रगटीकरण मेरे मौन भंग से जुड़ा हुआ है तो लोगों को मुझसे ज्यादा शब्दों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। मैं शब्दों के शब्द का उच्चारण करूंगा जो बिना किसी विरोध के उन लोगों को सहायक होगा जो कि मैं ही ईश्वर हूँ को स्वीकार करने हेतु तैयार है। वह शब्द जो मेरे द्वारा उच्चारित होगा विश्व में ईश्वर की ओर से कहा गया होगा न कि एक दार्शनिक के द्वारा कहा गया माना जायेगा– वह सीधे हृदय में प्रवेश कर उसे आन्दोलित करेगा।''

एक अवसर पर बाबा ने यहां तक कहा था कि मौन तोड़ने की तैयारी में उनका भौतिक शरीर भी नष्ट हो सकता है। एक बार बाबा ने बुद्धि विचार और कल्पना के संबंध में समझाते हुए बताया कि बुद्धि विचार की क्रिया नहीं अवचेतना है जिसकी समानता गहरी निद्रा से की जा सकती है। विचार क्रिया और कल्पना में बुद्धि छुपी रहती है। जब बुद्धि स्वयं का विचार करने लगती है तो वह ईश्वर है ओर जब वह कल्पना के बारे में सोचती है तो वह संसार, शरीर और अज्ञान होती है। बाबा ने कहा कि ''बुद्धि की उपमा एक महासागर से की जा सकती है जो प्रारंभ में पूर्ण शान्त रहता है किन्तु जब वायु बहने लगती है तो जल में हल चल मचने लगती है और लहरों का स्वरूप उत्पन्न हो जाता है जो बाद में असंख्य बुलबुलों में बदल जाता है। प्रत्येक बुलबुले में एक सीमित रूप में कल्पना की भांति बुद्धि का सागर है। बाबा ने कहा कि ''कौन जा रहा है? कौन आ रहा है? कहां से आ रहा है? कब आ रहा है? जा रहा है क्यों? कैसे आ रहा है? सागर की लहरों ने सागर से कहा मुझे सागर बना दो सागर ने कहा–जरा उछल कूद बंद कर दो, शांत हो जाओ, उद्वेलन छोड़ दो, तुम पाओगी कि तुम स्वयं सागर हो।''

एक अन्य अवसर पर बाबा ने बताया कि सत पुरूष या सदगुरू तीन प्रकार के होते है। प्रथम विदेह मुक्त या मज्जूब जो कि अनन्त ज्ञान, अस्तित्व व आनन्द के

अनुभव में स्वयं को डुबा चुके हैं और अपने स्वयं के शरीर के साथ–साथ काल्पनिक संसार से अनभिज्ञ हैं। द्वितीय वे जिन्हें जीवन मुक्त या सालिक कहा जाता है– वे जो कि आत्मानुभूति के पश्चात इस भौतिक क्षेत्र में नीचे आते हैं एवं जिन्हें शरीर व आस–पास की परिस्थिति का भान होता है किन्तु भौतिक क्रियाकलापों में कोई भाग नहीं लेते। तीसरे प्रकार के आचार्य या कुतुब कहे जाते हैं जो कि आत्मानुभूति के पश्चात न सिर्फ भौतिक चेतना को प्राप्त करते हैं बल्कि विश्व के उत्थान हेतु अवर्णनीय क्रिया कलापों में संलग्न रहते हैं।

एक समय मंडली को संबोधित करते हुए बाबा ने कहा ''सभी घड़ियों को बांध दिया गया है, अलार्म को स्थिर कर दिया गया है और प्रत्येक के लिए निश्चित क्षण पर अलग–अलग घंटी बज उठेगी– वह जहां कहीं भी हो चाहे उनके समीप या उनसे दूर। जब प्रकाश आयेगा वहां एक सेकेण्ड में आ पहुंचेगा। ध्यान पूर्वक देखो और घंटी की आवाज व प्रकाश की प्रतीक्षा करो। तुम जो भी कार्य करते हो, उसी में अपना पूरा हृदय और मस्तिष्क सचाई से लगा दो। अधूरे मन से कोई कार्य न करो न ही किसी कार्य को अधूरा छोड़ो, न ही मस्तिष्क को दो चीजों के मध्य भटकाओ। एक कार्य लो और उसे पूर्ण कर डालो।''

ईश्वरानुभूति में रमे हुए गुरूओं के कर्त्तव्यों की ओर संकेत करते हुए बाबा ने कहा कि वे सूक्ष्म जगत को बाहर की ओर धक्का लगाते है किन्तु उनके शीर्ष पुरूष को अपने साथियों को ईश्वरानुभूति को तैयार करना पड़ता है और भौतिक जगत में आगे की ओर धक्का लगाना पड़ता है। यही करने के लिए स्वयं परमेश्वर को निर्विकल्प अवस्था से नीचे उतरना पड़ता है। बाबा ने बताया कि ''ईश्वरानुभूति का अर्थ है कि जब सारे संस्कारों का पूर्ण रूप से विनाश हो जाये, मस्तिष्क की पूर्ण स्थिर दशा जिसमें सोच विचार की कोई गुन्जाइश न हो। यह बहुत ही कठिन बात होती है क्योंकि जैसे ही मन सोचना बंद कर देता है तो उसे गहरी निद्रा आ जाती है अर्थात अवचेतन स्थिति आ जाती है। यहॉं तक कि चित्त की ऐसी स्थिर अवस्था को स्थायी रूप से प्राप्त करने में महान योगी भी असमर्थ होते है।'' इस नये स्थल मेहेराबाद के विकास के साथ बाबा ने अपने अनुयायियों के लिए एक और कठिन परीक्षण से गुजारा। वे समय समय पर पैदल या रेल द्वारा लम्बी यात्रायें किया

करते। ये यात्रायें महाराष्ट्र प्रदेश के चारों ओर पश्चिमी भारत करोंची और क्वेटा तक की रही। इन यात्राओं में बाबा ने हमेशा भेष बदलकर यात्रा की और विभिन्न क्षेत्रों में मण्डलीजनों को भेज गरीबी और कोढ़ियों को एकत्रित किया जिन्हें वे अपने हाथों से स्नान कराते, खाना खिलाते व कपड़े पहनाते थे। वे बहुधा अन्न, वस्त्र या कुछ अवसरों पर कुछ पैसा प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को दिया करते थे जिन्हें उसकी आवश्यकता हुआ करती थी। यही कुछ ऐसे अवसर होते थे जब मेहेरबाबा अपने हाथों से पैसों का स्पर्श किया करते थे।

बाबा अपने शिष्यों से अधिक से अधिक सहन शक्ति व तत्परता की अपेक्षा करते थे। कई बार यात्रा के दौरान उनका दिन जो कि सूर्योदय के काफी पूर्व से आरंभ होकर अर्द्धरात्रि के पश्चात् समाप्त होता था- वे अपने साथियों को मात्र दो घंटे की नींद के पश्चात ही अगले गन्तव्य स्थल को सुनिश्चित करने के लिए जगा दिया करते थे। पैदल लम्बी दूरियां केवल थोड़ी सी नींद अनियमित और कम भोजन ही लोगों को ज्यादातर प्राप्त हुआ करता था। बाबा ने मण्डली को स्वार्थ रहित गहरी सेवाभाव के साथ जीवन जीने को प्रेरित किया। जिस प्रकार वे उनके साथ रहे और उनकी कार्य शैली को देखा तो मेहेरबाबा के सभी भक्तों ने अन्ततः उनके जीवनदर्शन को पृथ्वी पर ईश पुरूष के जीवन से निःसृत चिरंतन सुगंध की ही भांति स्वीकार किया। एक बार बाबा के साथ मण्डली जनों ने औरंगाबाद जाने का प्रस्ताव रखा, विचार विमर्श चल ही रहा था कि अचानक बाबा ने आदि से कहा कि बाहर जाकर बादलों को जोर-जोर से पुकारो ''आओ वर्षा आओ'' इस प्रकार आदि के जोर से चिल्लाने पर तेज हवायें चलने लगी, बादल इकट्ठे हो गए और फिर तेज वर्षा होने लगी, अतः बाहर जाने का कार्यक्रम अगले दिन को रखा गया। अगले दिन बाबा मण्डली जनों के साथ औरंगाबाद होते हुए एलोरा स्थित कैलाश मंदिर देखने गए। वहॉ से लौटते हुए बाबा खुल्दाबाद नामक ग्राम में कुछ समय तक रूके। ऐसा कहा जाता है कि खुल्दाबाद में किसी समय 1400 साधु रहा करते थे। बाबा ने बताया कि उनमें से केवल एक ही सदगुरू थे- जरजरी वक्स जो मण्डली के आध्यात्मिक प्रपितामह हैं अतः यह प्रथम अवसर ाा जब उनमें से किसी को ज्ञात हो सका कि साईबाबा के गुरू कौन थे?

एक शाम बाबा ने मण्डलीजनों से कहा कि योगी रंगीन कांचों में से सत्य को देखता है किन्तु सदगुरू के पास कांच नहीं होते वह स्पष्ट रूप से देखा करता है। योगी शक्तियों को उधार लेकर उनका प्रयोग करता है। जबकि सद्‌गुरू की शक्तियां उसकी स्वयं की होती हैं। सदगुरू के चमत्कार स्वार्थ रहित होते और समस्त सृष्टि को आगे ले जाने के लिए धक्के की तरह प्रयोग में लाए जाते है किन्तु चमत्कार चाहे सदगुरू द्वारा किए गये हो या योगी द्वारा मात्र भ्रमजाल ही होते हैं। योगी द्वारा मृत को जीवित करने का चमत्कार सांसारिक लोगों के साथ स्वयं योगी को भी एक चमत्कार होता है किन्तु सद्‌गुरू को वह चमत्कार नहीं होता बल्कि दुनिया के समक्ष वह इस सत्य का उद्‌घाटन करता है कि जिसे वे मृत्यु समझते हैं वह मृत्यु ही नहीं है–जब कोई मरता ही नहीं तो किसका जीवन वापिस लाओगे।

किन्तु इन्हीं यात्रओं के दौरान मण्डली के सूरमाओं में से एक अर्जुन धराशायी हो गया जिसे युद्ध स्थल में एक भी खरोंच न आई थी। उसके पिंजड़े से उसकी आत्मा उड़ गई और बाबा ने पकड़कर उसे अपने हृदय की गहराई में डुबो लिया उस समय तक के लिए जबकि प्रेम सेवा के लिए वह पुनःजन्म नहीं लेता इस प्रकार एक माह तक बाहर रहने के पश्चात् पुनः विचार किया गया कि मेहराबाद ही वापिस क्यों न चला जाये। बाबा की अनुमति प्राप्त होते ही सभी मण्डलीजन आश्चर्य चतिक हो उठे और सभी लोग 25 दिसंबर के प्रातः 9 बजे मेहराबाद वापिस पहुँचे और पुनः पूर्व की भांति स्कूल, अस्पताल आदि प्रारंभ किए गए। अब बाबा ने आश्रम को मेहेर आश्रम का नाम दिया और अपने मण्डलीजनों से कहा कि मेहराबाद एक विद्युतग्रह है, अतः आप सब मुझसे जुड़े रहें। उन्होंने कहा कि ‘‘संसार की समस्त घटनाओं की कुंजी उनके पास है और जब वे उसे घुमा देंगे तभी विश्व में एक प्रचण्ड दावानल उपस्थित हो जायेगा। फिर भी आश्रम में हमेशा की भांति शान्ति पूर्वक दैनिक कार्य होते रहेंगे। साईबाबा ने शिरडी जैसी जगह में बाहर बैठे–बैठे एक महायुद्ध आरंभ किया, उसका संचालन भी किया और उसका समापन भी किया और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वे कुछ न कर रहें हों’’ इस प्रकार 1 मई 1927 को नए मेहेर आश्रम का प्रारंभ हुआ। मेहेराबाद आश्रम में रहते हुए बाबा का जो सबसे अनूठा प्रयोग रहा वह था सन् उन्नीस सौ बासठ में एक नवम्बर से चार नवम्बर तक पूना

के गुरू प्रसाद में आयोजित किए गए ''ईस्ट–वेस्ट'' सहवास का। मेरी अपनी जानकारी के अनुसार यह प्रथम अवसर था कि धारणा की दृष्टि से जब किसी भी अवतार ने विश्व में बिखरी मानवता को एक मंच पर लाकर गले लगाया हो और लोगों को आपस में गले मिलवाया हो। इसी भांति सन् 1954, सन् 1955 और सन् 1958 में भी मेहराबाद आश्रम में बाबा ने सहवास कार्यक्रम आयोजित करवाये। जहाँ हजारों व्यक्तियों ने सम्मिलित होकर प्रभु के दर्शन तो किए ही, उनका प्रेम भी पाया और अपने जीवन को धन्य किया।

मेहराबाद में ही बाबा ने आपने संकेतों के माध्यम से अपने मण्डलीजनों से कुछ पुस्तकें भी लिखवाई। उनमें से कुछ प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैः– ''डिवाइन थीम सन् 1943 में,'' ''मेसेजेस ऑफ मेहेर बाबा सन् 1945 में, ''दि फाइटी फ्री लाइफ एण्ड सेवेन अदर मेसेजेस'', 1952 में, ''बीम्स फ्राम मेहेरबाबा आन स्प्रिचिउअल पेनोरामा'' 1958 में ''डिस्कोसेस'' 1967 में, ''लिसिन ह्युमिनीटी'' 1971 में और ''गाड स्पीक्स'' जो सन् 1973 में बाबा के शरीर छोड़ने के बाद प्रकाशित हुई। गाड स्पीक्स आध्यात्मिक मार्ग के पथिकों के लिए एक अद्धितीय पुस्तक है। प्रत्येक बाबा प्रेमी को इस पुस्तक का अध्ययन नितांत आवश्यक है प्रसंग वश यहां यह भी स्पष्ट करना समीचीन होगा कि बाबा ने सन् 1926–27 में अपने स्वयं के कर कमलों से एक पुस्तक और लिखी थी जो विश्व की महानतम रचना है। बाबा स्वयं अपने पास इस पुस्तक को बड़ी हिफाजत से रखा करते थे। अपनी लंदन यात्रा के दौरान राजपूताना जहाज पर जब महात्मा गाँधी ने बाबा के दर्शन किए थे तो कहा जाता है कि उस पुस्तक का एक अध्याय उन्होंने गाँधीजी को पढ़ने दिया था। गाँधी जी उससे बड़े प्रभावित हुए थे। बाद में बाबा की ही आज्ञा से वह पुस्तक किसी विश्वस्त जन को सौंपी गई इस निर्देश के साथ कि जब उचित समय आयेगा तो वह पुस्तक उपयुक्त समय पर प्रकाशित की जायेगी।

प्रेमाश्रम

प्रेम नगरियायत बसिव, नियम नीति कछु नाहिं।
ज्यौं नैना सैना लडहिं, मन नाहक बंधि जाहिं।।

1 मई 1927 को मेहेराबाद में बाबा ने मेहेर आश्रम आरंभ किया। इस आश्रम में छोटे बच्चों को ध्यान के साथ-साथ धर्म निरपेक्ष आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान की जाने की आयोजना बाबा ने बनाई। अन्य बच्चों के अलावा उस समय शाला में ईरान से आये हुए दो मुसलमान और बारह फारसी छात्र थे। बम्बई से भी मुगल परिवारों के दो बच्चे अपने पिता के साथ आश्रम में प्रवेश पाने आये। बाबा ने आश्रम की सारी शर्ते व व्यवस्था क्रम उनके समक्ष रखा जिसे उन बच्चों के पिता ने स्वीकार किया और उन्हें सहर्ष प्रवेश दिलाया। उनमें से अली नाम का एक छात्र था।

20 दिसम्बर 1927 को स्वयं को एक कमरे में पूर्ण रूप से एकाकी होने के पूर्व बाबा ने मण्डली जनों को आदेश दिया कि कोई भी व्यक्ति यहॉ तक कि कक्षा शिक्षक भी आश्रम के किसी भी छात्र को किसी भी दशा में स्पर्श नहीं करेगा। सम्भवतः इन दिनों बाबा इन बच्चों को आन्तरिक रूप से गहन आध्यात्मिक अवस्था में ले जाने की तैयारी कर रहे थे। बाबा के एकान्तवास के एक सप्ताह उपरांत ही सभी छात्रों के हृदय में बाबा द्वारा प्रविष्ट की गई दिव्य प्रेम की चिन्गारी धीरे-धीरे जोर पकड़ रही थी फलस्वरूप जब तब बच्चों के नेत्रों से प्रेम की अश्रुधार प्रवाहित होने लगती थी। वह सन 1928 की 1 जनवरी की रात्रि का लगभग 8 बजे का समय था कि यकायक सभी बच्चों ने जोर-जोर से रोना प्रारंभ कर दिया और ''बाबा-बाबा'' कह कर चिल्लाना शुरू कर दिया किन्तु जब उन बच्चों को बाबा के समीप ले जाया जाता वे एकदम शान्त हो जाया करते। इन दिनों बाबा उपवास कर रहे थे। यह उनका 52 वां दिन था। अली बाबा के प्रेम में अगुआ हो चुका था और बाबा उस पर विशेष ध्यान दिया करते थे। एक माह बाद बाबा ने घोषित भी कर दिया कि अली मात्र एक स्पर्श से ससीम से असीम में प्रवेश करने की स्थिति में पहुँच गया है। एक बार बाबा के यह कहने पर कि अली अब बाबा के विषय में

नहीं सोचता सिर्फ अपने बारे में व अपने पिता के बारे में सोचता रहता है। यह सुनते ही वह गहरी सिसकियों में डूब गया और तेजी से यहॉ–वहॉ भागने लगा, बड़ी मुश्किल से बाबा ने उसे शान्त किया। पूछने पर उसने बताया कि उसे यत्र–तत्र सर्वत्र केवल बाबा ही दिखलाई पड़ते है। कुछ समय बाद अफवाहों की वजह से अली के पिता ने अली को वापिस अपने साथ ले जाना चाहा। यह सुन कर बाबा ने कहा ''यदि अली चला जाता है तो हर चीज चली जायेगी और आश्रम भी छिन्न भिन्न हो जायेगा।'' किन्तु अली के पिता उसको वापिस बम्बई ले गए। आश्रम में निराशा व्याप्त हो गई। बाबा की अनुमति से दो लोग उसे वापिस लाने बम्बई भी गए किन्तु वे निराश होकर वापिस लौट आए।

कुछ दिनों बाद कैख्रुशरो अफसरी को अली का एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि मेहेर बाबा को कृपया बता दें कि वह यहॉ बम्बई में बड़ा उदास है और स्वयं को घोर निराश की स्थिति में पा रहा है। जिस रात्रि वह यहॉ आया उसे चमकीले प्रभा मंडल के मध्य प्रियतम बाबा ही दिखते रहे। उसने आगे लिखा कि कृपया बाबा को ये पंक्तियॉ पढ़कर सुना दें,

सर्वोच्च स्वर्ग का शिखर तो आपका आश्रय है
सत्य का घर तो आपका विश्राम स्थल है
संसार आपकी दिव्य आभा में देदीप्यमान हो रहा है
आपका सीधा और भव्य स्वरूप उद्यान में सरों के वृत्त जैसा है
आपके कर कमलों के स्पर्श से मृत भी जीवन प्राप्त कर चुके हैं
आपके प्रेम की गर्मी से
मैं जल से भरे हुए पात्र की भांति हमेशा ही उबल रहा हूँ
यदि मेरी हड्डियाँ भी गल जायें
तब भी आपका प्रेम मेरी आत्मा से कभी विलग नहीं होगा।

उन्हीं दिनों अली के पिता उस पर तरह–तरह के दबाव डाल रहे थे। उसी रात्रि अली ने एक स्वप्न देखा जिसमें बाबा प्रगट हुए और उन्होंने संकेत किया कि क्या तुम नहीं जानते कि मद्रास मेल दस बजे छूटती है? अवसर पाकर अली 3 मार्च को

मद्रास मेल से अहमदनगर आ गया। उसके आने से आश्रम में आनन्द व उत्साह की लहर फैल गई। बाबा ने उसे प्यार करते हुए अपने हाथों से भोजन परोसा। किन्तु अगले ही दिन अली के पिता सैयद हाजी मुहम्मद अली को वापिस लाने पुनः मेहराबाद पहुँचे। मण्डली जनों के काफी समझाने बुझाने के बाद अली को आश्रम में एक वर्ष तक छोड़ने को समहत हो वे वापिस बम्बई लौट गए।

25 मार्च को बाबा ने मेहेर आश्रम का विभाजन किया। वे छात्र जिनके हृदय में प्रेमाग्नि सुलग रही थी उनको अलग स्थान दिया गया और उसे प्रेमाश्रम नाम दिया और अन्य छात्रों को अलग स्थान दिया गया। जिसे मेहेर आश्रम का नाम दिया गया। बाबा के सम्पर्क में रहने के बावजूद भी प्रेमाश्रम के लड़कों के हृदय में इतना गहरा प्रेम उमड़ पड़ा कि उनका व्यवहार नियंत्रण के बाहर हो गया तब बाबा को यह धमकी देनी पड़ी कि वे प्रेमाश्रम को समाप्त कर देंगे। इस पर सभी छात्रों ने गहरा पश्चाताप व्यक्त किया। वे बहुत रोये और प्रियतम बाबा से बार–बार क्षमा याचना की। लगभग एक सप्ताह बाद एक अप्रैल 1928 को प्रातः साढ़े ग्यारह बजे बाबाजान मेहेराबाद पहुँची और उनकी कार हजरत बाबाजान हाई स्कूल के पास जाकर खड़ी हो गई। चूंकि उन दिनों बाबा एकान्तवास में थे अतः बाबाजान ने पादरी से कहा कि ''मेरे बेटे को चिट भेज दो''। पादरी ने बाबा के पास संदेश भेज दिया। उस दिन की विशेष बात यह थी कि प्रातः लगभग साढ़े आठ बजे बाबा ने अपनी चप्पलें उतार कर रख दी थी एक ऐसा कार्य जो इसके पूर्व उन्होंने कभी नहीं किया था – यह समय ठीक उसी समय से मेल खाता है जिस समय बाबाजान ने पूना से प्रस्थान किया होगा। बाबा को जैसे ही चिट प्राप्त हुई उन्होंने सभी लड़कों को एकत्रित किया और तेजी से पहाड़ी के नीचे की ओर चले और कुछ दूरी पर खड़े रहकर सभी लड़को को बाबाजान के दर्शन करने भेजा। बाबा सारे समय वहीं पर खड़े रहे जब तक कि बाबाजान वापिस नहीं चजी गई। बाद में बाबा ने कहा ''यह दिन मेरे जीवन की महानतम घटना युक्त दिवस है।'' अगले ही दिन बाबा ने पूना को प्रस्थान किया और बन्द गार्डन में बाबाजान के आसन तब गए।

मई के प्रथम सप्ताह में पूना के एक दर्शक अदुल्ला हारून जफर ने बाबा को बताया कि पूना के कुछ क्षेत्रों में आश्रम हेतु एक सुन्दर स्थल है। बाबा ने कहा कि

वह स्थान परिवर्तन करना पसंद करेगें और उस स्थान का निरीक्षण करने बाबा ने मेहराबाद 8 मई को प्रातः 4.30 बजे छोड़ दिया। उसी दिन कुछ समय बाद जबकि बाबा पूना में थे बाबाजान मेहराबाद गई ओर बच्चों को थम–थपाकर लाड़ प्यार से आशीर्वाद दिया। लौटते समय जब बाबाजान पूना की ओर जा रही थी और बाबा मेहराबाद को लौट रहे थे, ठीक आधे रास्ते में दोनों एक दूसरे के बाजू से निकले। हालांकि बाबा को पूना का क्षेत्र पसंद नहीं आया था किन्तु उन्होंने कहा कि बाबाजान से दुबारा मिलने से आश्रम का परिवर्तन अब आवश्यक हो गया है। उन्हीं दिनों किसी ने टोका के बारे में बताया। टोका स्थल मेहेराबाद से पचास मील की दूरी पर गोदावरी और प्रस्वारा नदियों के संगम पर स्थित है और कुछ ऐसा हुआ कि उसी दिन शाम के समय बाबा टोका पहुंचे और उस स्थल को पसन्द कर लिया। इस प्रकार 3 जून 1928 को सम्पूर्ण मेहेराबाद का आश्रम टोका को स्थानांतरित किया गया। यह वही स्थल है जहां पर साई बाबा ने भी अपना कुछ समय व्यतीत किया था। एक बार फिर अली के पिता अली को वापिस ले गये किन्तु अली बाबा के प्रेम के लिए अत्यंत व्याकुल रहा। 3 अक्टूबर 1928 को बाबा कार द्वारा अहमदनगर में किन्हीं श्री सत्था के घर गए और कुछ समय तक वहॉ विश्राम किया। उसी समय उनके पास से एक कार निकली जिसमें बाबा जान बैठी थी। वह शीघ्र ही टोका वापिस हुए। दो दिन बाद पुनः वे सत्था के घर गए और उनके घर के सामने जो एक छोटा सा बगीचा था उसमें जाकर बैठ गए। बाबा ने कहा ‘बाबाजान पुनः आई और अब मैं स्वतंत्र हो गया हूँ।’

कुछ समय बाद अली पुनः वापिस आ गया और शीघ्र ही अन्य छात्रों में शामिल हो गया। इस समय बाबा ने स्वयं को प्रेमाश्रम के कार्यो को छोड़ शेष सभी कार्यो से अलग कर लिया था। प्रातःकाल से सायंकाल तक वे लड़कों के साथ कार्य किया करते थे। उन्होंने आध्यात्मिक विषयों, ईश्वर व प्रेम आदि पर लगातार घण्टों प्रवचन दिए और प्रत्येक लड़के को उसकी विशेष ध्यान प्रक्रिया में मार्गदर्शन दिया। वह उनके खेतों में भी रुचि लिया करते थे। दिन में एक बार भोजन और तीन घंटे की नींद ही उन्हें काफी होती। सभी छात्र पूर्ण स्वास्थ्य के प्रतिमान थे।

नवम्बर में मण्डली जनों व कई लड़कों को जुकाम हो जाने के कारण बाबा ने टोका की जलवायु की शिकायत करना आरंभ की और 10 नवम्बर 1928 को उन्होंने घोषणा की कि वे अपना आश्रम वापिस मेहेराबाद ले चलेगे।

तीसरी बार अली के पिता पुनः आये और उसे वापिस ले गए।

10 दिसंबर तक स्थान परिवर्तन का कार्य पूरा हो गया। टोका में छह माह तक निवास रहा।

नये वर्ष 1929 के प्रारंभ में ही बाबा ने संकेत दिया कि वे कुछ समय के लिए आरम बंद रखेगे और पैदल यात्रा पर निकलेंगे। 12 जनवरी को सभी लड़कों का जो उस समय संख्या में 102 थे, वापिस उनके घरों को भेजने का प्रबंध कर दिया। साथ ही उन छात्रों को भी वापिस भेज दिया जो ईरान से आए थे।

काल पुरूष

''तन्मय हो काली पुतली की भी तली में बैठ
अखिलेश अलख ललाम देख लेती थी
द्वितीया के चाँद सों अमा का आवरण चीर
अद्वितीयता का दुति धाम देख लेती थी।
राई में सुमेरू का विराम जान कर शिशु
रोम-रोम में रमा वह राम देख लेती थी
जाने कौन सा ममीरा मीरा आंखो में लगाये
जो कि नैन मूद के भी घनश्याम देख लेती थी।''

उस युग की प्रभु प्रेम में पगी एक हस्ती थी मीरा। जिसको घनश्याम मिल जाया करते थे नयन बंद करने पर भीं हर काल में ऐसी पावन आत्मायें परमात्मा के प्रेम में यत्र-तत्र विचरण करती रही है। परमात्मा का कहना तो यही रहा है कि मुझे पाने का कोई रास्ता मत बताओ-चलने वाले की जहाँ इच्छा हो, किसी भी दिशा में वह चल दे यदि वह मुझ तक नहीं पहुँच सका तो मैं उस तक पहुँच जाऊँगा। बाबा काल में भी यही हुआ। संसार भर में फैले, प्रभु के प्रेम रस में उन्मत्त आत्मायें जब अपने में ही मस्त हो ठिठक गई, ठहर गई-तो हमने भले ही उन्हें मस्त कहना आरंभ कर दिया हो किन्तु परमात्मा की तो चिंता यही रही कि चला तो था वह मेरी ओर - जान कहाँ भटक गया? कहाँ उलझ गया? क्यों न चलकर स्वयं ही उसकी खोज खबर ली जाये और मिला जाये उससे और फिर चल पड़ते हैं प्रियतम बाबा नगर-नगर, डगर-डगर मस्तों की हस्ती को खोजने उनकी बस्ती में। हमीरपुर हो या महोबा, नौरंगा हो या नौगाँव, गुजरात हो या राजस्थान, हैदराबाद हो या मद्रास, दिल्ली हो या ईरान, अमेरिका हो या चाहे आस्ट्रेलिया-हमारे कृपा निधान स्वयं ढूंढते हुए पहुँचते हैं अपने भक्तों के बीच। अब मजा देखिए- परमात्मा खड़ा है, भक्त बैठा है परमात्मा अपने हाथ से उसे नहला रहा है, साबुन मल रहा है, शरीर पोंछ रहा है किन्तु वह तो डूबा हुआ है अपने प्रियतम के ख्यालों में जरा उस स्वर्गिक आनन्द की

झाँकी की कल्पना तो करें, स्वयं अवतार अपने हाथों से अपने भक्तों के कपड़े बदल रहा है, भोजन करा रहा है किन्तु भक्त है कि अपने प्रियतम को हृदय में बैठाये अपने मन की आँखों से देख रहा है। बाहर का प्रभु बार-बार उसे बुलाता है किन्तु अपने अन्दर के स्वामी को छोड़ना उसे जरा भी गवारा नहीं। प्रभु पुकारते है बार-बार ‘‘आँखे खोलो-मेरी बात को सुनो किन्तु भक्त है कि क्षण भर को भी तैयार नहीं अपने कल्पना के प्रभु से विलग होने को तब करूणा के सागर करूणाकर अपना वह आंतरिक स्वरूप उसके हृदय से समेट लेते हैं - तब ही वह बाहर खड़े प्रभु की ओर अपनी चितवन डालता है- उन्हें पहचान पाता है।

मस्त ईश्वर के प्रेम में डूबे हुए एक अलग ही चेतना की भूमिका में रहते हैं। राम और कृष्ण अथवा ईसा और बुद्ध की कथायें भी भरी पड़ी हैं जब उस युग का अवतार भी डगर-डगर, नगरों व वनों में अपने प्रेमियों का उद्धार करने ठिठकी हुई आध्यात्मिक स्थिति को और भी उच्च स्तर पर ले जाने हेतु अनेकों कष्टों को अनदेखा करता हुआ लम्बी-लम्बी यात्रायें करता है।

ऐसे सन्दर्भ मिलते है कि मेहेरबाबा ने सन् 1939 से 1949 के मध्य इन दस वर्षो में बड़ी लम्बी यात्रायें की और इन यात्राओं में बाबा ने सभी स्तर के मस्तों से सम्पर्क किया। सन् 1941 में लगभग 18800 मील और सन् 1942 में 15000 मील की यात्रा बाबा ने मस्तों से सम्पर्क स्थापित करने हेतु की। वे कभी मरूस्थल तो कभी घने वन कभी पहाड़ की चोटियों तो कभी मैदानों में कभी पैदल या घोड़े पर कभी खच्चर या गधे पर सवारी करते तो कभी तांगा या बैलगाड़ी से अपने प्रेम में डूबी आत्माओं के उत्थान व उन्हें सहारा देने हेतु हर कीमत पर जहाँ भी उनका पता लगता वहाँ जाते। इस प्रकार कुल मिलाकर बाबा ने लगभग 75000 मील की यात्रा केवल मस्तों से सम्पर्क करने हेतु की। कुछ विलक्षण किस्म के मस्तों का संक्षिप्त विवरण ही यहाँ दे पाना सम्भव है। गुन्टूर में बाबा ने नवाब अली नाम के मस्त से सम्पर्क स्थापित किया। नवाबअली अपना सारा शरीर सिर सहित चिथड़ों व कपड़ों में लपेट कर रखा करता था और कोयले की दुकान में सोया करता था, फलस्वरूप पूर्ण रूप से काला ही नजर आया करता था।

कोट्टालंका का मस्त इत्र का बड़ा शौकीन था। उसने बैदुल को पूर्व में ही बता रखा था कि एक दिन बाबा उसके पास आयेगे। बाबा ने उसके लिए इत्र और गद्दा खरीदने के लिए एवं उसकी देखभाल करने वालों को कुछ धनराशि दी।

पूना में एक मस्त अपने बाजू में हमेशा एक बण्डल दबाये घूमता फिरता था, इसलिए लोग उसको बन्डल शाह के नाम से पुकारते थे। बड़ी मुश्किल से बाबा की आज्ञा से एरचजी उस मस्त को पूना में अपने घर ला पाये थे।

बाबा ने लाहोर रावलपिंडी और कश्मीर के मस्तों से भी सम्पर्क किया। चोर कोट के एक मस्त से सम्पर्क कर बाबा लाहोर जाने के लिए रेल्वे स्टेशन की और लौट रहे थे तो बाबा के साथ दो लोग और भी थे। वे इतने थक गए थे कि उनसे चला ही नहीं जा रहा था। सवारी के लिए मात्र वहाँ गधा ही उपलब्ध हो पाया अतः बाबा के दोनों साथी जिसमें एक डॉ.गनी भी थे, गधे पर बैठकर किसी तरह रेलवे स्टेशन पहुँचे।

बाबा ने कंगनपुर में एक मस्त से सम्पर्क किया। बाबा को देखते ही वह हर्ष विभोर हो नाचने लगा और कहने लगा ''आओ यहाँ आओ, मैं तुम्हारे लिये तैयार बैठा हूँ व तुम्हारी राह देख रहा हूँ''। वह बाबा को एक कब्रिस्तान पर ले गया और बाबा ने अकेले में वहाँ पर उससे वार्तालाप किया। उसने बाबा को लकड़ी व लोहा का एक टुकड़ा व एक गन्दा बोरा भेंट किया–जिसे बाबा ने स्वीकार किया। उद्देश्य क्या रहा होगा–प्रभु की लीला प्रभु ही जाने ?

रावलपिंडी में बाबा ने दो ऐसे मस्तों से सम्पर्क किया जो निर्वस्त्र रहा करते थे। उनमें से एक मस्त की आदत यह थी कि उसके सभी क्रिया–कलाप घेरे में हुआ करते थे जैसे कि यदि उसे खाना दिया जाये तो वह बैठकर खाना खाते हुए भी गोलाकार धीरे–धीरे घिसटना रहता था और इस प्रकार एक वृत जैसा बना लेता था। बाबा ने उससे सम्पर्क किया और तत्काल एक निकटवर्ती पहाड़ी पर एकांत में उसके साथ तीन घंटे तक बैठे रहे। दूसरा मस्त नंगा खां पेशावरी नाम से जाना जाता था। वह निरंतर दौड़ता रहता था। लोग जब उसे भोजन देते तो वह दौड़ती हुई अवस्था में ही भोजन स्वीकार करता और दौड़ते हुए ही खाने की चेष्टा करता हुआ निकल जाया करता था। लोगों का कहना था कि वह जन्म से ही मस्त था। रावलपिंडी में बाबा ने

एक महिला मस्त से भी सम्पर्क किया। प्रभु प्रेम में डूबी इस महिला ने बाबा को अपने पास बुलाकर ईटों के ढेर पर बैठाया और बाद में एक सूखी गंदी रोटी का टुकड़ा दिया जिसे बाबा ने बड़े प्रेम से खाया। भला खाते भी क्यों न? आखिर भीलनी के जूठे बेर भी तो प्रभु ने बड़े चाव से खाये थे।

लाहोर में बैदुल की भेंट एक मस्त से हुई। उस मस्त ने बैदुल से कहा कि वह अलीगढ़ जाना चाहता है। (सम्भवतः उसका आशय अल्लाह के घर से था) लेकिन उसका रास्ता बन्द है। वहाँ जाने की अनुमति मांगूगा और यदि अनुमति मिल जाएगी तो मैं वहाँ जाऊँगा। 'किससे मिलना है' बैदुल के यह पूछने पर उसने कहा कि वह 'मौनी' से मिलना चाहता है। इस प्रकार मस्तों ने बाबा के सम्पर्क में आने के पूर्व ही उनकी उपस्थिति का अनुभव कर लिया था।

सन् 1943 के सितंबर माह में बाबा काश्मीर गए। कश्मीर के पास जासगिर में पहाड़ी पर बाबा का सम्पर्क 'नंगा बाबा' नामक एक मस्त से हुआ। वह वर्षो से पहाड़ी की चोटी पर सिंहासन लगाये बैठा था। भोजन में वह मसत रोटी के साथ लकड़ी या पत्थर की लेई बनाकर खाया करता था। बाबा को देखकर उस मस्त ने कहा यह मेरा बड़ा भाई है– यह सारे विश्व का संचालन करता है और उसकी रक्षा करता है। कश्मीर में बाबा का सम्पर्क एक अन्य महिला मस्त से हुआ। यह महिला घास खाया करती थी। एक अन्य मस्त 'गुरुजी' नाम से जाना जाता था– यह मीठा तेल पीता रहता था। उसके सारे कपड़े तेल से सने रहते थे। एक मस्त जिसका नाम सुभान मतू था–यह अपने चेहरे पर कीचड़ और हिना इत्र पोत लिया करता था। बाबा का सानिध्य पाते ही वह हर्षोन्माद हो जमीन पर लोट गया और चिल्लाया 'यह अल्लाह है।'

कश्मीर से लौट्ते हुए आगरा में ताजमहल के समीप बाबा का सम्पर्क एक अन्य महिला मस्त से हुआ जो घुड़साल में रहा करती थी और स्वभाव से बड़ी उग्र थी। उसका चेहरा एक दम चमकता हुआ रहता था। बाबा का सामीप्य पाने पर वह शान्त हुई और बोली 'मैं बहुत प्रसन्न हूँ।' बाद में बाबा ने बताया कि वह एक उच्च स्तर की आत्मा है।

नवम्बर माह में बाबा अजंता गए। वहाँ उनके सान्निध्य में लगभग 100 वर्ष की आयु के एक मस्त आये। उनका नाम मियां साहब था। बाबा का सान्निध्य पा वह मस्त बड़ी जोर से रो पड़ा जोर से रो पड़ा और ऊँचे स्वर में बोला–'ख़ुद वे ख़ुद आजाद वूदी, ख़ुद गिरफ्तार आमदी' अर्थात तुम स्वयं स्वतंत्र थे तुमने स्वयं ही बन्धन स्वीकार किया।

अप्रैल सन् 1946 में बाबा मस्तों से सम्पर्क के ही सिलसिले में हरिद्वार, ऋषीकेश और पानीपत गए। पानीपत में बाबा का 10 मस्तों से सम्पर्क हुआ। वहाँ भी एक मस्त निर्वस्त्र अवस्था में रहा करता था। वह अंधा था और बाबा मौन थे। इस अजीब सी स्थिति की गोपनीयता बनाये रखने के लिए बाबा ने उससे सम्पर्क करने के समय एक परदा डलवा दिया था। मानों प्रभु ने अपनी उपस्थिति के प्रकाश से उस अंधे मस्त के समस्त अस्तित्व को ही प्रकाशित कर दिया हो।

जनवरी 1939 में बनारस में बाबा के सामीप्य में हरिहर बाबा नाम का एक मस्त आया। बाबा ने इसके पास स्वयं न जाकर एक विशेष संदेश के साथ काका और नोरीना को भेजा। उस मस्त ने इनका प्रेम भरा स्वागत किया और तीन बार 'मेहेर' नाम का उच्चारण किया। वह भी बिल्कुल अंधा था किन्तु उसे बनारस के मस्तों का प्रधान माना जाता था। निरंजनपुर के एक बूढ़े मस्त ने बाबा को देखते ही बड़े जोर से कहना आरंभ किया। 'इस पुरूष के मस्तिष्क व चेहरे को देखो, वे ऐसे चमक रहे है मानों वहाँ सूर्य हों। आप लोग नहीं पहचानते कि वह कौन है?'

अगस्त 1946 में ऋषीकेश में बाबा ने एक जल तपस्वी से सम्पर्क किया तो 70 वर्ष की अवस्था में भी उसके बाल काले थे। उसने एरच से उन दिनों बम्बई में हो रहे साम्प्रदायिक दंगों के बारे में कहा था 'यह सब तो होना ही है। यह अवतार के अवतरण का प्रतिफल है। आरंभ में तो लोग उसके अवतार को स्वीकार नहीं करेंगे किन्तु बाद में बहुत से लोग उसे अवतार के रूप में स्वीकार करेंगें।' आजमखां नाम के मस्त ने बाबा को देखते ही जोर से चिल्लाना आरंभ कर दिया और कहने लगा आप अल्लाह है, आपने सृष्टि की रचना की है। हजार वर्ष में एक बार आप सृष्टि की लीला देखने के लिए पृथ्वी पर आते हैं।'

मस्तों के संबंध में एक बार बाबा ने कहा था कि इन असली सूरमाओं (मस्त) को देखकर मुझे जितना आनन्द होता है उतना और किसी चीज से नहीं होता। वे मेरे उच्चतर भूमिकाओं पर कार्य करने के लिए बहुत उपयोगी माध्यम हैं।

बाबा ने मस्तों के प्रमुख रूप से छह प्रकार बताये हैं। पहले प्रकार का मस्त जलाली कहा जाता है अर्थात वह उग्र स्वभाव का होता है। दूसरा प्रकार जमाली मस्त का होता है– अर्थात् वह नम्र स्वभाव का होता है। तीसरे प्रकार के मस्त को ‘महबूबी’ कहा जाता है – वह जनानी पोषाक की वस्तुएँ धारण्रा करता है। चौथे प्रकार के मस्त इत्तफाकी कहलाते हैं – अर्थात् ये अचानक ही ईश्वर प्रेम के नशे में चूर हो जाते हैं। पाँचवे किस्म के मस्त मादर–जाद होते हैं। यानि कि वे जन्म से ही मस्ती की हस्ती लिए रहते हैं। बाबा ने आगे बताया कि छंठवे किस्म के मस्त एक निश्चित संख्या में प्रत्येक काल चक्र में होते हैं।

‘तेरी मस्ती की हस्ती में बाबा
थे मस्त बने विकराल पुरुष
देकर हल्का सा अवलम्बन तूने
उन्हें बनाया काल पुरुष.....’

मैं ऊचों में सबसे ऊंचा हूँ, और उस ऊंचाई से उतर कर तुम्हारी भौतिक सतह पर आया हूँ। यदि इस सतह पर तुम मुझसे पूरे दिल से प्रेम करोगे तो तुम मेरी सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त कर सकोगे, क्योंकि मैं तुम सबमें विद्यमान हूँ।

– मेहेरबाबा

नई जिंदगी

नई जिंदगी मेहेर बाबा का अपने चुने हुए 16 पुरुष और 4 महिलाओं के साथ आध्यात्मिक जीवन का वह गूढ़ प्रयोग था जिसे किसी भी सच्चे साधक को स्वीकार करना ही होता है। तभी वह जीवन के उन अनछुए बिन्दुओं का संस्पर्श कर पाता है जिनका स्पर्श एक साधक के जीवन में आवश्यक होता है। इस काल का मजा ये रहा कि स्वयं परमात्मा अपने शिष्यों की मंडली में शामिल होता है अपनी समस्त ईश्वरीय सत्ता को तिलांजली देकर–ठीक एक निरीह की भांति। बाबा ने इस नई जिंदगी की समयावधि को पूर्ण असहायता, पूर्ण आशा रहितता एवं पूर्ण उद्देश्य 'रहितता का कारण' बताया है। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा भी था कि इस अवधि में भौतिक उपलब्धि तो दूर आध्यात्मिक उन्नति की भी आशा नहीं की जानी चाहिए। प्रत्येक को हर क्षेत्र में अपनी स्वयं की लड़ाई लड़नी होगी–बाबा की ओर से किसी भी प्रकार की सहायता की आशा नहीं की जानी चाहिए। अर्थात् 'अप्प दीपो भव' अपने स्वयं के दीपक खुद आप बनो, मानो बुद्ध पुनः एक बार फिर अपने शिष्यों को गहन निराशा के क्षणों से उबरने का पाठ पढ़ाने आ गये हैं।

बाबा ने अपने मंडलीजनो को स्पष्ट रूप से बताया कि इस काल में उन्हें किन्चित भी आध्यात्मिक या भौतिक उन्नति की आशा नहीं करनी चाहिए। इसके विपरीत उन्हें हर प्रकार की निराशा और प्रतिकूलता के लिये तैयार रहना चाहिए। साधना के इस काल की बाबा ने कुछ शर्ते भी रखी थीं जैसे– किसी की आलोचना न करना, झूठ न बोलना, किसी भी कारण से उद्विग्न न होना, महिलाओं का स्पर्श न करना और बाबा की अनुमति के बिना कहीं भी न जाना शामिल था। बाबा ने कहा सभी को इन आदेशों का पूर्ण रूप से पालन करना होगा, यहां तक कि चिन्ता या क्रोध की झलक भी चेहरे पर उभरती न नजर आये। इस आयोजना के साथ – 16 अक्टूबर 1949 को प्रातःकाल बाबा अपने प्रेमियों के साथ मेहराजाद से सूपा को प्रस्थान किये। सूपा से वे बेलगांव गये जहां वे 20 अक्टूबर से 12 नवम्बर तक रहे। इस दौरान बाबा ने छोटी से छोटी गल्तियों की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। यह सचमुच आंतरिक सन्यास में प्रवेश कराने की कला थी। यह काल दीक्षाकाल भी

था और परीक्षा काल भी। यहां माया के विरूद्ध लड़ाई लड़ी जानी थी। सभी आशाओं और इच्छाओं को त्यागकर हृदय से यह स्वीकार कराने की रीतियां सिखाई गई कि प्रत्येक क्षण का प्रत्येक स्पन्दन परमात्मा की मर्जी से ही होता हैं।

अब बाबा अपने साथियों के साथ बनारस पहुँचे जहां वे 15 से 30 नवम्बर तक रहे। बनारस से वे सारनाथ गए और वहां पर 01 से 11 दिसम्बर तक रहे। 12 दिसम्बर से फकीरी जीवन का आरम्भ हुआ। इस दौरान सभी मण्डली जनों को पैदल चलना, भिक्षा मांगना, खेतों में सोना जानवरों की देखभाल करना आदि कार्य करने होते थे। फकीरी जीवन में कफनी पहिनना और भिक्षा मांगकर उदर पोषण करना होता था। इस प्रकार असहायता और आशा रहितता का पाठ प्रियतम बाबा ने अपने शिष्यों में अपने विशेष ढंग से उदभाषित किया। 22 दिसम्बर को बाबा अपने काफिले के साथ मुरादाबाद पहुँचे और वहां से नजीबाबाद को प्रस्थान किया। इस दौरान पैदल चलना, ठंडी रात्रियों में मैदान में शयन करना होता था– इस प्रकार कष्टों से अपना नाता जोड़ते हुए 12 जनवरी को सभी लोग प्रातः ट्रेन से देहरादून पहुँचे।

देहरादून में बाबा की आज्ञा से केकीदेसाई ने 5 एकड़ जमीन खरीद ली थी। यह जमीन मांजरी माफी में थी, जिसे अब मेहेर माफी के नाम से जाना जाता है। बाबा अपने साथियों के साथ मेहर माफी पहुंचे और अपने साथियों से कहा कि आप सबने यह सिद्ध कर दिया है कि नई जिन्दगी में रहने के लिए आप सब कितने योग्य हो– अब आगे की योजनाएं पुनः परिश्रम से भरी पड़ी है। यें हैं भिक्षायापन, पिन्डारी जीवन और लंगोटी अवस्था किन्तु बाबा ने पुनः सचेत किया कि यहां भी स्मरण रखा जाये कि इन स्थितियों से भी कोई आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की कामना न की जाये।

3 मार्च 1950 को बाबा मोतीचूर गये। यहां पर उनके निवास हेतु घास की एक झोपड़ी निर्मित की गई थी। इस झोपड़ी में बाबा ने अपना एकान्तवास किया और मंडलीजन भिक्षाटन करते लंगोटी पहनते व पिण्डारियों जैसा जीवन जीते रहे। 4 अप्रैल 1950 तक हरिद्वार में कुम्भ मेले के साथ बाबा ने हरिद्वार ऋषीकेश नरवल, सप्तसरोवर, मायापुरी, बेलवाला आदि स्थलों का भ्रमण किया और लगभग 10 हजार

साधु सन्तों से सम्पर्क किया और फिर वे मेहर माफी लौट आए। यहां बाबा 10 माह तक रहे व 23 जून को सतारा होते हुए महावलेश्वर पहुंचे।

अब बाबा का 100 दिनों का एकान्तवास 13 अक्टूबर 51 से प्रारंभ हुआ। इस दौरान अहमद नगर से अलीशाह मस्त को महावलेश्वर बुलाया गया। अब नई जिंदगी का आमना सामना माया से था। लड़ाई मौत से लड़ी जाती थी। बाबा ने इस अवधि का नाम 'मनोनाश' दिया। जून 1951 में हैद्राबाद में विशेष रूप से चलाए गये 70 लोगों के मध्य बाबा ने स्पष्ट किया कि अगला कदम अब वे जो बढ़ा रहे हैं वह सम्पूर्ण 'सर्वनाश' का है।

बाबा का आशय था कि मनोनाश की अवधि में शारिरिक क्षति भी सम्भव है अतः इस 'मरण यज्ञ' में जो भी उनके साथ रहना चाहते है उसकी जिम्मेदारी उनकी नहीं होगी। मानो बाबा इस बहाने दुनिया के समख एक उदाहरण रखना चाहते हैं कि अपने अहं पर कैसे विजय प्राप्त की जाये। वास्तव में मानव का वह अहं ही तो है जो उसे हर काल में हर जन्म में एक अदृश्य डोर से मजबूती से बांधे रहता है। और जब तक अहं नष्ट नहीं होता, ईश्वर प्राप्ति का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

कहते है एक बड़ा ही कुशल कारीगर था। पत्थर की मूर्तियां वह शिल्पी इतनी चतुराई से बनाया करता था कि वे पूरी सजीव सी प्रतीत होने लगती थी। उसका बड़ा नाम था, चारों ओर उसकी प्रसिद्धि फैल गई थी। वह भी लोगों के सामने सिर ऊंचा उठा कर चला करता था। मूर्तियां गढ़ते-गढ़ते वह बूढ़ा हो चला था। काल के नियमानुसार अब कभी भी उसकी मृत्यु प्रतीक्षित थी-शिल्पी बड़ा परेशान, भला कौन मरना पसन्द करता हैं? शिल्पी भी मरन नहीं चाहता था, अतः काफी सोच विचार के बाद उसने एक तरीका निकाल ही लिया। उसने स्वयं की प्रतिमूर्ति की छह पत्थर की मूर्तियां गढ़ डाली इतनी सजीव कि लगता था मानो हर मूर्ति में वह जीवित खड़ा हो। निश्चित समय पर यमराज उसके प्राणों को लेने आए। इसका आभास होने पर मूर्तिकार उन्हीं मूर्तियों के मध्य चुपचाप, हिलना डुलना बंद कर खड़ा हो गया। यमराज तो चौंक पड़े- उनके समक्ष समस्या यह थी कि किसके प्राणों को ले जायं? यहां तो सात लोग एक से खड़े है। आखिर परेशान हो लौट गए और सारी वस्तुस्थिति धर्मराज को बताई। धर्मराज ने यमराज के कान में कुछ धीरे से कहा और

वापिस भेजा इस आदेश के साथ कि मेरी बताई युक्ति का प्रयोग करना–असली मूर्तिकार की पहचान तुम्हें हो जायेगी। दूसरी बार यमराज जब उस मूर्तिकार के पास पहुंचते है कि पुनः वह शिल्पी अपनी बनाई हुई मूर्तियों के मध्य जाकर खड़ा हो गया। यमराज ने सातों मूर्तियों का एक चक्कर लगाया और फिर खड़े होकर कहा "और तो सब ठीक है किन्तु एक मूर्ति में एक कमी रह गई है।" जैसे ही शिल्पी ने यह सुना उसके अहं पर चोट पड़ी – तत्क्षण ही वह बोल पड़ा "कौन सी कमी रह गई?" यमराज ने मुस्कुराते हुए कहा – "बस यही कमी कि तुम अपने अहं को नहीं भूल पाए और वह पकड़ लिया गया। हम सांसारिक जीवों को हाल उस शिल्पी से भिन्न नहीं है और अवतार यह बात जानता था अतः उसके हृदय की तड़फ यही रही कि जो भी व्यक्ति उनके साथ रहना चाहते हैं। उन्हें रगड़–रगड़ कर इतना कुन्दन बना दिया जाए कि हर स्थिति में हर कसौटी पर परखे जाने पर वे स्वर्ण ही सिद्ध हों।"

तो मेहराजाद में मनोनाश पहाड़ी पर एकान्तवाश के दौरान जब बाबा थे, तब बैदुल, एरच, पेण्डु, गुस्ताद जी आदि को खुले आसमान की छत के नीचे रात दिन विभिन्न परिस्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ा और बाबा ने अपना कार्य अपनी इच्छानुसार पूरा किया। 28 दिसम्बर 1952 को बाबा ने अपने सभी 124 साथियों का स्मरण किया जो विविध कार्यो में उनके साथ रहे और उनके मंगल हेतु ईश्वर से प्रार्थना की।

मनोनाश की अवधि की समाप्ति के साथ अवतार की नरलीला (नई जिंदगी) का खेल भी समाप्त हुआ और अब पुनः वह "ऊँचे से ऊँचे सिंहासन पर असीन हुए अर्थात् 12 फरवरी 1952 से मनोनाश की समाप्ति पर बाबा ने अपनी पुरानी जिन्दगी के मेहेरबाबा के रूप में फिर प्रवेश किया। बाबा ने इस दिन को अपना सच्चा जन्म दिन कहा है। इस अवसर पर बाबा ने अपने प्रेमियों को तार द्वारा यह सूचित करवाया "आज मेरे पहले सच्चे जन्म दिन पर तुम सबको ईश्वर का आशीर्वाद और मेरा प्यार।"

अब आगे की अवधि को बाबा ने "आजाद जिन्दगी" का नाम दिया। इस प्रथम चरण को उन्होंने "जटिल आजादी जिन्दगी" सम्बोधित किया। इसी अवधि के

दौरान 24 मई 1952 को अमेरिका के ओकाहोमा में उनकी पहली कार दुर्घटना हुई। 2 दिसम्बर 1956 को सतारा महाराष्ट्र में दूसरी कार दुर्घटना हुई। इन दोनों दुर्घटनाओं में बाबा के शरीर की हड्डियां अत्यधिक क्षतिग्रस्त हुई। दुर्घटनाओं की भयावहता इतनी थी कि सामान्य व्यक्ति को तो पूर्ण रूप से पंगु हो जाना चाहिए था किन्तु प्रियतम ने नरलीला की इस ओट में इसी अवधि के दौरान ही सर्वाधिक यात्रायें की। बड़े-बड़े सामूहिक दर्शन, लम्बे समय तक चलने वाले सहवास कार्यक्रम इन्हीं दिनों आयोजित हुए और अपने अवतार होने की सार्वजनिक घोषणा भी इन्हीं दिनों की गई। इस जीवन की दूसरी अवधि पूरी आजादी के नाम से पुकारी गई। इस दौरान माया के बन्धनों से छुटकारा पाने की कला लोगों को सिखाई गई और इस आजाद जिन्दगी के तृतीय चरण को 'आगभरी आजाद जिन्दगी' से सम्बोधित किया गया। इस दौरान बन्धन और मुक्ति दोनों को ही परमात्मा के प्रेम में विलीन हो जाना था।

अब चूंकि अवतार का अपना कार्य पूर्ण हो चुका था अतः शेष समय उसके प्रेम में प्यासे उन लोगों के लिए सहवास और दर्शन के लिए सुरक्षित था जो न जाने कब से अपने प्राणों में उम्मीद की वह आशा सजोये बैठे थे - कि एक दिन वह भी आयेगा जब वे अपने प्रभु के पद पंकजों को अपने ही हाथों से परखाने का सुअवसर पायेंगे।

बाबा समय-समय पर एकान्तवास करते रहे। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि वे स्वयं को दूसरों से छिपाते रहे हों। ईश्वरानुभूति की अवस्था में सभी झूठे आवरण जो ओढ़े हुए होते हैं वे गिर जाते हैं और केवल एकमेव सत्य की ही अनुभूति होती है। एकान्तवास में आत्मा के साथ यही घटित होता है। अतः बाबा ने अपने तरीके से लोगों को यह स्पष्ट किया कि जिस किसी ने भी स्वयं की अनुभूति की स्थिति प्राप्त की है वह मूलतः एकान्तवास की ही स्थिति में हैं। समय-समय पर बाबा जिस एकान्तवास में रहे उसका संसार में मानवता के लिए बड़े गहरे में सम्बन्ध है। एक बार ऐसी ही एकान्तिक स्थिति का उद्देश्य बाबा ने केवल तभी लोगों को स्पष्ट होने दिया था जब वे इटली में एसीसी नामक स्थान पर संत फ्रांसीस की गुफा में कुछ समय रहे थे। उन्होंने बताया कि एक ऐसी सभा का आयोजन इस गुफा में किया

गया था जहां चेतना के छठे एवं सातवें स्वर की महान आत्मायें उनसे भेंट करने आई थी और उस सभा में संसार के अगले दो हजार वर्षो के मानचित्र की रूप रेखा तैयार की गई है। बहुधा एकान्तवास के समय बाबा उपवास किया करते थे या कभी–कभी कुछ पेय दूध, काफी या चाय लेते थे। ऐसे एकान्तिक काल में बाबा का जो आंतरिक कार्य हुआ करता था, सत्य तो यह है उसे केवल वे ही जानते थे।

प्रियतम बाबा की नई जिन्दगी को यदि थोड़ा और गहराई से देखा जाये तो लगता है स्वयं परमात्मा ने ईशावास्योपनिषद में अपनी स्तुति में गाई गई प्रार्थना को स्वयं उपस्थित होकर उसकी टीका प्रस्तुत कर दी है।

उपनिषद में ऋषि गाता हैः–

ओंम पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवाव शिष्यते।।

अर्थात् ओंम वह पूर्ण है और वह भी पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उत्पत्ति होती है, तथा पूर्ण का पूर्णत्व लेकर पूर्ण ही बचा रहता है। यानि कि कहा जा सकता है कि प्रियतम अवतार मेहेरबाबा पूर्ण है और उनकी नई जिन्दगी भी पूर्ण है क्योंकि पुरानी जिन्दगी से ही नई जिन्दगी आरम्भ की गई तथा नई जिन्दगी का दर्शन विश्व के समक्ष रख पुनः पुरानी जिन्दगी की पूर्ण अवस्था में वापिस आ गए।

साधारण रूप से तो ऋषि की प्रार्थना का अर्थ यही है कि पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है किन्तु पीछे सदा पूर्ण शेष रह जाता है और अन्त में पूर्ण में पूर्ण लीन हो जाता है किन्तु पूर्ण ही रहता है। यानि कि कुछ ज्यादा नहीं हो जाता। निश्चित ही सामान्य गणित के सिद्धान्त के विपरीत है यह बात क्योंकि सामान्य गणित तो यही स्पष्ट करता है कि निकलने वाली वस्तु ही छोटी क्यों न हो अपने मूल स्त्रोत से उतनी मात्रा में कम तो हो ही जायेगी। किन्तु जीवन के कुछ अन्य अनमोल नियम भी हैं जहां सामान्य गणित के हिसाब से एक और एक दो न होकर तीन भी बन जाया करते हैं जैसे कि कोई व्यक्ति वीणा बजाता है, तो वीणा से निकलने वाली स्वर लहरियां केवल ध्वनि के ही आघात नहीं है बल्कि उस ध्वनि की चोट से हृदय में जिस रस–भाव का उद्दीपन हो जाया करता है वह महत्वपूर्ण है – या कि जैसे कोई

गीतकार किसी गीत की रचना करता है या कि चित्रकार किसी चित्र का सृजन करता है तो, गीत की कड़ियों में मात्र शब्द ही नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण है शब्द को ध्वनि से प्रतिफलित जो रस–भाव उत्पन्न होता है या कि चित्रकार के चित्र को देखने पर जिस अनुभूति का संचार हो जाया करता हैं– महत्वपूर्ण वह है तो यह ऊँचे हिसाब के व अनमोल नियम है जो यह स्पष्ट करते हैं कि प्रियतम बाबा कितनी ही आशा रहितता या कि उद्देश्य रहितता या कि असहायता की स्थिति का बाना स्वीकार कर इस स्थिति में उतरे और फिर नई जिन्दगी से पुरानी जिन्दगी में प्रवेश किए – पूर्ण में से पूर्ण घटाने पर पहले और बाद में भी इन नियमों के आधार पर पूर्ण ही तो शेष रहेगा बिल्कुल उतना ही जितना कि पूर्व में था।

प्रभु के इस प्रयोग में एक और बात की और भी बड़े अनूठे ढंग से इशारा किया गया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि हृदय के धरातल को संस्पर्श करते हुए और वह यह कि पूर्ण में से पूर्ण निकल जाये और पूर्ण ही शेष बचा रहे – इसे प्रेम के धरातल पर समझने की आवश्यकता है, इसे इसलिए भी कि हमारे बाबा स्वयं प्रेमावतार हैं क्योंकि यह उस आयाम की ओर संकेत है जहां देने से कुछ घटना नहीं और प्रेम एक ऐसा ही आयाम है जो कभी नापा नहीं जा सकता वह अमाप है। यदि सच्चे प्रेम का हमें सही पता हो तो जितना चाहे लुटा दो दुनिया भर में वह कभी खत्म नहीं होता बल्कि वह बांटने वाला और भी भरपूर रूप से सरावोर हो उठेगा प्रेम के महासागर में। तो उपनिषद के इस मन्त्र को हमारे प्रियतम ने विविध क्रिया कलापों द्वारा यह जीकर स्पष्ट किया कि पूर्ण से न केवल एक पूर्ण बल्कि अनन्त पूर्ण भी निकाल लिए जाऐं तो भी अन्त में पूर्ण ही शेष रह जाता है। पूर्ण शेष रह जाने का अर्थ है पूरा का पूरा बचा रहना और कुछ और गइराई में उतरें तो इसका अर्थ ये भी होता है कि जगती का एक – एक व्यक्ति पूरा परमात्मा है और हमारे मेहेरबाबा तरह–तरह की स्थितियों में जीवन जीकर हमें यही तो समझाना चाहते है कि परमात्मा की पूर्णता अनन्त पूर्णता है।

इस संदर्भ में एक बड़ी अनूठी कथा स्मरण आती है कि एक राजा ने चाहा कि राज्य के श्रेष्ठ चित्रकार का चुनाव किया जाये। इस हेतु उसने एक प्रतियोगिता आयोजित की। प्रतियोगिता के परिणाम स्वरूप दो चित्रकार श्रेष्ठ साबित हुए किन्तु

चाहिए तो था सर्वश्रेष्ठ। दोनों चित्रकारों को राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। राजा न उन दोनों को पुनः अपने-अपने श्रेष्ठ चित्रों को बनाने को कहा। एक चित्रकार ने आवश्यक सामग्री लेकर एक बड़े हाल की भित्ति पर चित्र बनाने की अनुमति मांगी और छह माह का समय। दूसरे चित्रकार ने भी उसी हाल की सामने वाली भित्ति मांगी किन्तु शर्त यह रखी कि जब तक चित्र बन कर तैयार न हो जाये कोई उसे देखेगा नहीं। इस हेतु उसने एक बड़ा सा पर्दा डाल रखा। राजा ने यह शर्त भी स्वीकार कर ली। दोनों चित्रकार प्रातः से सायं तक प्रतिदिन अपना कार्य करते और हारे थके शाम को वापिस आते। पहले चित्रकार को तो सभी कार्य करते देखते किन्तु दूसरा क्या करता किसी को पता भी नहीं। पर्दे के भीतर जाने दिन भर वह क्या करता और शाम को हारा थका बाहर निकलता।

छह माह बीतते-बीतते पहले चित्रकार का चित्र तैयार हो गया। उसने राजा को सूचित किया। राजा अपने सभी सभासदों के साथ आये - चित्र का अवलोकन किया। चित्र वास्तव में अत्यधिक सुन्दर बन पड़ा था। मुक्त कंठ से सभी ने उसे सराहा। अब राजा ने दूसरे चित्रकार से पूछा - ''तुम्हारे चित्र का क्या हुआ?'' दूसरे चित्रकार ने भी कहा ''महाराज चित्र बन गया है'' और साथ ही पड़े हुए पर्दे को अलग कर दिया। सभी की निगाहें उठी और सभी अबाक् रह गए। देखते क्या हैं कि सामने की भित्ति पर भी ठीक पहले वाला चित्र ही उभर रहा है किन्तु पहले वाले से कहीं ज्यादा भव्य और अद्भुत। असल में दूसरे चित्रकार ने सामने वाली भित्ति को छह माह तक रगड़-रगड़ कर इतना दर्पणमय एवं सुडोल बना डाला था कि पहले चित्र की छाया उसमें उभर रही थी चूंकि वह छाया थी इसलिए उसमें एक आयाम और जुड़ गया था चित्र में गहराई भी उभर रही थी। निःसंदेह दूसरा चित्रकार राज्य का श्रेष्ठ चित्रकार घोषित किया गया होगा। बंधुओ हमारे बाबा ने भी तो अपनी नई जिन्दगी के साथियों के साथ और वे जो उनसे जुड़े उनके साथ-यही तो किया। विभिन्न परिस्थितियों में चाहे वह नई जिन्दगी हो, मस्तों से सम्पर्क हो, या कोई अन्य समय उन्हें इतना रगड़ा कि उनका जीवन ही एक दर्पण बन गया जिसमें स्वयं हुजूर अपने तीसरे आयाम के साथ प्रगट होते रहे - और आज भी हो रहे हैं।

बंधुओं प्रियतम बाबा का जीवन मात्र कथा ही नहीं, ज्ञान या कुछ सिद्धांतों की मात्र घोषणा ही नहीं किन्तु कुछ अनुभूतियां हैं। इनका ज्ञान, इनका उद्‌घाटन मात्र तभी सम्भव है जब हम प्रियतम बाबा को अपने अंदर जिऐं। अपने शरीर में प्रियतम को प्रवेश करने दें, उन्हें अपनी श्वासों में समा जाने दे तभी प्रियतम के साम्राज्य के द्वार हमारे लिए खुलना आरम्भ होगें। धन्य हैं वे लोग जो बाबा के साथ हिम्मत कर नई जिन्दगी में साथ रहे और अनजाने में ही वह सब पा गए जो जीवन में पाने के लायक होता है।

अपने आपको कम और दूसरों के लिए अधिक जीवित रहो। प्रेम का अर्थ होता है खुद के लिए क्लेश और दूसरों के लिए आनंद। अहंकार को क्षीण करने वाला एकमात्र अनुभव प्रेम है। दैवी प्रेम के द्वारा ही अहंकार का नाश होता है।

– मेहेरबाबा

प्यासे नयन

पीके सनेह सुधारस आपका, भक्ति से झूम लिया करता हूँ।
मैं अपने दुखी प्राण प्रदेश में, यों मचा धूम लिया करता हूँ।
घूमें जहाँ पर थे कभी आप, वहाँ वहाँ घूम लिया करता हूँ।
आपके श्री चरणों की छुई हुई, भूमि को चूम लिया करता हूँ।।

अब बाबा की कृपा हुई अपने उन प्रेमियों को सानिध्य सुख देने की जो किसी काल में उनसे जुड़े रहे होंगे और उनकी कृपा पाते रहे होंगे। उन प्रेमियों के हृदयो में प्रेम की घनीभूत पीड़ा जब होने लगी तो यह कैसे सम्भव था कि परमात्मा उनकी अनदेखी और अनसुनी कर पाता और विशेष कर तब जब यह वर्तमान अवतार ही प्रेमावतार हो? इसीलिए प्रियतम बाब ने अब निश्चय किया कि भारत के भिन्न-भिन्न कोनों में अवस्थित वे आत्मायें जो न जाने कब से उनके श्री चरणों का स्पर्श पाने उनका स्नेह पाने लालायित हैं, उन्हें उनके ही स्तर पर जाकर अपनी कृपा से अभिसिंचित करें और यहां भारत में यह क्रम आरंभ हुआ नवंबर 1952 से।

सर्वप्रथम मेहेरबाबा 18 नवम्बर 1952 को अपने मण्डली जनों के साथ हमीरपुर पहुंचे। संदर्भ ऐसे मिलते हैं कि हमीरपुर क्षेत्र से लगे हुए चित्रकुट क्षेत्र में भगवान राम अपनी सहचरी सीता के साथ वनवास की अवधि में कुछ समय रहे थे। इतना ही नहीं उस काल के अनेकों ऋषि मुनियों से प्रभु का इस क्षेत्र में सम्पर्क भी हुआ था। शायद हमारे प्रियतम को भी आनन्द आया होगा अपनी बीती स्मृति को पुनः स्मरण करते हुए और सम्भवतः यही कारण रहा कि बाबा ने भारत के बीहड़ पथों में इतनी कष्टकारी यात्रायें की। चाहे वे अपने चहेतों से जो मस्त के स्वरूप में थे उनसे मिले हों चाहे एक आम आदमी से - साधारण सी जिन्दगी जीने वाले व्यक्ति से। प्रियतम के हृदय में भी सम्भवतः प्रेम की लौ आनी प्रबल प्रखरता ले उद्वेलित हो उठी हो-और सिद्धान्त भी तो यही है-पहले दीपक ही तो स्वयं जलता है-तभी पतंगे उसके इर्द गिर्द मंडराते हैं।

हमीरपुर के लोगों ने मेहेर बाबा को श्रीराम के रूप में देखा। उनके भव्य दर्शनों को लोग इतने उतावले थे कि जगह-जगह मार्ग अवरूद्ध हो गया था। लोगों ने भी बाबा के स्वागत सत्कार में कोई कसर बाकी नहीं रखी थी। सारा मार्ग और लोगों के घरों के आंगन सैकड़ों रेशमी व सूती साड़ियों से सजे हुए थे। जमीन पर भी ऐसा प्रबंध किया गया था कि बाबा के श्री चरणों में एक कंकर भी न गड़ सके। बालक, वृद्ध, युवा स्त्री, पुरूष सभी बाबा के स्वागत में करबद्ध हो आँखों में प्रेम के आंसू भर उनके स्वागत हेतु प्रतीक्षा रत थे और जैसे ही अपनी चेतन सत्ता प्रियतम बाबा पर उनकी निगाहें पड़ी गदगद हृदय से प्रेमाश्रु बरबस ही छलक पड़े थे। सभी लोग भावातिरेक अवस्था में चरण छूते जा रहे थे। श्री पुकारजी, केशव नारायण निगम, आदि वे लोग थे जिन्हें इस क्षेत्र में प्रभु के पदार्पण करने पर स्वागत हेतु प्रथम अवसर प्राप्त हुआ था।

आज हमीरपुर में जो स्थल मेहेरपुरी के नाम से जाना जाता है किसी समय वह एक खेत था। जब बाबा दूसरी बार उस स्थल से जीप द्वारा जा रहे थे तो इशारे से उस स्थल विशेष की ओर बाबा ने पुकार जी को इंगित कर कुछ संकेत किए किन्तु पुकार जी उन संकेतों को न समझ सके। किन्तु बाद में वही स्थल आज की मेहेरपुरी के रूप में गौरव पाने का अधिकारी बना।

20 नवम्बर 1952 को मेहेर बाबा ग्राम इंगोहटा पहुंचे। वहाँ पर लगभग 5000 लोगों ने बाबा के हाथों प्रसाद पाया और अपने को धन्य किया। अनेक लोगों को यहाँ बाबा का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

सम्भवतः रामावतार काल के 14 वर्ष वनवास की अवधि को सार्थक बनाने या फिर जो भी कारण रहा हो यह बाबा ही जाने मोदहा ग्राम से महोबा जाने के पूर्व बाबा ने पुकारजी से कहा कि वे 14-14 वर्ष के चौदह बालकों को इकत्रित करें। बाबा के इस विचित्र आदेश की पूर्ति हेतु चारों ओर गहन छानबीन हुई-किन्तु 14 वर्ष की आयु के केवल 13 बालक ही मिल सके। सभी लोग बड़े निराश हुए। अचानक एक मजेदार घटना घटी। जब बाबा अपनी कार से जा रहे थे तो रास्ते में एक लड़के ने उनकी कार को रोका और पूछा ''क्या मेहेरबाबा आ रहे हैं?'' उस लड़के की यह बात सुनकर बाबा मुस्कराये और उस लड़के की उम्र पूछी - लड़के ने कहा 14 वर्ष।

उसे शामिल कर लिया गया और इस प्रकार पूरे 14 लड़के हो गए। बाबा ने उन्हें अपना प्रेम देकर उनका जीवन धन्य किया।

प्रियतम बाबा की कार्यशैली चाहे वह बाह्य पटल पर हो अथव आन्तरिक स्तर पर–बड़ी विलक्षण सी रही है जो आम आदमी की समझ के बाहर है सच ही तो है असीम को समीम के चश्में से कैसे बाँचा जा सकता हैं?

महेवा ग्राम के समीप ही एक छोटे से टीले पर जो छोटी–छोटी झाड़ियों से घिरा था तथा आमतौर पर उस ओर लोगों का आना जाना नहीं था उस स्थान पर बाबा के लिए एक झोपड़ी बनाई गई– जो आज भी यथावत है– यही स्थान आजकल मेहेरेस्ताना के नाम से जाना जाता है। बाबा के वहाँ के पूर्व लोगों ने महसूस किया कि उस स्थल से एक अलौकिक सुगंध आ रही है और धीमे स्वर में मधुर संगीत लहरी प्रवाहित हो रही है सम्भवतः उस क्षेत्र की दिव्य आत्माओं ने अपने प्रियतम के स्वागत में किसी उत्सव का आयोजन किया हो कौन जाने? यहाँ मेहेर बाबा ने वर्णाक्षर पट्‌टीपर ''अवतार मेहेर बाबा की जय'' की घोषणा कर धरती पर मानो अपने दिव्य साम्राज्य के शुभारंभ का उद्‌घोष किया। इस प्रकार मेहेर बाबा ने स्वयं के अवतार होने की प्रथम घोषणा इसी स्थल पर की थी श्री केशव नारायण निगम ने बाबा की शान में स्वरचित प्रथमवार मेहेरचालीसा का गायन भी बाबा की उपस्थिति में यहीं किया था। श्री केशव नारायण निगम के छोटे भाई मुकुन्द निगम कुष्ठ रोग से पीड़ित थे। डाक्टरों ने उनके जीवन की भी आशा छोड़ दी थी। बाबा को जब यह बताया गया तो उन्होंने कहा कि जब वे महेवा आयें तो एक दिन पूर्व वे उपवास रखें और उनसे मिले। बाबा जब महेबा पहुँचे तो उन्होंने मुकुन्द को एक सेव फल प्रसाद में देते कहा कि 15 दिन में तुम ठीक हो जाओंगे। मुकुन्द बाबा का रोज स्मरण करते रहे– किन्तु चौदहवे दिन की शाम तक भी उनके रोग में जरा भी परिवर्तन नहीं हुआ, किन्तु पन्द्रहवें दिन के प्रातः जिसने भी देखा वही विस्मय से भर उठा क्योंकि उस दिन जब मुकुन्द सोकर उठे तो उनकी शरीर पर कुष्ठ रोग का कोई भी चिन्ह नहीं था। सच में जब परमात्मा देता है तो याचक की झोली ही छोटी पड़ जाती है।

मेहेरेस्ताना से बाबा राठ– नौरंगा होते हुए जराखर पहुँचे। जराखर में बाबा का भव्य स्वागत हुआ यहां के श्रीपति सहाय रावत (श्री भाई) बाबा के स्वागत हेतु रात

दिन व्यस्त रहे। श्री भाई स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और अंग्रेज सरकार ने उन्हें पकड़ने की बड़े जोर शोर से तैयारी की थी। किसी भांति बचते हुए ये मेहराबाद पहुँचे और बाबा से मिलने को आतुर हुए। उस समय बाबा एकान्तवास में थे। जब बाबा को उनका संदेश दिया गया तो बाबा ने आदेश दिया कि उनका पूरा-पूरा ख्याल, रखा जाये, वे मेरे प्रिय हैं। सभी लोग आश्चर्य चकित इस बात से हो गए कि ठीक एक दिन पूर्व बाबा ने राजस्थान की किसी रियासत से आये हुए एक राजा से मिलने को इंकार कर दिया था। यह घटना एक संकेत देती है कि प्रियतम अपने अनुयायी व्यक्ति का कितना ख्याल रखते हैं। दूसरे दिन जब श्री भाई बाबा से मिले तो उन्होंने अपनी सारी व्यथा कथा बाबा को सुनाई। बाबा ने पूछा- ''क्या चाहते हो ?'' श्री भाई ने निवेदन किया ''आध्यात्मिक उत्थान'' प्रियतम बाबा ने तथास्तु का संकेत किया और आदेश दिया कि सर्वप्रथम तुम स्वयं को अंग्रेज सरकार के हवाले कर दो- आगे मेरे ऊपर छोड़ दो''। श्री भाई ने बाबा का आदेश मान स्वयं को राजनीति से अलग होने की घोषणा करते हुए अपने आप को हमीरपुर में बन्दी बना लिया। कालान्तर में वे जेल भेजे गए। वहाँ से मुक्त होने पर उन्होंने श्रीपुकारजी एवं निगमजी को प्रियतम बाबा के बारे में बताया और निरंतर बाबा कार्य में व्यस्त रहे। इस प्रकार श्री भाई ही वह पहले भाग्यशाली व्यक्ति रहे जो इस क्षेत्र से सर्वप्रथम बाबा की कृपा पाए थे।

ग्राम अमरपुरा में एक गरीब परिवार का छोटा सा घर। पति पत्नि को जब यह ज्ञात हुआ कि अवतार मेहेरबाबा इस ओर आये हैं तो अपने सीमित साधनों में जो कुछ भी उनके स्वागत हेतु बन पड़ा-उसको संजोकर हृदय में बड़ी ही गहरी लगन लगाये उनके स्वागत की प्रतीक्षा करने लगे हालांकि बाबा को कोई विधिवत वहाँ जाने का आमंत्रण नहीं था। जब बाबा दूसरे दिन अपने साथियों को ले अन्य स्थल की ओर रवाना हुए तो उन्होंने निर्धारित रास्ते से हटकर एक अन्य रास्ते पर अपनी गाड़ी ले चलने की आज्ञा दी। सभी लोग विस्मित भी हुए किन्तु बाबा का आदेश जो था। कुछ समय बाद एक स्थान पर बाबा ने अपनी गाड़ी रूकवाई और उतरकर सीधे उस दम्पति की कुटिया पर पहुँचे और उन्हें अपने सीने से लगाया। उस दम्पति ने अश्रु

भरे नयनों से कांपते हाथों अपने प्रियतम को पुष्पहार पहनाया और अपने प्रेमाश्रु उनके श्री चरणों पर अर्पित किए।

सन् 1952 के नवम्बर माह में बाबा ने नौरंगा के अपने प्रेमियों को कृतार्थ किया। यहाँ पर श्री रामप्रसादजी ने नौरंगा में मैहेर मंदिर बनवाने की बाबा से आज्ञा मांगी। बाबा ने कहा संसार में जितने भी मंदिर–मस्जिद, गिरजाघर आदि हैं वे सब मेरे लिए ही तो है। मेरा असली मंदिर तो व्यक्ति का हृदय है। इसलिए अब नए मंदिर की क्या आवश्यकता है? किन्तु श्रीरामप्रसाद जी के गहरे आग्रह को देखते हुए बाबा ने कहा इसे मंदिर कहने की अपेक्षा ''धाम'' शब्द से सम्बोधित किया जाये और धाम की नींव में लगने वाली एक ईंट को भी अपना स्पर्श दिया। इस धाम के प्रवेश द्वार पर बाबा का दिया हुआ संदेश इस प्रकार अंकित है।

''मैं किसी धर्म का नहीं हूँ। मेरा धर्म प्रेम है। प्रत्येक हृदय मेरा मंदिर है। यद्यपि तुमने प्रेम में पत्थर के इस भवन का निर्माण किया है तथापि मैं केवल तभी होता हूँ जब तुम्हारा हृदय मुझको यहाँ लाता है।''

15 जनवरी 1953 को बाबा आन्ध्रप्रदेश में अपने प्रेमियों के मध्य पहुँचे और विजयवाड़ा से होते हुए एलरू गए। यहाँ के लोगों में बाबा के दर्शनों की तीव्र अभिलाषा थी। मंच पर आसन ग्रहण करने के उपरान्त बाबा ने लम्बी–लम्बी कतारों में आते हुए लोगों को दर्शन लाभ देते हुए अपना प्रेमाशीष दिया। लोग जयजयकार के नारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे थे। इस अवसर पर बाबा ने कहा ''अब समय आ गया है कि प्रेम के सागर से आध्यात्म की सूखी नदियों में बाढ़ आ जाये। तुम जो मुझे हजारों लोगों को दर्शन देते और प्रसाद बाँटते देखते हो–वह कोई यांत्रिक कार्य नहीं है, और न ही वह निरुद्देश्य है ये कुछ तरीके हैं जिनके द्वारा मेरा प्रेम मानवता की ओर बहता है।''

एलुरू ही में एक दिन बाबा अचानक सुब्बाराव नाम के एक सज्जन के बगीचे में एक पेड़ के नीचे कुछ समय को बैठ गए। सुब्बाराव हर्ष विभोर हो उठे और उन्होंने उस स्थल पर बाबा से एक कमरा निर्मित करने की अनुमति मांगी–बाबा ने बड़ी कृपा कर अनुमति दे दी और साथ ही अपने पास से कुछ मोती उसकी नींव में डालने को दिए। यहीं एक दस वर्ष के बालक के हृदय में बाबा के चित्र को देखकर

उनके दर्शनों की तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हुई। चूंकि बालक को तीव्र ज्वर था इसलिए वह बाहर निकलने में असमर्थ था। बालक के माता पिता को मेहेरबाबा में कोई रूचि नहीं थी। एक दिन शहर में भ्रमण करते हुए बाबा ने अपनी कार एक जगह रूकवाई और उतर कर सीधे उस बालक के घर में प्रवेश करते हुए, उस बालक के बिस्तर तक पहुँचे और अपना आशीर्वाद दिया एवं घर से बाहर आ गए। उसके माता पिता जब तक स्थिति का पूरा-पूरा जायजा ले पाते-बाबा प्रस्थान कर चुके थे। बाद में उसके माता पिता ने देखा कि बालक के तकिया के नीचे बाबा का एक चित्र रखा हुआ था। यह घटना दर्शाती है कि बाबा अपने प्रेमियों की छोटी-छोटी बात का भी कितना ख्याल रखते हैं।

17 जनवरी को बाबा ताड़ेपल्लीगुड़म पहुँचे, वहाँ के लागों ने बाबा का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर लगभग दस हजार लोगों ने अपने प्रियतम के श्री चरणों में शीश नवाया। दर्शन के इस आयोजन के प्रबंधकर्ता डॉ.धनपति राव थे। सारे समय उत्सव जैसा माहोल बना रहा। इस अवसर पर योगी सुधानन्द भारती ने भी बाबा के दर्शन किए। 23 जनवरी को राज महेन्द्री में रंगपट्टनम से पधारे श्री आर. एस. एन. मूर्ति ने भी बाबा के दर्शन कर स्वयं को धन्य किया। बाबा के दर्शन करते ही उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो उन पर शक्तिपात हो रहा हो। आनन्द से भाव-विभोर हो उनकी आंखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो उठी और बाबा के चारों ओर उन्हें प्रकाश पुंज दिखाई पड़ा। अपने पिता की इसी उक्ति का स्मरण कर मूर्ति जी उसी क्षण से मेहेरबाबा को ईश्वरीय व्यक्तिगत मानने लगे।

ऐसे ही अवसर पर एक बार बाबा ने कहा था ''मैं चमत्कार नहीं करता, पर यदि लोग सोचते हैं कि कुछ चमत्कार हुआ है तो इसका कारण उनका निजी विश्वास है। पर हाँ मैं एक चमत्कार करूंगा और वह यह कि मैं मुर्दा को जिन्दा नहीं करूंगा परन्तु ईश्वर के लिए जीवन व्यतीत करने के लिए उसे निज के प्रति मृत कर दूंगा। मैं अन्धों को आंखे नहीं दूंगा, पर मैं लोगों को दुनिया के प्रति अन्धा कर दूंगा ताकि वे ईश्वर को देख सकें।''

13 अगस्त 1953 को बाबा देहरादून में थे जहाँ वे 2 सितम्बर तक रहे। इन इक्कीस दिनों में बाबा ने वहाँ एक विशिष्ट प्रकार का आन्तरिक कार्य किया। इन

दिनों वह प्रतिदिन अपनी उपस्थिति में मंडली जनों से ''परवर दिगार प्रार्थना'' करवाया करते थे। यह प्रार्थना बाबा ने खुद ही लिखवाई थी और यहीं पर सार्वजनिक रूप से पहली बार अपने अवतार की घोषणा की। 7 सितम्बर 1953 की प्रातः बेला में जोरोस्तर के जन्म दिवस के अवसर पर देहरादून में बाबा ने ऊँचे से ऊँचा पर सन्देश देते हुए कहा – ''अगर मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ तो मेरी मर्जी याने दैवी इच्छा शक्ति विश्व का विधान है। मेरी इच्छा विधान का नियमित संचालन करती है, और मेरा प्रेम विश्व का पोषण करता है। जो कुछ भी तुम्हारे दिखावटी संकट और क्षणिक क्लेश हैं, वे सब तुम्हारे अंतिम कल्याण के लिए मेरे प्रेम के फलस्वरूप हैं।''

3 फरवरी 1954 का बाबा इछौरा जाते ग्राम टीकर पहुँचे जहाँ दर्शन के लिए लोगों की बड़ी भीड़ लग गई। एक अंधे बच्चे को उसकी माँ ने उनके चरणों पर डाल दिया और प्रार्थना की कि इसे कम से कम एक आंख दे दो ताकि वह आपके दर्शन कर सके। बाबा ने उस बच्चे को वहाँ से ले जाने को कहा– किन्तु कुछ दिनों में उस बच्चे को दोनों आंखों से दिखने लगा।

टीकर और इछौरा के मध्य बेतवा नदी बहती है। इछौरा ग्राम से अनेकों सजी हुई बैलगाड़ियाँ बाबा को लेने टीकर ग्राम पहुँची। जब बाबा की बैलगाड़ी बीच नदी में आई तब बाबा ने बड़ी ही कृपा कर अपने दोनों हाथ पानी में डुबोये तथा अपना दाहिना चरण बेतवा नदी के जल में डुबो दिया और कहा ''भविष्य में यहाँ लाखों की भीड़ होगी।'' वह माघवदी अमावश्या का दिन था और उन दिनों प्रयाग में महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा था। इस प्रकार बाबा ने बेतवा को गंगा नदी का दर्जा प्रदान किया। लगभग 10 बजे बाबा इछौरा ग्राम पहुँचे और अपने स्वागत हेतु बनाये गए चबूतरे पर वे विराजमान हुए। वहाँ बाबा ने घोषित किया 'आज का महत्वपूर्ण दिन में इछौरा को दे रहा हूँ।' बाबा ने आगे कहा 'आज दर्शन का दिन नहीं है– मैं आज रात कुछ आध्यात्मिक कार्य करूंगा आप लोग आज रात अधिक से अधिक शान्त रहें, कल मैं सबको दर्शन दूंगा।'

रात्रि को बाबा जहाँ रूके थे, उस खुले स्थल की ओर लोगों को जाने की मनाही थी। बाबा अपने विश्वव्यापी कार्य में संलग्न हुए एरचजी पहरे पर थे, किन्तु कुछ दूरी पर कुछ ग्रामीण अपना कार्य रात्रि को भी कर रहे थे। रात्रि 12 बजे के

बाद भी उन्हें नींद नहीं आ रही थी कि अचानक उन्होंने देखा कि जहाँ बाबा रूके हुए हैं उस ओर बाबा के पास बहुत से लोग जा रहे हैं। वे जोर जोर से बाते करते थे किन्तु उनकी भाषा समझ में नहीं आ रही थी और बाबा के तम्बू के पास चारों ओर प्रकाश छाया हुआ था।

4 फरवरी के प्रातः से बाबा के दर्शनों का कार्य प्रारंभ हुआ। बाबा को पुष्पहार पहनाये गए, आरती गाई गई और स्वयं बाबा ने अपने हाथों से प्रसाद बांटा और अपना दिव्य स्पर्श प्रदान किया। इछौरा में बाबा ने अपना प्रेम बाँट्ते हुए कहाँ कि ''आज अपने को तुम सब के बीच पाकर मुझे आनन्द प्राप्त हो रहा है। मुझे पूरे दिल से प्रेम करो, और तुम मुझको सदैव पाओगे व देखोगे, क्योंकि मैं निरंतर तुममें बास करता हूँ।''

अब क्या बताऊँ मैं तेरे मिलने से क्या मिला?
इरफाने गम हुआ मुझे दिल का पता मिला,
मंजिल मिली मुराद मिली मुद्दआ मिला,
सब कुछ मुझे मिला जो तेरा नक्श पा लिया
खुदवीनों खुदशानास मिला खुदनुमा मिला
इन्सां के भेष में मुझे अक्सर खुदा मिला
क्यों ये खुदा के ढूंढने वाले हैं ना मुराद
गुजरा जो मैं हुदूदे खुदी से खुदा मिला
''सीमाब'' को शगुफ्ता न देखा तमाम उम्र
कम्बख्त जब मिला हमें गम आशना मिला।

(फरवरी 1958 में सहवास सम्मेलन के दौरान यह गजल सुनकर बाबा ने उसके रचयिता ''सीमाव'' को भव बंधन से मुक्ति प्रदान करने की घोषणा की थी।)

विदेश यात्रायें

मेहेर बाबा ने तेरह बार विदेश की यात्रायों की। सन् 1932, 1934, 1956 और 1958 में कुल चार बार विश्व भ्रमण किया। अपनी विदेश यात्राओं के सम्बन्ध में बाबा का कहना था कि पश्चिमी देशों की मेरी यात्राओं का उद्देश्य किसी नए धर्म, संस्थानों, मत या आध्यात्मिक संस्थाओं को स्थापित करना नहीं है बल्कि वे चाहते हैं कि लोग अपने स्वयं के धर्म को जिसे वे मानते हैं, उसके सही अर्थो में समझे। उनका कहना था कि सभी धर्म एक सूत्र में माला की मणियों के सदृश्य एक दूसरे से अलग-अलग रहते हुए भी एक साथ जुड़े रहें। अमेरिका में बाबा ने अपने संदेश में कहा कि वे निकट भविष्य में इस देश में अनन्त ऊर्जा का प्रवाह देख रहे हैं। मेरा कार्य प्रत्येक स्तर पर प्रत्येक जगह समाविष्ट होगा। विश्व को जो आध्यात्मिक चेतना वे देना चाहते हैं वह स्वमेव ही अर्थ, लिप्सा व काम एवं राजनैतिक समाधान पाने में सहायक होगी। बाबा ने कहा था कि वे भौतिकवादी पश्चिम व आदर्शवादी पूर्व को एक ही धरातल पर साथ-साथ खड़ा होते देखना चाहते हैं।

सन् 1931 में जब मेहेर बाबा ने प्रथम बार पश्चिम की यात्रा की तो यूरोप और अमेरीका में जो लोग भी उनके सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त कर सके उनके हृदयों में आध्यात्मिक अवधारणा के बीज उन की कृपा से समाविष्ट हुए। जिनकी आत्मा में प्रभुपाथेय की जन्म जन्मान्तरों में तड़प रही होगी। वे सभी किसी न किसी प्रकार से प्रियतम के सान्निध्य में आने लगे। इस प्रकार मेहेर बाबा की विदेश यात्रायें मात्र समय बिताकर लुत्फ उठाने को नहीं थी बल्कि भविष्य में होने वाले एक बड़े आशावादी एवं हितकर परिवर्तन की तैयारी के लिए पृष्ठभूमि निर्मित करने हेतु थी। मेहेरबाबा जहां-जहां भी गए वहां दिन रात हजारों लोगों में न केवल वे प्रेम का कोष ही उन्हें लुटाते रहे बल्कि साथ-साथ ही वे भेंट करने वालों के अवचेतन को सचेतन में परिवर्तित करने का अपना विश्व व्यापी आध्यात्मिक कार्य भी करते रहे।

अवतार मेहेर बाबा ने अपनी प्रथम विदेश यात्रा 29 अगस्त 1931 को एस. एस. राजपूताना नामक जहाज से बम्बई से लन्दन को प्रारंभ की। मेहेर बाबा को बताया गया कि उसी जहाज में महात्मा गांधी भी इंग्लेण्ड जा रहे हैं। बाबा ने कहा

यदि मैं इंग्लेण्ड जाता हूँ तो गांधी को भी अपने साथ लेता जाऊँगा। बाबा ने करांची के तत्कालीन मेयर श्री जमशेद मेहता को पासपोर्ट तैयार करने का कार्य सौंपा। श्री मेहता ने अपने सभी प्रयत्न कर डाले कि मेहेर बाबा के हस्ताक्षर कराये बिना ही पासपोर्ट तैयार हो जाये किन्तु जब सम्भव न हो सका तो मेहेर बाबा ने यह कहते हुए कि यदि अंग्रेज सरकार अपने मृत्यु वारंट पर हस्ताक्षर कराना ही चाहती है तो मैं हस्ताक्षर कर देता हूँ। आज से ब्रिटिश सरकार का अंत हुआ और बाबा ने हस्ताक्षर कर दिए। अपनी इस यात्रा के दौरान गांधी ने भी पत्रकारों से यही कहा कि वे लन्दन सिर्फ ईश्वर के साथ अपनी यात्रा कर रहे हैं लन्दन में बाबा अपने प्रेमियों को किमको के नाम से सम्बोधित करते थे। ''किम'' से उनका तात्पर्य मि. टाहर्स्ट से व ''को'' का संबोधन डेलिया मिण्टा, मागरिट क्रेस्की, मेबेल राईन और किटीडेवी के लिए था।

लन्दन में लगभग ढाई सौ मील दूर काम्बे मार्टिन नामक शहर में अपने सैंकड़ों प्रेमियों के साथ थामस वाटसन नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने भी मेहेर बाबा का सान्निध्य प्राप्त किया। बाबा ने वाटसन के मस्तिष्क पर अपना हाथ रखा प्रेम से आवेशित प्रभु के इस स्पर्श से वह वृद्ध व्यक्ति वाटसन बच्चे की भांति रो पड़ा मानों उसके हृदय से प्रेम की ऐसी धारा फूट पड़ी जो आंसुओं के रूप में अविरल रूप से प्रवाहित होती रही–लगभग 15 मिनट तक उसकी ऐसी स्थिति रही। चानजी सात वर्षो से बाबा के सान्निध्य में है यह ज्ञात होने पर वाटसन यही कह सका ''मेरे बेटे क्या तुम जानते हो कि तुम कितने भाग्यवान हो कि कितनी बड़ी छत्रछाया के सान्निध्य में तुम रह रहे हो?'' भाव विभोर हो वाटसन ने कहा ''अपनी 78 वर्ष की आयु में आज यह प्रथम अवसर है जब मुझे ज्ञात हो सका कि दिव्य प्रेम का स्पर्श मात्र भी कैसे होता है?'' यही प्रोफेसर वाटसन बाद में बाबा की प्रथम अमेरिका यात्रा के माध्यम बने।

बाबा 6 नवम्बर 1932 को न्यूयार्क पहुंचे। न्यूयार्क पोर्ट पर एक अधिकारी बाबा और मण्डली जनों से संतुष्ट नहीं हो पा रहा था इसलिए वह प्रवेश की आज्ञा देने में जानबूझकर व्यवधान डाल रहा था। वह समझ ही नहीं पा रहा था कि इनके गुरू ''मौन'' क्यों हैं? मेरिडेथ के यह कहने पर की बाबा अमेरिका वासियों को

अपना प्रेम बांटने आये हैं। तो वह अधिकारी व्यंगात्मक हंसी के साथ कहने लगा ''यह कैसे सम्भव है? किसने आप लोगों को इस प्रकार की सलाह दी?'' आदि–आदि। तब बाबा ने बोर्ड पर शब्दावली से अंकित किया ''मैं सिखलाने नहीं बल्कि जगाने आया हूँ।'' फिर भी वह अधिकारी संतुष्ट नहीं हुआ। वह चाहता था कि कोई व्यक्ति इस पार्टी की जमानत ले। तभी जहाज का एक अधिकारी वहां आया और उसने सम्बन्धित अधिकारी से पूछा इस पार्टी को प्रवेश देने में क्यों विलम्ब किया जा रहा है? उसने स्वयं को प्रस्तुत करते हुए कहा कि मैं इनकी जमानत लेने को तैयार हूँ – इस सबको जाने दिया जाये और यह कहकर वह वापिस चला गया। बाद में चानजी उस अधिकारी को धन्यवाद देने जहाज पर गए किन्तु पाया गया कि ऐसा कोई भी अधिकारी वहां पर कार्यरत नहीं है। प्रो. वाटसन ने बाबा के सम्बन्ध में जीन एन्ड्रीयल और मालकाम सेलास को भी बताया। ये दोनों बाबा से मिलने उत्सुक हो गए। इसी बीच चार्ल्स परडम का समाचार पत्र में प्रियतम बाबा के सम्बन्ध में ''सदगुरू'' नाम से एक लेख को पढ़कर कार्डेलिया नाम की अभिनेत्री बाबा से मिलने उत्सुक हुई। बाबा से भेंट कर कार्डेलिया ने यही व्यक्त किया कि उन्हें देखते ही उसे लगा जैसा उसकी खोज समाप्त हो गई है। उसे प्रेम के देवता के रूप में जीसस का आभास हुआ बाबा में और कहा कि उसने बाबा के लिए अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया है। यही अभिनेत्री डेलिया बाद में लन्दन में स्थापित मेहेर बाबा सेन्टर की अपनी मृत्यु तक अध्यक्ष रही। जीन एन्ड्रियल प्रथम बार जब बाबा से मिली तो बाबा ने उससे कुछ समय तक चुप रहने को कहा– जीन कहती थी कि उन क्षणों में उसके साथ कया घटित हुआ वह वर्णन नहीं कर सकी। उसके हृदय की गहनतम गहराई में कुछ ऐसी हलचल मची कि वह सिर्फ रोकर ही व्यक्त हो सकी– वे आंसू उसकी अत्यधिक खुशी के आंसू थे परम पावन। उस दिन बाबा ने मालकाम जो जीन के साथ ही बाबा के दर्शनों को गया था, से कहा कि ''मैं ईश्वर हूँ, वही सनातन पुरूष'' और शेष जो तुम देख रहे हो चारों ओर वह मात्र भ्रम है– माया जाल है।

इटली की एक महिला नोरीना मेकबेली जीन की मित्र थी। नोरीना के हृदय में गहरी आध्यात्मिक लगन उत्पन्न हो गई थी। न्यूयार्क में नोरीना जब जीन से मिली तो उसने पूछा कि तुम किस सन्त पुरूष के चरणों की पूजा करती हो और रोती

रहती हो? जीन ने जब इसे बाबा के बारे में बताया तो वह बाबा के दर्शन करने उत्सुक हुई। तीन दिन बाद जब मेहेर बाबा अमेरिका पहुँचे तो नोरीना ने जीन को फोन पर बताया कि यह क्या हुआ कि जैसे ही मेहेर बाबा ने न्यूयार्क में कदम रखा उसी क्षण से बरबस ही उसे रोना आ रहा है उसका रोना रूक ही नहीं रहा। किसी भांति बाबा से उसकी भेंट कराने का प्रबंध करें, और जब वह बाबा के सान्निध्य में पहुंची तो वह स्वयं को पूर्ण रूप से भूल चुकी थी। आंसू उसके चेहरे पर से ढुलक रहे थे और वह जोर-जोर से रोये जा रही थी और कुछ ही क्षणों में सहसा ही उसने हंसना आरम्भ कर दिया था। प्रियतम के दर्शन पा एक असीम अनुभूति उसे हुई और उसने बाबा से कहा ''मेरा जीवन आपको अर्पित है, कृपया मुझे अपने साथ रखें।'' बाद में नोरीना ने बताया कि जब वह बारह साल की थी, तो लार्डजीसस से उसकी बात हुई थी- और जीसस ने उससे कहा था कि ''मैं ही तुम्हारा प्रथम वह अंतिम प्रेम हूँ।'' नोरीना ने अपने इस अनुभव को कभी किसी से नहीं कहा था किन्तु बाबा के दर्शन कर उसे लगा कि जीसस ही यह स्वरूप धारण कर प्रगट हो गए है। बाबा ने उससे कहा भी कि मैं ही क्राइस्ट के रूप में तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करने आया हूँ।

एलीजाबेथ पेटरसन ने भी जीन ऐन्ड्रियल से मेहेर बाबा के बारे में सुना। ऐलीजाबेथ ने जैसे ही सर्वप्रथम बाबा के दर्शन किये उसे लगा मानो उसने कभी पहले भी बाबा को देखा है। मेहेर बाबा के नेत्रों का वर्णन करती हुई ऐलिजाबेथ कहती है कि मेहेर बाबा के नेत्रों को देखने से ऐसा लगता था मानों करोड़ों सूर्य एक साथ उनकी प्रेम भरी आंखों में नृत्य कर रहे हों। बाद में यही ऐलीजाबेथ भारत में बाबा के साथ जब वे मस्तों से संपर्क कर रहे थे तो बाबा की ''नीलीबस'' की चालक होती थी। अमेरिका के साऊथ केरोलिना प्रदेश में उसी ने अपनी 500 एकड़ भूमि पर ''मेहेर आध्यात्मिक केन्द्र'' की स्थापना की। इसी समय काउन्ट लियो टालस्टाय की पुत्री नादिना भी प्रियतम बाबा की कृपा पात्र बनी।

नोरिना के पति जार्ज मेकबेली मेहेर बाबा को क्राइस्ट के रूप में स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। बाबा ने उससे कहा कि अपनी मृत्यृ के पूर्व तुम्हें स्पष्ट हो जाएगा कि मेहेर बाबा कौन है? दो वर्ष बाद जब मेकबेली मृत्युशय्या पर था तो बाबा ने नोरीना को उससे भेंट करने भेजा। जब नोरीना वहां पहुंची तो डाक्टर मेकबेली के

कमरे से यह कहते हुए बाहर आ रहे थे कि मेकबेली की मृत्यु हो चुकी है। लेकिन जैसे ही नोरीना ने कमरे में प्रवेश किया जार्ज मेकबेली सहसा ही उठकर अपने बिस्तर पर बैठ गया और नोरीना से कहा कि वह जो कार्य मेहेर बाबा के लिए कर रही है वह बहुत अच्छा है– उसके बाद लेट गया और उसकी मृत्यु हो गई।

28 नवम्बर 1931 को बाबा हारमोन शहर के सिंग–सिंग जेल के समीप गए। जेल का चारों ओर से एक चक्कर लगाया। बाबा ने बड़े गौर से जेल की बाहरी दीवारों को देखा, और मुख्य द्वार पर कुछ क्षणों तक मौन रह अपने प्यार भरे चुम्बन प्रगट किए और वहां से प्रस्थान कर दिए। बाबा ने बताया कि इस कैदखाने में उनका एक कार्यकर्ता है जिसका नाम अब्दल है। वह उनका अच्छी तरह से कार्य कर रहा है और जब वे बोलेंगे तो उसको मुक्त कर देगें। अमेरिका में एक माह रूक कर 5 दिसम्बर 1931 को बाबा पेरिस पहुंचे। बाबा ने बताया कि पेरिस में चेतना के उच्च स्तर पर स्थित जो आत्मायें विचरण कर रही है वे उनको और उच्च स्तर पर ले जाना चाहते हैं। पेरिस में अंतिम दिन बाबा ने कहा ''यह जो आप मुझे देख रहे हैं–यह मैं नहीं हूँ, मेरा निजी स्वरूप अत्यधिक सुन्दर है, मैं अनन्त सत्य, अनन्त प्रेम और अनन्त ऊँर्जा से युक्त हूँ। मैं कृष्ण था, बुद्ध था, जीसस था और अब मेहेर बाबा हूँ। आप सब प्रसन्न रहें और चिन्ता न करें।'' सभी के नेत्रों से प्रेम के आंसू बहने लगे। लोगों के हृदय द्रवित हो उठे और 23 दिसम्बर को जब उनके लौटने पर ''फीड माइशीप'' (मेरी भेड़ों को भोजन दो) राविनसन का यह गीत बजाया जा रहा था तो लोगों ने देखा कि मेहेर बाबा प्रेम से विव्हल हो उठे और उनकी आंखों में आंसू छलक उठे। इस प्रकार अपनी प्रथम विदेश यात्रा से बाबा 1 जनवरी 1932 को वापिस बम्बई आ गए।

24 मार्च 1932 को मेहेर बाबा ने कोन्टेरोसो नामक एक इटली के जहाज से पश्चिमी जगत की अपनी दूसरी यात्रा प्रारंभ की। यह यात्रा कोलम्बो से शंघाई व वहां से नानकिंग को की गई। इस बार बाबा के साथ शिरीन माई, मनि आदि सीनियर वेहराम, आदि जूनियर, चानजी, काका बारिया और डॉ, गनी यात्रा में शामिल थे। नानकिंग से बाबा मिलान होते हुए लन्दन पहुँचे। लन्दन से प्रकाशित ''सन्डे एक्सप्रेस'' के सम्पादक जेम्स डगलस ने अपने पत्र में प्रकाशित किया कि

मेहेर बाबा के कमरे में प्रवेश करते ही उसे ऐसा भान हुआ मानो पूरे कमरे में बिजली का करेन्ट प्रवाहित हो रहा हो। उसने बाबा से पूछा भी कि यह सब कैसे और क्यों हो रहा है? तो बाबा ने उत्तर दिया यह सब उनकी उपस्थिति के कारण ही है। 27 अप्रैल को बाबा स्विटजरलेण्ड पहुंचे। वहां के लुगानो शहर के समीप जब बाबा एक नौका से भ्रमण कर रहे थे तो बाबा ने एक मजदूर की तरफ इशारा किया और कहा कि वह उनका कार्यकर्ता है। बाबा ने छड़ी से तीन बार खट-खट की। बाबा ने बताया कि वे उसे तीसरे स्तर से चौथे स्तर पर पहुंचा रहे हैं। बाबा ने उसे मक्खन और रोटी भिजवाई जिसे उसने प्रेम पूर्वक खाया। बाबा ने बताया कि उनका यह एजेन्ट विवाहित है किन्तु उसकी पत्नी व बच्चों को इसकी आध्यात्मिक स्थिति का जरा भी भान नहीं है। बाबा ने यह भी बताया कि यहां यूरोप में एक व्यक्ति छठे स्तर का है एवं एक सातवें स्तर पर है। सातवें स्तर पर पहुंचा यह व्यक्ति पृथ्वी पर जो 56 ईश्वरीय चेतना को प्राप्त पुरूष सदा होते है। वह उनमें से एक है। 13 मई को बाबा मण्डली जनों के साथ न्यूयार्क रवाना हुए। यहां बाबा तीन दिन ठहरे और इस बीच सैंकड़ों लोगों से मिले। नादिना टालस्टाय पुनः बाबा से मिलने आयी। नादिना ने कहा उसे बाबा के रूप में साक्षात क्राइस्ट के दर्शन हुए। 24 मई 1932 को बाबा ऐलीजाबेथ पेटसरसन के साथ पहाड़ी रास्ते पर हारमोन में भ्रमण कर रहे ी कि सहसा ही बाबा ने गुलाबी रंग का एक जंगली फूल तोड़कर ऐलीजाबेथ को देते हुए कहा कि इस फूल को संभालकर रखो और आज की तारीख नोट कर लो। एक दिन तुम्हे आज की तारीख का महत्व ज्ञात होगा। बाद में 20 वर्ष बाद 24 मई 1952 को जब प्राग में ओकेलेहामा के समीप 24 मई 1952 को मेहेरबाबा कार दुर्घटना में जख्मी हुए तब उसे इस तिथि के महत्व का ज्ञान हुआ। विश्व नियंता ने अपरोक्ष रूप से अपनी लीला का एक संकेत दिया था पेटरसन को....।

वहां से बाबा शिकागो गए व अपने अनेक प्रेमियों को धन्य करते हुए हालीबुड़ भी सात दिन रहे। लोगों ने वहां जीवित क्राइस्ट के रूप में प्रियतम बाबा की पूजा की। इस दौरान कई फिल्म अभिनेताओं ने बाबा को प्रेम पाया। एक दिन शाम के समय बाबा ने देखा कि एक युवा लड़की काफी दूर से उन को देख रही है। बाबा ने उसे पास बुलाया। ऐलीजाबेथ ने उसे बाबा से हाथ मिलाने को कहा। वह लड़की

यकायक जोरों से रो पड़ी और बोली– ''भला मैं इनका स्पर्श कैसे कर सकती हूँ मैंनें तो बड़े-बड़े पाप किए है'' मेहेर बाबा ने बड़े प्रेम से उस लड़की के सिर पर हाथ रखा–उसे सहलाया और कहा कि चूंकि तुम सभी के समक्ष अपने पापों का प्रायश्चित कर रही हो इसलिए मैं तुम्हारे प्रत्येक पाप को क्षमा करता हूँ – अब तुम अपराध बोध से मुक्त होओ, और ख्याल रखो कि आगे से ऐसी कोई गलती तुमसे न बन पड़े। तत्पश्चात् होनुलुलु व केलीफोर्निया में लोगों को अपना प्रेम बॉटते हुए बाबा सिंगापुर होते हुए कोलम्बो वापिस आये और 15 जुलाई 1932 को बाबा बम्बई वापिस आ गए।

18 जुलाई 1932 को मेहेर बाबा पुनः केसर-ए-हिन्द नाम के जहाज से पश्चिम की यात्रा पर प्रस्थान किए। 29 जुलाई का इट्ली के मारसीलिएल्स शहर से होते हुए सान्ता मारगेरिटा पहुँचे। वहाॅ से वे 5 अगस्त को असीसी पहुँचे। बाबाकी इच्छानुसार असीसी के समीप 'हर्बर्ट ने एक गुफा का पता बाबा को दिया। बाबा ने उसमें प्रवेश किया और चानजी वह हरवर्ट को सख्त निर्देश देते हुए गुफा के बाहर पहरा देने छोड़ गए। काका और टाड को भी प्रातःकाल से पहरा देने की जिम्मेदारी सौंपी गई। बाबा का आदेश भूलते हुए अचानक ही टीड ने एक आवाज सुनते हुए गुफा के मुँह की ओर देखा। टाड ने देखा कि गुफा के अन्दर बाबा सूर्य की ओर मुँह कर आँखे बंद किए हैं और कुछ विचित्र प्रकार की आवाजें उनसे प्रगट हो रही है। बाबा कुछ समय बाद गुफा से बाहर आए और आधे घंटे बाद पुनः गुफा में प्रवेश कर गए और लगभग साढ़े तीन घंटे तक अन्दर रहने के बाद पुनः बाहर आये। बाद में बाबा ने बताया कि गुफा के अंदर उन्होंने सभी सद्‌गुरूओं और अन्य उच्च स्थिति में पहुँची आध्यात्मिक आत्माओं के साथ एक सभा में विश्व के अगले दो हजार वर्ष की आध्यात्मिक घटनाओं की पृष्ठभूमि की रूपरेखा निर्मित की है।

इसके बाद मेहेर बाबा वेनिस-अलेक्जेड्रिया और मिश्र के पिरामिड देखते हुए इजिप्त से 5 सितम्बर 1932 को भारत वापिस आ गए।

बाबा की चौथी यात्रा में उनके भाई जाल, आदि जूनियर विष्णु देरूखर और काका बारिया साथ में थे। इस बार 21 नवम्बर 1932 को बाबा यूरोप को प्रस्थान

किए। वेनिस, पेरिस, लन्दन, ज्यूरिच, कैरो होते हुए सीलोन के अपने प्रेमियों को उनके प्रेम का प्रतिदान करते हुए 28 जनवरी को बाबा बम्बई लौट आए।

अपनी पांचवी यात्रा में बाबा के साथ चानजी, काका आदि जूनियर और अब्दुल्ला साथ थे। 16 जून को अदन से होते हुए बाबा 23 जून को जिनेवा पहुँचे और वहाँ से सान्ता मारगेरीता पहुँचे। यहाँ बाबा एक जगह कुछ समय रूके तो एक रात्रि जब काका पहरे पर थे तो उन्होंने महसूस किया कि वहाँ पर कोई प्रेत आत्मा निवास करती है। एक दिन रात्रि के समय बाबा उठे और ऊपर की ओर सीढ़ियाँ चढ़ते हुए गए और कुछ क्षणों तक एक सीढ़ी पर बैठे रहे व फिर लौट आए। बाद में बाबा ने काका को बताया कि यहॉ पर पिछले 500 वर्षो से एक प्रेत आत्मा निवास कर रही थी व मुक्त होना चाहती थी– आज रात उन्होंने उसे मुक्ति प्रदान कर दी है।

वहाँ से मेहेरबाबा रोम पहुँचे। रोम में वे एक काफी गृह में बैठे थे। उस भीड़ भरे माहोल में मध्यम आयु का एक व्यक्ति लाल रंग की स्पोर्ट कार में धीरे से उनके समीप पहुँचा। बाबा ने बताया कि उसका नाम क्रिस्चियानो है और यूरोप में वह उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क में रहता है। बाबा ने बताया कि इस व्यक्ति की पत्नि तक को भी इसकी आध्यात्मिक स्थिति की कोई खबर नहीं है। वहॉ से बाबा पोर्टोफियाओनो होते हुए जिनेवा पहुँचे और फिर बम्बई वापिस आये।

25 सितम्बर 1933 को मेहेरबाबा ने अपनी छठवीं यात्रा आरंभ की। इस बार उनके साथ आदि, जूनियर, चानजी और काका थे। जहाज पर तत्कालीन हैद्राबाद के प्रधानमंत्री सर अकबर हैदरी ने उनके दर्शन किए। प्रमुख नर्त्तक उदयशंकर और इन्दौर की महारानी श्रीमति यशवंतराव होल्कर ने भी बाबा के दर्शनों का लाभ उठाया। वेनिस, सेन्टमार्क होते हुए 9 अक्टूबर को बाबा लन्दन पहुँचे। अनेकों लोगों को दर्शन लाभ देते हुए बाबा के पास डाक्टरी का अध्ययन करने वाला एक 22 वर्षीय छात्र भी पहुँचा। उसका नाम विलियम डान्किन था। उसने अपनी इच्छा जाहिर की कि अध्ययन के पश्चात वह बाबा का सान्निध्य पाना चाहता है। बाबा ने इसकी स्वीकृति दे दी। लौटते समय जैसे ही डान्किन ने अपना हाथ दरवाजे के हेन्डिल पर रखा कि उसे गहरे आघात का अनुभव हुआ। इस एक घटना ने डान्किन के हृदय में स्पष्ट हो गया कि बाबा ईश्वर है। बाबा से मिलने के पश्चात एक सप्ताह तक उसे बड़े दिव्य

अनुभव होते रहे। हर जगह हर वस्तु में उसे बाबा के ही दर्शन होते थे। बाद में वह बाबा के सान्निध्य में आया व अपना सारा जीवन उन्हें अर्पित कर दिया।

बाबा लन्दन से डोवर, केलेयास, पेरिस होते हुए स्पेन पहुँचे और उसी शाम वे एबीला नामक स्थान को प्रस्थान कर गए। बाबा ने बताया कि एबीला में उन्हें अपना विशेष आध्यात्मिक कार्य करना है। वहाॅ अपने आध्यात्मिक कार्य की समाप्ति पर बाबा बड़ी ही प्रसन्न मुद्रा में थें उन्होंने बताया कि यूरोप में चार बड़े ही पवित्र स्थल है जो आध्यात्मिक दृष्टि से बड़े उन्नत हैं वे है-वेनिस में सेन्ट मार्क, इटली में लिगुरियनकोस्ट, असीसी और एवीला। उसी रात्रि बाबा मेड्रिक वापिस लौट आए। 1 नवम्बर को बाबा बार्सीलोना पहुँचे और बताया कि यहाॅ पुलिस मेन के रूप में उनका एक विशेष कार्यकर्ता है। दिन भर भ्रमण करने के पश्चात् शाम के समय जब ट्रेन के चलने का समय हो रहा था तो बाबा की ओर टकटकी लगाए एक पुलिस मेन बाबा के समीप आया। बाबा ने बताया कि इस व्यक्ति से उनका प्रत्यक्ष सम्पर्क रहा करता है। 2 नवम्बर को अवतार मेहेरबाबा मारसीलिएल्स से ''वायसराय ऑफ इंडिया'' नाम के जहाज पर सवार हो वापिस भारत को लौट पड़े। प्रियतम ने अपने साथियों को एक बार फिर बड़ी ही कृपा कर स्पष्ट करते हुए कहा- ''जो मेरा वास्तविक स्वरुप है उसे तुम नहीं देख पाते। यह शरीर मैं नहीं हूँ मेरा वास्तविक स्वरूप कहीं बहुत अधिक सौन्दर्य युक्त है, मैं अखण्ड व अननत सत्य हूँ, मैं अनन्त प्रेम हूँ, मैं अनन्त जीवन हूँ।''

9 जून 1933 को अवतार मेहेरबाबा ने मारसीलीएल्स की यात्रा प्रारम्भ की। वहाॅ से पेरिस-लन्दन और फिर ज्यूरिच पहुँचे जहाँ वे दस दिन तक ठहरे। स्विटजरलैण्ड की फालनपलह पहाड़ी पर बाबा दो घंटे तक एकान्त में बैठे। उस समय किसी को भी उनके समीप पहुँचने की मनाही थी। उनके प्रेमी दूर खड़े उन्हें देख रहे थे। उसी समय भीषण वर्षा आरंभ हो गई किन्तु लोगों ने देखा कि जहाँ बाबा बैठे हैं उसके चारो ओर तेज प्रकाश का एक घेरा निर्मित हो गया है। चारों ओर वर्षा हो रही किन्तु प्रकाश के घेरे के अन्दर एक बूंद भी पानी नहीं जा रहा है। दो घंटे बाद बाबा अपने मंडली के साथ वापिस लौटे। बाबा ने बताया कि एक द्वितीय विश्व युद्ध से स्विटजरलेण्ड की रक्षा करने हेतु उच्च आध्यात्मिक आत्माओं की सभा का आयोजन

वहाँ पर हुआ था। ज्यरिच से बाबा पुनः मारसीलीएल्स आये। वहॉ की कुछ महिलाओं ने 16 छोटे–छोटे सुन्दर पक्षी बाबा को बाजार से खरीद कर भेंट किए। बाबा ने प्रेम पूर्वक उन्हें स्वीकार किया। बाबा ने बताया कि इन पक्षियों को पश्चिम से पूर्व ले जाने का बड़ा गहरा आध्यात्मिक महत्व है। बाबा 2 अगस्त को अपनी सातवीं यात्रा से बम्बई लौट आए। बाबा ने आठवीं यात्रा 15 नवम्बर 1934 को प्रारंभ की। 30 जून को वे लन्दन पहुँचे। वहॉ पर चार्ल्स परडम और वाल्टर मारटन्स ने उनका साक्षात्कार लियां 12 दिसम्बर को बाबा न्यूयार्क पहुँचे जहां वे दो दिन रूके। 18 दिसम्बर को हालीवुड व वहॉ से केलीफोर्निया फिर अल्ब्युकर्क, न्यू मेक्सिको पहुँचे। यहॉ बाबा के साथ रूआनों थी।

रूआनों के साथ बाबा रेलवे प्लेटफार्म से काफी दूर चले गए। रूआनो को यह चिन्ता हुई कि ट्रेन जिससे कि उन्हें आगे की यात्रा करनी है, उसे छूटने में मात्र आधा घंटा का समय बचा है, कहीं ऐसा न हो कि ट्रेन छूट जाए। आगे जाने पर उन्हें एक लम्बे कद का व एक छोटे कद का ऐसे दो भारतीय दिखे जो धनुष बाण बेच रहे थे। जैसे ही बाबा उनके समीप पहुँचे छोटे कद वाला व्यक्ति दूसरी ओर चला गया। लम्बे कद वाले व्यक्ति के समक्ष बाबा खड़े हो गए और दोनों एक दूसरे की ओर कुछ क्षणों तक देखते रहे किन्तु किसी ने भी कोई बात नहीं की। अचानक रूआनों के साथ बाबा स्टेशन की ओर लौट पड़े और ट्रेन छूटने के ठीक समय पर वापिस स्टेशन पहुँच गए। रूआनों के पूछने पर बाबा ने बताया कि यहाँ वह मेरा ही कार्य कर रहा है– वह लम्बा व्यक्ति उनका कार्यकर्ता है।

18 जनवरी 1935 को बाबा बैंकोवर–कनाडा पहुँचे और वहॉ से 2 फरवरी को हांगकांग पहुँचे। हांगकांग से 13 फरवरी को कोलम्बो लौटे। वहॉ से मद्रास होते हुए सड़क के रास्ते 16 फरवरी को बाबा मेहेराबाद पहुँचे। इस सारे समय बाबा उपवास कर रहे थे और केवल एक बार दूध ही लिया करते थे।

अक्टूबर के मध्य में बाबा ने अपनी नवीं यात्रा प्रारंभ की। केवल दो लोगों को साथ ले बाबा कराची से बगदाद पहुँचे। जहां वे दो दिन रूके वहां बाबा ने अपंग, बीमारी से ग्रसित व भिखारियों को भोजन कराया। 3 नवम्बर को लन्दन पहुँचे। लन्दन से बाबा ज्यूरिच व पेरिस गए। बाबा ने अपनी यात्रा का उद्देश्य नाशिक में

स्थापित नये आश्रम में इंगलेण्ड व अमेरिका के लोगों को शामिल होने हेतु बताया। इस प्रकार अमेरिका व इंगलेण्ड से 15 लोगों को नाशिक बुलाया गया। मारसीलीएलस होते हुए बाबा भारत लौट आए।

जुलाई 1937 में बाबा के साथ महिला मंडली में मेहरा, मनि, खुर्शीद मासी, नाजा को साथ ले 13 अगस्त को बम्बई से मारसीलीएल्स पहुँचे। वहां वे केल्डाना विला में रूके। यहाॅ बाबा ने सैकड़ों प्रेमियों को अपना प्रेमदान दिया। गहरे संस्कारों के प्रति लोगों को सचेत किया और अन्य अनेक विषयों पर बाबा ने अपना दृष्टिकोण लोगों को स्पष्ट किया। वहाॅ से बाबा पेरिस गए। यहाॅ सहसा ही बाबा ने भारत से मोहम्मद मस्त को बुलाने की इच्छा प्रगट की। अतः बाबा की इच्छानुसार सरोस ईरानी के बड़े प्रयत्नों के बाद मुहम्मद मस्त का पासपोर्ट तैयार करा पाया। आदि सीनियर और बैदुल के साथ मोहम्मद केन पहुॅचा। बाबा ने अपने हाथों से उसे स्नान कराया खिलाया और सेवा सुश्रुषा की। मोहम्मद को एक अलग से कमरे की व्यवस्था की गई। प्रतिदिन बाबा उसकी सेवा करते– इस दौरान उनका स्वास्थ्य भी कुछ खराब हो गया। कुछ लोगों के पूछने पर बाबा ने स्पष्ट किया कि एक पूर्ण पुरूष को पृथ्वी का सारा भार अपने ऊपर सहन करना पड़ता है इसीलिए उसे आम आदमी की भांति सारे दुख व कष्टों को भी सहन करना होता है। 20 नवम्बर 1937 को बाबा अदन व कराची होते हुए बम्बई वापिस लौट आए।

18 अप्रैल 1952 को बाबा मेहरा, मनि, महरू डॉ. गौहर रानो किटी सरोश आदि सीनियर, डॉ.नीलू, गुस्तादजी और मेहेरजी के साथ न्यूयार्क को प्रस्थान किए। यह उनकी 11 वीं विदेश यात्रा थी। इस बार वे साऊथ केरोलिना होते हुए सीधे मिरटिल बीच पहुँचे, वहां नोरीना ने उनका स्वागत किया। ऐलीजाबेथ व नोरीना से बाबा ने कहा इस बार अब तक जितने भी मैं अपने घरों में गया हूँ, उनमें से मुझे यह घर सर्वाधिक प्रिय है क्योंकि यह घर लोगों ने बड़े प्यार से बनाकर मुझे सौंपा है। बाबा ने जोर देते हुए कहा– ‘‘विश्वास करो मैं यह घर कभी नहीं छोड़ता। पुनः प्रियतम कहते है शताब्दियों पूर्व मैं इस स्थल पर भ्रमण करता रहा हूँ व मैंने यहाॅ निवास किया है।’’

20 मई को बाबा एक कार में कुछ मण्डलीजनों के साथ केलीफोर्निया में स्थित ओजाई के समीप मेहेर माउन्ट पर जाना चाहते थे। बाबा की गाड़ी को स्वयं ऐलीजाबेथ चला रही थी। ''गाड़ी के बीमा आदि के कागजात आपने साथ ले लिए हैं'' बाबा के पूछने पर एलिजाबेथ ने बताया कि सभी संबंधित कागजात उसके अपने घर पर है। बाबा ने बीच में ही गाड़ी रूकवाकर उसके घर चलकर आवश्यक कागजात साथ लेने के निर्देश दिए। उस नीली बस में इस समय बाबा के साथ मेहरा, मनि और मेहरू बैठे थे। सरोस एक अन्य वाहन चला रहे थे जिसमें रानों गौहर, डेलिया और किटी बैठी हुई थी। पहली रात्रि सभी लोग कोलम्बिया में विश्राम किए। दूसरी रात्रि मरफी में, तीसरे दिन सभी ने ''रूबिफाल्स'' का अवलोकन किया। एलीजाबेथ ने कहा कि इस प्रकार तो हम केलीफोर्निया नहीं पहुँच पायेगे। बाबा ने कहा कि यह उनका अंतिम प्रकृति दर्शन है। तीसरी रात्रि सभी ने आजार्क में विश्राम किया। चौथे दिन प्रातः नाश्ता करने के पश्चात सभी लोग आगे प्रस्थान करने को बाबा की आज्ञा हेतु खड़े थे, किन्तु बाबा कुछ देर लगा रहे थे। कुछ समय बाद वे अपने कमरे से बाहर आये और कुछ क्षणों तक शान्त व उदास स्थिति में खड़े रहे और फिर वे अपनी कार की ओर बढ़े। बाबा ने सरोस से कहा कि वे अपनी गाड़ी ऐलीजाबेथ की गाड़ी के साथ-साथ ही चलायें। यह 1952 की 24 मई का प्रातःकाल था। बाबा किंचित विचलित दिखाई पड़ रहे थे। सरोश ने अपनी गाड़ी रास्ते के एक गांव में चाय पीने के लिए रोक दी यह सोच कि थोड़ी ही देर में तीव्र गति से कार को चलाकर वे बाबा की गाड़ी के साथ हो लेंगें। प्रातः 10 बजकर 5 मिनिट पर सरोश ने अपनी दाहिनी तरफ देखा और चिल्लाये ''हे भगवान यहॉ तो दुर्घटना हो गई।''

सभी लोग दौड़े तो देखा कि मेहेरबाबा के सिर से रक्त की धार बह रही है जिससे उनका चेहरा खून से सन गया है। उनकी आँखे सीधी किसी गहरे शून्य में ताकती हुई दिखीं। उन्होंने न तो कोई आवाज की और न ही कराहें प्रगट की। वह शिथिल अवस्था में लेटे रहे। एलीजाबेथ कार में से ही चिल्लाई ''क्या वह जीवित हैंत्र'' मनि को कोई चोट नहीं आई थी। गत रात्रि वर्षा अधिक हो जाने के कारण सड़क पर फिसलन थी। एलीजाबेथ की कार एक छोटी पहाड़ी के समीप आयी ही थी कि सामने बाई ओर से एक कार और आ रही थी। उसने अपनी गति धीमी नहीं

की। ठीक अंतिम क्षण पर दूसरे कार के चालक ने एलीजाबेथ की गाड़ी को देखा व उसने तेजी से ब्रेक लगाये फलस्वरूप उसकी गाड़ी सड़क पर चारों ओर घूम पड़ी और इसी प्रक्रिया में उसकी गाड़ी बाबा की गाड़ी से टकरा गई। उस गाड़ी का चालक कोरिया का एक निवासी था और वह प्रथम बार ही वह गाड़ी चला रहा था। बाबा ने उसी समय आती हुई एक अन्य कार की ओर इशारा किया। उसके चालक को संदेश देकर एम्बूलेंस बुलाया गया। सभी घायल हुए लोगों को सात मील दूर प्राग के चिकित्सालय में एम्बुलेंस से ले जाया गया। प्राग शहर के चारों ओर इस दुर्घटना की खबर तेजी से फैल गई। अनेकों लोग पुष्पों के ले मेहेर बाबा के प्रति अपनी शुभकामनायें अर्पित करने इकत्रित होने लगे। इस दुर्घटना में सर्वाधिक चोट बाबा, मेहरा और एलीजाबेथ को आई थी। ओकेलेहामा शहर से विशेषज्ञों को बुलाया गया। एलीजाबेथ की 11 पसलियों में दरार आ गई थी। बाबा के दाहिने पैर और दाहिने हाथ की हड्डी में दरार आ गई थी। मेहेरा के सिर पर गहरा आघात लगा था। चिकित्सा करने वाले डाक्टर बरलेसन ने बाद में बताया कि जब वह बाबा के पास पहुँचा तो वह देख कर दंग रह गया कि एक व्यक्ति को जिसे इतना गहरा आघात पहुँचा हो- उसे उसने मुस्कराते हुए पाया। भला दुनियादारी में डूबा वह बेचारा चिकित्सक संसार के चिकित्सकों के चिकित्सक मेहेरबाबा की लीला कैसे समझ सकता था? डॉक्टर ने पाया कि मेहेर बाबा एक शब्द भी अपने कष्ट को व्यक्त नहीं कर रहे हैं और न ही कराह रहे हैं। जिस बात से वह डॉक्टर अत्याधिक प्रभावित हुआ वह यही थी कि ऐसी स्थिति में भी बाबा अपने प्रेम भरे विशाल नेत्रों से डाक्टर की ओर एक टक आँखे गड़ाये देख रहे थे मानों कि वे डाक्टर के मनोभावों का अध्ययन कर रहे हो।

अस्पताल में तेरह दिन रहने के पश्चात् बाबा और सभी अन्य ''यूपन डयून्स'' नामक स्थान पर लौट आए। तेरह जून को बाबा ने अपने प्रमियों के नाम एक संदेश भेजा कि पिछले कई वर्षो से प्रतीक्षित व्यक्गित क्षति जो उन्हें होनी थी अन्ततः हो गई जिससे उनके चेहरे, एक पैर व एक हाथ में गहरी चोटे आई और साथ ही अत्याधिक मानसिक व शारिरिक व्यथा भी हुई। ईश्वर की इच्छा थी कि यह दुर्घटना अमेरिका में घटे।'' जून के अंत तक बाबा किसी से भी नहीं मिले। एलीजाबेथ की

दशा भी ठीक नहीं थी। अंत में लन्दन को लौटते समय न्यूयार्क में बाबा अनेको प्रेमियो को अपनी उसी प्रेम सुधा रस बरसाती हुई मुद्रा में मिले। अनेकों लोगों ने इस बार भी सर्वप्रथम प्रभु के दर्शन किए थे। 31 जुलाई को बाबा लन्दन पहुँचे जहाॅ वे छह अगस्त तक रहे। इस दौरान हजारों प्रेमियों को प्रियतम ने अपना प्रेम का अक्षय कोष प्रदान किया। वहाॅ से बाबा स्विट्जरलेण्ड गये। यहाॅ भी अनेकों लोगों ने प्रभु के दर्शन व आशीष पाए और फिर जिनेवा होते हुए 21 अगस्त 1952 को बम्बई वापिस पहुँचे। एक आम व्यक्ति की शब्दावली में बाबा को इस समय भी शरीर में कष्ट रहा करता था।

16 जुलाई 1956 को अवतार मेहेर बाबा ने आनी बारहवीं विदेश यात्रा प्रारंभ की। इस बार इस यात्रा में आदि के ईरानी, एरुच जस्सावाला, डॉ.नीलू और मेहेरजी करकरिया बाबा के साथ थे। बम्बई से बाबा ज्यूरिच रवाना हुए। वहाॅ से लन्दन गए। सैकड़ों लोगों को अपना प्रेम बाँटते हुए बाबा ने कहा ''कि परमात्मा केवल हृदय से की गई प्रार्थना को सुना करता है। व्यक्ति के हृदय में उठने वाली प्रेम से भरी हुई प्रत्येक तरंग प्रभु को स्वीकृत होती है अतः जितने भी धार्मिक विधि विधान ईश्वर के लिए आयोजित किए जाते हैं उनका कोई महत्व नहीं है। वास्तव में तुम्हारे हृदय से उठने वाली–गहराई से गाये जान वाली प्रार्थना ही बाबा को – ईश्वर को स्वीकार्य होती है। यदि कोई चिरकाल तक जीवित रहने की इच्छा करता है तो उसे बाबा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ स्वयं को डुबो देना चाहिए।''

20 जुलाई को बाबा न्यूयार्क को प्रस्थान किए। अमेरिका की बाबा की यह पाॅचवी यात्रा थी। यहाॅ पर सैकड़ों दर्शनार्थियों के मध्य बाबा ने घोषित किया ''मैं वहीं एक पुरातन पुरूष हूँ – मैं अवतार हूँ।'' न्यूयार्क में ''मेनहट्टन हाऊस'' में 150 लोगों के साथ बाबा के सम्मान में आयोजित भोज में बाबा स्वयं प्रत्येक के पास जा जाकर ऐसे मिले कि प्रत्येक को यही लगा कि प्रियतम बाबा पूरी तरह से उसके समीप हैं। किसी को जरा भी कम या ज्यादा नहीं। इस अवसर पर बाबा ने कहा ''आज आप सबके मध्य में मैं बड़ा आनन्दित हूँ– यह आपका प्यार ही है जो मुझे मेरी एकान्तिक निवास की दशा में भी समुद्र के इस पार खींच लाई। जो स्वयं को असुरक्षित महसूस करते हैं वे किनारे पर खड़े अपनी सुरक्षा ढूंढ रहे है। किन्तु

जिन्होंने हिम्मत कर प्रेम के महासागर में डुबकी लगा दी वे प्रेम के दिव्य महासागर में परमात्मा से एकात्म प्राप्त कर अमूल्य मोतियों के अधिकारी हो गए हैं।'' बाबा ने आगे कहा ''कि देखो आकाश में जहाॅ-जहाॅ पतंग उड़ती जाती है उसके साथ उससे जुड़ा हुआ पुछल्ला भी स्वमेव यात्रारत होता है किन्तु इस यात्रा का आनन्द वह पुछल्ला केवल तब तक ही उठा पाता है जब तक कि वह पतंग से जुड़ा रहता है। अतः जितनी भी मजबूरी से हो सके तुम मेरा दामन पकड़े रहो- बिना इस बात की चिंता किए कि तुम पापी हो या पुण्यात्मा हो।'' उसके बाद बाबा मिरटिल बीच को प्रस्थान कर गए। 24 जुलाई को बाबा वाशिंगटन पहुँचे तो एक कृषक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा ''मैं भी एक कृषक हूँ-मैं ब्रम्हाण्ड की फसल उगाया करता हूँ।'' इस प्रकार सैकड़ों पुण्यात्माओं का जीवन धन्य करते हुए मेहेर बाबा 7 अगस्त तक अमेरिका में रहने के बाद सेनफ्रान्सिसको से आस्ट्रेलिया को प्रस्थान कर गए।

बाबा के साथ आस्ट्रेलिया की यात्रा में आदि सीनियर, एरुच, मेहेरजी और डॉ. नीलू थे। 9 अगस्त 1956 को बाबा सिडनी पहुँचे। 10 अगस्त को बाबा ने अपनी आस्ट्रेलिया यात्रा के संबंध में स्पष्ट करते हुए बताया कि वे इस देश में परमात्मा के प्रति प्रेम का बीजारोपण करने, उनके सम्मान में उनके लिए जो उन्होंने प्रेम पूर्वक एक निवास बनाया है उसे उपकृत करने और अपने उन प्रमियों को उपकृत करने आये है जो उन्हें प्यार करते है। अपने सहवास के दौरान बाबा ने कहा कि एक समय वे जोरोस्टर, राम, कृष्ण, बुद्ध, क्राइस्ट और मोहम्मद थे और अब वे मेहेरबाबा हैं। उनका शरीर एक कोट के समान है जिसे जब कहीं जाने को अवसर आता है तो पहिन लिया जाता है। अगले दिन फ्रान्सिस ब्रेबाजान द्वारा लिखित एक लघु नाटिक ''दी क्वेस्ट'' बाबा के मनोरंजन के लिए अभिनीत की गई- इस पर बाबा ने कहा ''फ्रान्सिस तुमने मुझे गहरे तक प्रभावित कर दिया है।'' वहाॅ से बाबा मेलवोर्न गए और अपने प्रेमियों के घर जा जाकर उन्हें धन्य दिया। मेलवोर्न से बाबा सिडनी पहुँचे। सिडनी में अपने प्रेमियों से बाबा मिलें। यहां भी प्रेमियों की आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो गई। अपना असीम प्रेम प्रदान करते हुए बाबा 12 अगस्त को सिंगापुर सीलोन के रास्ते से भारत वापिस लौट आये।

बाबा की तेरहवीं और अंतिम विदेश यात्रा में इस बार डॉ. डान्किन, आदि के ईरानी, इरूच और दादा चानजी उनके साथ थे। 17मई 1958 को बाबा न्यूयार्क पहुँचे जहॉ से वे सीधे मिरटिल बीच गए। 20 मई को इंग्लेण्ड, फ्रान्स, स्विटजरलेण्ड, इजराइल, अमेरिका व मेक्सिको से आए 225 प्रेमियों के समक्ष बाबा ने प्रेम की विवेचना प्रस्तुत करते हुए कहा कि जो भी मुझे सच्चे दिल से प्रेम करता है उसके हृदय में मैं शरीर छोड़ने के पश्चात भी रहूंगा। 22 मई को अपने वार्ताक्रम में बाबा ने फरवरी 1958 को भारत में सम्पन्न हुए सहवास की जानकारी देने की आज्ञा दी। इस सहवास में बाबा ने कहा था कि ''मैं साक्षात परमात्मा हूँ, जब मैं अपना शरीर छोड़ूंगा, मैं मेहेराबाद में बनी इस समाधि में निवास करूंगा। 70 वर्षो के पश्चात यह समाधि स्थल संसार का एक बहुत बड़ा तीर्थस्थल बन जायेगा। पापी और पुण्यात्मा, छोटे और बड़े गरीब और अमीर, स्वस्थ्य और बीमार, स्त्री और पुरूष बच्चे और बूढ़े, कुरूप और सुन्दर-मेरे लिए सभी एक जैसे हैं- क्योंकि मैं ही सब में हूँ अतः किसी को भी मेरे समीप आने में झिझक नहीं होनी चाहिए। मुझसे मिलो-और मेरा प्रेम लो।''

28 मई को वर्न में बाबा ने सभी उपस्थित जनों से कहा ''आज मैं संसार भर में फैले अपने सभी प्रेमियों के इस क्षण तक के सभी अपराधों को क्षमा करने की परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।'' 30 मई को बाबा विलंमिंगटन हवाई हड्डे को प्रस्थान किए। इस अवसर पर बाबा ने कहा कि ''मैं तुम सब में हूँ, किन्तु मैं तुम्हारे हृदय में तभी प्रवेश करता हँ जब वह पूर्ण रूप से खाली होता है।'' ''अनन्त काल से ही मैं न कहीं जाता हूँ, और न कहीं आता हूँ। मैं हर समय हर जगह उपस्थित हूँ। जैसे ही बाबा प्रस्थान किए-सभी उपस्थित जन भाव-विभोर हो चिल्ला पड़े ''अवतार मेहेरबाबा की जय।'' विलमिंगटन से बाबा वाशिंगटन आये वहॉ से लासऐंजिलिस और फिर सेनफ्रान्सिसको में एक दिन रूकने के पश्चात् 31 मई 1958 को पुनः आस्ट्रेलिया प्रस्थान कर गए।

11 जनवरी 1958 को बाबा ने बताया कि क्वीनसलेण्ड में आस्ट्रेलिया के प्रेमियों के साथ सहवास का आयोजन होगा। यह सहवास 4 जून से 7 जून 1958 तक चला। अनेको विषयों पर बाबा ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। जन्म-जन्मान्तर

की प्यासी आत्माओं को धन्य करते हुए 7 जून को बाबा ब्रिसबेन आऐ। अगले दिन प्रातः बाबा ने सभी उपस्थित जनों को अपना प्यार दिया और सिडनी को प्रस्थान कर दिया। सिडनी में बाबा ''मेहेर हाऊस'' गए। शाम को 6 बजे मेहेर बाबा आस्ट्रेलिया वासियों को धन्य करते हुए बिना कहीं रुके भारत वापिस लौट आये।

> मैं वही हूँ जिसे कितने ही लोग ढूंढते हैं किन्तु बहुत ही बिरले पाते हैं। मैं वही एक हूँ जो मानव जाति के बीच सदैव खोया और पाया जाता हूँ। अपने प्रति तुम्हारा प्रेम मुझे खो देता है और मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम मुझे पा जाता है।
>
> – मेहेरबाबा

बेला–विदाई की

सार्वजनिक रूप से बाबा ने दर्शन देना सन् 1965 से बंद कर दिया था। इसके बाद जुलाई 1968 में बाबा ने बताया कि उनका कार्य उनकी मान्यता के अनुसार शतप्रतिशत पूरा हो गया है। 13 अक्टूबर को बाबा ने कहा ''मैं कहता रहा हूँ, समय निकट आ रहा है, वह बिल्कुल निकट है, आज मैं कहता हूँ समय आ गया है, इसे याद रखो।'' किन्तु प्रियतम के इन शब्दों का अर्थ मण्डली जन न समझ सके कि कृपानिधान मानव रूप में अपनी लीला को समेटने जा रहे हैं। अब दिनोंदिन बाबा की हालत गिरती जा रही थी। डॉ.ग्रांट और डॉ.गौहर बाबा की देखभाल कर रहे थे। 19 दिसम्बर 1968 को बम्बई के प्रसिद्ध डॉ. राम गिंडे ने भी बाबा की जांच की किन्तु इसके बावजुद भी उनका स्वास्थ्य गिरता रहा। 12 जनवरी 1969 के बाद बाबा अपने कमरे से बाहर नहीं निकले। उनके शरीर में मरोड़ उत्पन्न होती थी। ऐसी स्थिति आने पर बाबा कहा करते ''मेरा समय आ गया है, यह मेरा शूली पर चढ़ना है।'' 14 जनवरी संक्रान्ति के दिन बाबा ने अपने हाथों से सभी को तिल और गुड़ दिया।

30 जनवरी को मेहेराबाद में जब मुहम्मद मस्त को बाबा की स्थिति के बारे में बताया गया तो वह बोला ''कल 31 जनवरी को दादा (बाबा) यहाॅ आयेंगे और गुस्तादजी के साथ जायेंगे। (गुस्तादजी का स्वर्गवास कुछ वर्ष पूर्व हो गया था) 30 जनवरी की रात्रि को बाबा ने भाऊ से कहा ''मैं यह शरीर नहीं हूँ हिम्मत से रहो।''

31 जनवरी 1969 के प्रातः 6.45 पर बाबा ने अलोबा से वह तख्ता बुलवाया जिस पर हाफिज के शेर लिखे हुए थे–जिनका भावार्थ इस प्रकार है।

''मैं सदगुरू का गुलाम हूँ जिसने मुझे अज्ञान से मुक्त कर दिया, जो कुछ मेरे गुरुदेव करते हैं, वह सभी के लिए कल्याणकारी होता है।''

''एक भाग्यशाली दास के लिए उपयुक्त यही है कि वह सदगुरू की प्रत्येक आज्ञा का पालन बिना क्यों और क्या के बगैर करता रहे।''

‘‘तुम सदगुरू से जो कुछ सुनो उसके विषय में यह कभी ना कहो कि यह गलत है क्योंकि यह तुम्हारी अयोग्यता का ही दोष है कि तुम सदगुरू की बात नहीं समझ पाते।’’

बाबा ने तख्ती पर लिखे हुए इन शेरों को पढ़वाया। बाबा का यह अंतिम संदेश था। दोपहर 12 बजे हालत कुछ और गिरी। डॉ. गौहर को बाबा ने आदेश दिया कि वे इंजेक्शन देना बंद करें और मण्डलीजनों को याद दिलाया कि ‘‘यह मत भूलो कि मैं परमात्मा हूँ।’’

लगभग 12.15 बजे बाबा को बड़े जोर से शरीर में ऐंठन आई और अचानक उनकी सांस बन्द हो गई। 12.40 पर डॉ. गिन्डे ने घोषित कर दिया कि बाबा शरीर छोड़ चुके हैं। सभी मण्डलीजन किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गये। किसी को भी कुछ समझ में न आ रहा था कि क्या करें? अब तक तो बस वे आज्ञा पालन ही करते आ रहे थे। आल इंडिया रेडियो और बी.बी.सी. ने बाबा के शरीर छोड़ देने की सूचना प्रसारित की। आदिजी ने तार द्वारा विश्व के सभी बाबा केन्द्रों पर सूचना भेजी। देशविदेश के हजारों बाबा प्रेमी अपने प्रियतम का अंतिम दर्शन करने मेहेराबाद की ओर चल पड़े।

बाबा ने ऐरच जी को हिदायत दे रखी थी कि संसार में उनका शरीर कहीं भी छूटे उसे मेहराबाद ले जाया जाय और वहॉ पर पूर्व से ही बनी कब्र में समाधिस्थ किया जाये। बाबा ने पहले से ही यह निर्देश भी दिया था कि उनके शरीर छोड़ने के बाद ‘‘विगिन दी वेगुईन रिकार्ड’’ बजाया जाये-तदनुसार वह विशेष रिकार्ड बजाया जा रहा था। 31 जनवरी 1969 को शाम के लगभग 5 बजे बाबा के शरीर को मेहेराबाद लाया गया। इस धराधाम पर भाग्यशाली वे गुलाब के फूल ही थे जो प्रियतम बाबा के मुखमण्डल का आखिरी चुम्बन ले रहे थे। बाबा के शब्द मण्डलीजनों के हृदयों में गूंज रहे थे जब उन्होंने कहा था ‘‘मैं भौतिक शरीर नहीं हूँ, मैं प्रेम का असीमित महासागर हूँ। मुझसे अधिकाधिक प्रेम करने का प्रयत्न करो और तुमको मेरा ज्ञान हो जायेगा। मैं इस रूप में सीमित रही हूँ। मैं अपने आपको तुम्हारे सामने प्रगट करने के लिए इसको लिवास के रूप में धारण करता हूँ। इसके बिना तुम मुझको नहीं देख सकते थे। मैं अपने ईश्वरीय अधिकार से कहता हूँ कि मैं मनुष्य रूप धारण किए हुए परमात्मा हूँ, इसलिए मुझसे प्रेम करो। मैं हर जगह

मौजूद हूँ, मैं पुरातन पुरूष हूँ और सृष्टि मेरी छाया है, अतः मुझे ज्ञात है कि क्या घटित हो चुका है और क्या घटित होगा जो केवल माया है।''

सन् 1927 में मेहेराबाद पहाड़ी पर बाबा की आज्ञा से एक स्थल पर एक गहरा लम्बा चौड़ा गढ्ढा खोदा गया था जिसमें बाबा ने कई बार एकान्तवास किया था। उसके चारों ओर दीवारें उठा दी गई थी और एक दरवाजा था। सन् 1938 में उसकी छत एक गुम्बज के रूप में बना दी गई थी। आज याने कि 31 जनवरी 1969 की शाम लगभग 7 बजे बाबा के शरीर को उसी में एक तख्ते पर लिटाया गया। सिर के चारों तरफ एक पुष्पहार पहना दिया गया था और गुलाब के फूलों से सारा शरीर ढाक दिया गया। अपने प्रियतम, अपने जीवनाधार के अंतिम दर्शन करने एवं विदाई देने को प्रेमीजन कतार लगाकर खड़े थे। सभी ने क्रमशः सीढ़ी से कब्र के अन्दर उतर कर प्रियतम के चरणों में अपना अंतिम प्रणाम किया। बाबा का पार्थिव शरीर सात दिनों तक इसी प्रकार रखा गया। प्रतिदिन डॉ. गौहर शरीर की देखभाल करती-प्रतिदिन हजारों लोग दूर-दूर से आकर प्रियतम को श्रृद्धा सुमन अर्पित करते। सभी सातों दिन बाबा के चेहरे की क्रान्ति अथावत बनी रही। प्रतिदिन आरती होती और दर्शन कार्यक्रम आरंभ हो जाता।

वह शुक्रवार का दिन था - 7 फरवरी 1969 समय दिन के 12.15 संयोगवश जोरोस्टर पंचांग के अनुसार बाबा का जन्मदिन भी। ''अवतार मेहेरबाबा की जय'' इस जयघोष के साथ ही बाबा के शरीर को एक साफ चादर से ढंक दिया गया। चारो ओर गमगीन माहोल, सिसकियां, फूट-फूटकर बिलखते हुए लोगों के समूह, अश्रुपूरित नेत्रों से अपने प्रियतम को अंतिम बिदाई का क्षण और अब शरीर को धारण करने वाली पेटिका के ढक्कन को धीरे-धीरे बंद कर दिया गया। मेहरामाई एवं अन्य महिला मंडली ने गुलाब के फूलों की आखिरी माला प्रभु को अर्पित की।

शायद हर प्रेमी का हृदय रोते हुए मानों कह रहा था

''मेहेर बाबा मेरी नजर में ऐसी तासीर हो जाये
नजर जिस पर मैं डालूं तेरी तस्वीर हो जाये।''

और इस प्रकार विश्व ने क्षण भर को अपनी श्वासे रोक मौन के इस युगावतार को महा मौन में जाते हुए अपनी अंतिम विदाई दी।

बाबा के शरीर छोड़ने के बाद समाचार पत्रों में एक अद्‌भुत घटना का विवरण छपा था। कावा का पवित्र पत्थर 31 जनवरी 1969 से 7 फरवरी 1969 तक सात दिन चारों ओर से जल से घिरा रहा। इन सात दिनों में वहां इतनी वर्षा हुई कि समीप जाकर कोई दर्शन नहीं कर पाया था। 7 फरवरी को जल स्वमेव ही उतर गया। यहॉ उसी दिन अर्थात् 7 फरवरी को ही बाबा की समाधि बन्द की गई थी–किसी कवि की यह उक्ति बरबस ही स्मरण हो आती है कि ‘‘जल ने जब अपने स्वामी को देखा तो शर्म के मारे उसका मुख लाल हो गया।’’ भावपक्ष यह कि अरब देश की उस मरुभूमि में वर्षा बहुत कम होती है किन्तु मक्का में हजरत मुहम्मद पैगम्बर की समाधि के समीप इस प्रकार सात दिन का जलावतरण बाबा के भौतिक शरीर त्याग देने के उपरान्त आध्यात्मिक रूप से एक अन्तर्सम्बन्ध ही प्रगट करता है।

‘‘मैं कभी जन्म नहीं लेता, मेरी कभी मृत्यु नहीं होती। प्रत्येक क्षण मैं जन्म लेता हूँ और मृत्यु को प्राप्त होता हूँ। यद्यपि मैं अनन्त काल से हर जगह अपनी चिरंतर अशरीरी अवस्था में उपस्थित हूँ किन्तु समय–समय पर मैं शरीर धारण करता हूँ और शरीर धारण करना एवं उसे त्यागना मेरा भौतिक जन्म एवं मृत्यु कहलाता है। इस दृष्टि से मैंने जन्म लिया था और जब मेरा विश्वव्यापी कार्य समाप्त हो गया तो मैंने शरीर छोड़ दिया।’’

मेहेराबाद पहाड़ी पर जहाँ बाबा की समाधि है उसे बाबा ने ‘‘अपना अंतिम विश्राम स्थल’’ घोषित किया था। आज सारी दुनिया के सभी जाति और धर्मो के लोग यहाँ आते है और अपने हिस्से का प्रेम, बाबा के संचित प्रेम कोष से लेकर अपने को धन्य करते हैं। बाबा ने कहा भी था कि ‘‘आने वाले दिनों में यह पहाड़ी संसार का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान बन जायेगी।’’

‘‘इस तरफ भी करम ये रश्क मसीहा करना
कि तुम्हें आता है बीमार को अच्छा करना
जब वजूज तेरे कोई दूसरा मौजूद नहीं
फिर समझ में नहीं आता तेरा परदा करना।’’

दिखावा अथवा कर्मकाण्ड की भावना से की गई कोई भी यांत्रिक प्रार्थना चाहे वह कस्ती नमाज हो अथवा आरती पूजा इत्यादि हो सब एक तमाशा है जो पवित्रता का बहाना करने के महानतर बन्धन पैदा करता है।

– मेहेरबाबा

सिंहावलोकन

अवतार मेहेरबाबा को प्रमुख धार्मिक मान्यताओं से जुड़े हुए लोगों ने मानव के रूप में ईश्वर, क्राइस्ट, पैगंबर या उद्धारक और वर्तमान काल के मसीहा के रूप में स्वीकार किया है। मेहेरबाबा अपने जीवन के अधिकांश समय मौन रहते हुए विभिन्न क्रियाकलापों में संलग्न रहे। मेहेरबाबा ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि वे वही पुरातन पुरूष हैं, दिव्य अवतार हैं, जिसके अवतरण की परिकल्पना अनेकों रूप से व्यक्त की गई है।

बाबा कहते हैं कि ''मैं राम था, मैं कृष्ण था, और मैं यह था, और मैं वह था। अब मैं मेहेरबाबा हूँ, वही रक्त और मांस से बना हुआ पुरातन पुरूष हूँ, वही जो चिरकाल से पूजा जा रहा है, और तिरष्कृत हो रहा है, जिसे हमेशा स्मरण किया जाता रहा है, और भुलाया भी जाता रहा है। मैं वही चिरंतन पुरातन एक हूँ, जिसका विगत पूजा गया और उसका स्मरण किया गया, किन्तु उसके वर्तमान की उपेक्षा की गई, और उसे भुला दिया गया। उसके भविष्य की, बेचैनी और चाहत के साथ हमेशा प्रतीक्षा की जाती है।''

''मेहेरबाबा के संदेश व उनके दृष्टिकोण प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए हैं। पश्चिम में उनके अनुयायियों में प्रोटेस्टेंट कैथोलिक और यहूदी हैं, और पूर्व में हिन्दू मुस्लिम एवं जोरोस्तर मत के हैं। संक्षेप में बाबा और उनके उपदेश सार्वभौमिक हैं। बाबा कहते हैं मुझे सभी धर्म समान हैं और सभी जातियां व नस्लें मुझे प्रिय हैं। चूंकि मैं सभी वादों व धर्मो की प्रशंसा करता हूँ क्योंकि वे बहुत ही अच्छी बातों को पाने की चेष्टा करते हैं किन्तु मैं इनमें से किसी भी वाद या धर्म का न तो हूँ ना हो सकता हूँ।''

मैं किसी मत शाखा या वाद को स्थापित करने नहीं आया हूँ और नाहीं कोई नया धर्म स्थापित करना चाहता हूँ। मैं सभी धर्मो व भक्तों में सामंजस्य स्थापित कर उन्हें एक सूत्र में मनकों की भांति पिरोने आया हूँ।

सद्गुरूओं के संदर्भ में बाबा कहते हैं ''उस चिरंतन एक के रूप में मैं जो हूँ, मैं जो था, और मैं जो भी होऊंगा, वह सब युग विशेष के पांच सद्गुरूओं पर

निर्भर है। अवतार काल में परमात्मा का मनुष्य के रूप में अवतरण कराने हेतु पांच सद्‌गुरू जिम्मेदार होते हैं। सांईबाबा, उपासनी महाराज, बाबाजान, ताजउद्‌दीन बाबा और नारायण महाराज इस युग के पांच सद्‌गुरू हैं। बाबा ने स्पष्ट किया कि बाबाजान ने एक सेकण्ड के दस लाखवें हिस्से से भी कम समय में उन्हें उनकी पुरातन अवस्था का ध्यान करा दिया कि वे ईश्वर हैं और सात वर्षो के दौरान उपासनी महाराज ने भान कराया कि वे अवतार हैं, वही पुरातन पुरूष है। सांई बाबा ने मेरी अवस्था का मुझे भान कराया, बाबाजान ने मैं जो हूँ उसका अहसास कराया और उपासनी महाराज ने मुझे मेरी अवस्था में स्थापित किया।

सन् 1922 में अपने कुछ समर्पित अनुयायियों के साथ मेहेरबाबा पूना छोड़ मुंबई पहुँचे और एक बंगले में रहे, जिसे मंजिलें मीम कहा गया। यहाँ पर सभी शिष्यगण कठोर अनुशासन में रहे। बाबा स्वयं रात दिन अपने स्वयं के गहन आध्यात्मिक कार्य में व्यस्त रहते और अत्याधिक कष्टों को सहते रहे। ''मैं समस्त सृष्टि के लिए कष्ट उठाता हूँ, जब तक मैं सृष्टि के लिए कष्ट नहीं भोगता तब तक मैं तुमसे कैसे कह सकता हूँ कि तुम दूसरों के लिए कष्ट उठाओ। मैं प्रत्येक में हूँ। और प्रत्येक वस्तु में हूँ और मेरा कार्य मानवता की आध्यात्मिक जागृति करना है।''

एक वर्ष बाद बाबा ने अपना आश्रम बंबई से स्थानांतरित कर अहमद नगर के पास मेहेराबाद में स्थापित किया और यहाँ पर अपने अनुयायियों को एक और कठिन परीक्षण से गुजारा। 10 जुलाई 1925 को बाबा ने मौन धारण किया। आरंभ के वर्षो में संकेतों और शब्दों की तख्ती के माध्यम से बातचीत का आदान प्रदान चलता रहा, किन्तु 1954 में बाबा ने तख्ती का भी माध्यम छोड़ दिया और इसके बाद पूरी तरह संकेतों के ही माध्यम से निरंतर अपनी बात प्रस्तुत करते रहे।

मेहेराबाद ने भारत भर में अनेकों यात्राऐं की और तेरह बार विदेश की यात्राऐं की लेकिन पहली बार ड्रग के माध्यम से चेतना के विस्तार के बारे में स्पष्ट करते हुए कहा कि यदि परमात्मा किसी ड्रग के माध्यम से पाया जा सके, तो वह परमात्मा, परमात्मा होने के काबिल नहीं। बड़े से बड़ा प्रभावकारी ड्रग आध्यात्मिक परिपूर्णता प्राप्त नहीं करा सकता, क्योंकि पूर्णता प्राप्त करने को सद्‌गुरू के सिवाय अन्य कोई रास्ता नहीं है।

बाबा ने बताया कि परमात्मा केवल हृदय की भाषा और प्रेम के संदेश पर ही ध्यान देता है, जिसे किसी आडंबर या रीति-रिवाज की आवश्यकता नहीं होती। प्रेम स्वभावतः स्वयं ही संप्रेषणशील होता है, जिनके पास यह नहीं है, उन्हें उनसे प्राप्त करना चाहिए जिनके पास यह है। पूजा, तीज त्योहार ये प्रेम उत्पन्न नहीं कर सकते, साथ ही जो रोते और सिसकियाँ भरते हैं, उनको भी प्रेम का जरा भी पता नहीं होता। बल्कि प्रेम को जो प्राप्त हो जाता है, वह जलने लगता है, साथ ही अपने होंठ सी लेता है, ताकि जरा सा धुंआ भी बाहर न निकल पाये।'' इसलिए बाबा के आश्रम में न तो पूजा गृह है और न ही मान्यता प्राप्त कोई उपदेशक। बाबा की दृष्टि में सच्चा धर्म किताबी ज्ञान नहीं बल्कि यह हृदय का मसला है जो इस तथ्य पर निर्भर करता है कि वह कितनी ईमानदारी से प्रेममय जीवन जीता है। बाबा कहते है – ''तुम्हारे लिए तुम्हारा प्रेम मुझ पर आवरण डालता है और मेरे लिए तुम्हारा प्रेम मेरा आवरण हटाता है।'' सन् 1949 में अपने चुने हुए 20 शिष्यों के साथ बाबा पूर्ण निराशाजनक असहाय जीवन जीने के लिए निकल पड़े, जिसे उन्होनें नई जिंदगी का नाम दिया। उन्होंने कहा कि इस दौरान कोई भी किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक या भौतिक आकांक्षा नहीं रखेगें। सत्य का दामन नहीं छोड़ेंगे और भीषण झंझावातों में भी विचलित नहीं होंगे। बाबा ने कहा कि यह नई जिंदगी चिरंतन काल तक जीवित रहेगी, भले ही उसे जीने वालाल कोई न रहे।

अमरीका के ओखलाहोमा में हुई मोटर कार दुर्घटना और बाद में भारत में सतारा के पास हुई कार दुर्घटना जिनमें बाबा का बायां पैर और दाहिने पैर के जोड़ की हड्डी टूट गई थी के बारे में संदेश प्रसारित किया कि बाबा ने अपनी भौतिक हड्डियों को इसलिए तोड़ा है, ताकि कलयुग में भौतिक पहलू की रीढ़ की हड्डी टूट सके और उसका आध्यात्मिक पहलू सुरक्षित रहे।

बाबा ने कहा कि यदि मैं ''ऊंचे में सबसे ऊंचा'' हूँ तो मेरा कर्त्तव्य यह होगा कि मैं तुम्हें तुम्हारी सभी इच्छाओं से मुक्त कर दूँ और तुम्हें इच्छारहित बना दूँ। साधु संत योगी और वली तुम्हें वह सब दे सकते हैं, जो तुम चाहते हो, किन्तु मैं तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को ले लेता हूँ और तुम्हें सभी बंधनों से मुक्त कर अज्ञानता के बंधन से भी मुक्त कर देता हूँ। यद्यपि भ्रम पाश के कारण अवतार की

यह आवाज घोर सन्नाटे में बड़ी निरीह सी जान पड़ती है किन्तु फिर भी उसकी ध्वनि व प्रति ध्वनि समय व काल के प्रभाव में सर्वप्रथम कुछ को और क्रमशः लाखों को उनकी घोर अज्ञानता में उनका पथ प्रशस्त करती है, और भ्रमजाल के मध्य मानवता को जागृत कर बार–बार यही उद्घोष करती है कि मनुष्यों के मध्य ईश्वर का अवतरण हो चुका है।

अपना भौतिक शरीर छोड़ने के समय बाबा ने कहा– ''आप में से किसी को भी चिन्ता करने का कोई कारण नहीं है। बाबा थे, बाबा हैं और बाबा निरंतर बने रहेंगे। बाह्य सम्बन्धो के विच्छेदन का अर्थ यह कदापि नहीं कि अर्न्तसम्बन्ध भी विच्छेदित हो जाए। बाबा के आदेशों का पालन करने से आन्तरिक सम्बन्ध स्थापित हो सकते हैं। मैं आपको इन आन्तरिक सम्बन्धो को मजबूत बनाने हेतु अपने आशीष देता हूँ। शंकाओं और धारणाओं के बावजूद भी अनन्त प्रेम जो मुझमें प्रत्येक के लिए है– उनके लिए मैं अवतार के रूप मे आता रहता हूँ और उस काल में मानवता को उसकी अज्ञानता से जागृत करता हूँ ताकि मनुष्य को मिथ्या और यथार्थ को समझने का समर्थन प्राप्त हो सके।

मेहेरबाबा ने जीवन के अंतिम कई वर्ष लगभग एकान्त में व्यतीत किए। इस समय इन्होंने लगभग सभी यात्रायें स्थगित कर दी थी ओर प्रतिदिन घंटों पूर्ण निर्वाद्य रूप से अपने विश्वव्यापी कार्य में संलग्न रहा करते थे। अपने इस कार्य के बारे में एक बार बाबा ने कहा– ''तुम मुझे मात्र बाहर से ही कार्य करते हुए देख सकते हो किन्तु मैं उसी समय चेतना के हर स्तर पर कार्य करता रहता हूँ। चूंकि मेरे प्रगटीकरण का समय समीप आ रहा है अतः मुझ पर मेरे कार्य का अत्यधिक बोझ है। जो कार्य मैं एकान्त में किया करता हूँ उसका किसी को लेशमात्र भी भान नहीं हो सकता। मैं तुम्हें जो संकेत दे सकता हूँ वह यह कि जो कार्य मैं एकान्त में करता हूँ उसकी तुलना में विश्व के सभी कार्य नगण्य हैं। यद्यपि मैं अपने कार्य के बोझ से दबा जा रहा हूँ किन्तु संसार में सभी लोगों द्वारा इसकी अनुभूति व्यापक रूप में अनुभव की जायेगी।'' ऐसे ही एकान्तवास के दौरान बाबा ने एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी थी जिसे उन्होंने अपने किसी विश्वस्त शिष्य को सौंप दी है और कहा कि जब उपयुक्त समय आयेगा तब यह पुस्तक प्रकाशित होगी।

जैसे–जैसे उनका एकान्तिक कार्य आगे बढ़ता गया, उनका स्वास्थ्य निरंतर गिरता ही गया। 1968 के अंत में इनके निकटस्थ साथियों ने बाबा से प्रार्थना की कि वे अपने कार्य की गति कुछ कम कर अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे। ''इसका अर्थ यह होगा कि एक बार फिर उसके निष्कर्ष की तिथि को आगे बढ़ाना होगा'' उन्होंने जवाब दिया ''यदि अब मैं ऐसा करने की अनुमति देता हूँ तब उसके परिणाम अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित हो जाएगें और एक नई दिशा में प्रगट होंगे।''

''अज्ञानता में मत जिओ। अपने जीवन का बहुमूल्य समय अपने साथियों की जांच परख में नष्ट मत करो बल्कि परमात्मा का प्रेम पाने लालायित रहो। सांसारिक क्रिया–कलापों के मध्य भी अपने स्वयं के अस्तित्व को पहचानते हुए प्रियतम परमात्म से अपने सच्चे स्वरूप के साथ एकात्म हो जाओ। निर्मल और सरल हो जाओ और सभी को प्रेम करो क्योंकि सभी एक हैं। ईमानदारी से जीवन यापन करते हुए सरल और स्वयं के प्रति सत्य निष्ठ रहो। ईमानदारी असत्य के भ्रमिक पथों पर तुम्हारा मार्ग प्रशस्त करेगी और तुम्हें सच्ची विनम्रता को शक्ति प्रदान करेगी। दूसरों की सहायता करने में कुछ भी उठा न रखो केवल देवी प्रेम के अलावा किसी अन्य वस्तु की कामना भी मत करो। इस दैवी प्रेम हेतु सच्ची लगन से प्रयत्न करो और मैं पूर्ण दिव्यता के साथ वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें जिसके तुम काबिल हो उससे भी कुछ ज्यादा दूंगा।''

''मैं तुम्हें अपने समस्त आशीष देता हूँ कि मेरे दिव्य प्रेम की चिन्गारी तुम्हारे हृदय में ईश्वर के प्रति निरंतर प्रेम की धारा उत्पन्न करें। मेरे मौन तोड़ने का लोगों के सामने स्वयं को प्रगट करने का समय अब दूर नहीं रहा। मैं सबसे बड़ा खजाना लाया हूँ जिसे मानव पा सकता है– एक ऐसा कोष जिसमें सभी किस्म के खजाने अर्न्तनिहित है– जो निरंतर चलता रहेगा और जब वह दूसरों को बांटा जायेगा तब वह बढ़ेगा। उसे प्राप्त करने तैयार हो जाओ।''

''जब मेरे प्रेम का संसार अपनी सीमा तोड़कर तुम्हारे हृदयों से बोलेगा और तुमसे कहेगा कि मैं वास्तव में कौन हूँ तब तुम्हें ज्ञात होगा कि वह वास्तव में वह ''शब्द'' है जिसे सुनने की तुम हमेशा प्रतीक्षा करते रहे। मैं दिव्य प्रियतम हूँ जो कहीं तुम्हें उससे भी अधिक प्रेम करता है जितना तुम स्वयं को भी नहीं कर पाते।''

बाह्य सम्बन्ध दैव पुरूष के कार्य के उद्देश्य नहीं हुआ करते वे तो केवल साधन मात्र होते हैं जिनसे कार्य में गति आती है। वह धरती पर मानव की भांति मात्र मानव के उच्च आदर्शो को स्थापित करने के लिए आता है और मनुष्य को परमात्मा से आन्तरिक सम्बन्ध स्थापित करने की स्थिति निर्मित करता है।

अवतार के माध्यम से ईश्वर अपनी सृष्टि में लोगों से प्यार करने उनकी सेवा करने और उनके कष्टों को भोगने के लिए आता है। केवल वही समय की आवश्यकता के अनुसार सृष्टि को एक आन्तरिक धक्का दे सकता है। अपने जीवन काल में पृथ्वी पर वह निस्वार्थ प्रेम के बीजों को बोता है जहां वे खिलते है और बढ़ते हैं और अपने पीछे वह अपने आदर्श और संदेश छोड़ जाता है। प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की सबसे बड़ी कृपा तो यह है कि वे आपके हृदय में अपनी अनन्त उपस्थिति का वचन दे गए हैं। बाबा को अपने और समीप लाना सम्भव है केवल उनका स्मरण कर उन्हें प्यार कर एवं उनके बताये हुए मार्ग पर चलकर। बाबा अपने सभी प्रेमियों एवं जिज्ञासुओं के लिए यह सम्भावना व्यक्त कर गए हैं कि उन्हें अपने करीब से भी करीब अनुभव किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. दी साइलेन्ट वर्डः फ्रान्सिस ब्रेबाजान
2. मच साइलेन्सः टाम एवं डोरोथी हापकिन्स
3. मेहेरबाबा–दि कम्पेशिओनेट वनः 1986
4. मेहेर पुकार–सहवास विशेषांक 1958
5. कृपानिधान–मेहेर प्रभुः अवतार मेहेरबाबा केन्द्र, भोपाल
6. अवतार मेहेरबाबा–हिन्दी चरितः अण्णाखंडाले

> मैं वही सनात पुरूष हूँ जो वर्तमान युग को राहत देने आया हूँ। मैं विश्व का स्वामी हूँ और अपने प्रेमियों का दास हूँ।
>
> – मेहेरबाबा

मानव का अंतिम ध्येय

ईश्वर समझाया नहीं जा सकता, वह बहस से सिद्ध नहीं हो सकता, वह सिद्धान्त के अन्तर्गत नहीं आ सकता, और वह बहस मुबाहसा से समझाया जा सकता है। ईश्वर को हम केवल आचरण में बरत सकते हैं।

सत्यता का अनिवार्य अनुभव होना चाहिए और परमात्मा की दिव्यता को प्राप्त करना चाहिए और उसको जीवन के आचरण में बरतना चाहिए।

सत्यता कभी समझी नहीं जा सकती, उसका साक्षात्कार तो चेतन अनुभव द्वारा होता है।

इसलिये मानव का अन्तिम ध्येय सत्य का अनुभव करना और ''अहम् ब्रह्माऽस्मि'' यह अवस्था मानव शरीर रहते हुए प्राप्त करना ही है।

– मेहेर बाबा